बाल भारती

भाग 2

संयुक्ता लूदरा
सत्येंद्र वर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

मई 1997 फाल्गुन 1918

PD 5001 MK

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्ल्यू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन, बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	**बैंगलूर 560085**	**अहमदाबाद 380014**	**24 परगना 743179**

रु. 20.00

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा भारती प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स प्रा. लि., ब्लू-30, ओखला फेज II, नई दिल्ली 110 020 में लेज़र कम्पोज़ होकर [illegible] ऑफसेट वर्क्स प्रा. लि., ए-44, नारायणा इंडस्ट्रियल एरिया, फेज II, नई दिल्ली 110 028 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 1986 के प्रारंभ होने के साथ ही ऐसी शिक्षण सामग्री की आवश्यकता अनुभव की जाने लगी जो इस नई शिक्षा नीति के उद्देश्यों की प्राप्ति मे सहायक हो। इस नीति के अनुसार शिक्षा बाल केंद्रित होगी और बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाएगा। इस शिक्षा नीति में भारत के राष्ट्रीय जीवन के लिए आवश्यक कुछ महत्वपूर्ण मूल्यों को *केंद्रिक शिक्षाक्रम* के रूप में स्थान दिया गया है। यह एक दूरगामी नीति है और यदि इसका पालन सही ढग से किया जाए तो भारत के नव-निर्माण में इससे महत्वपूर्ण योगदान मिल सकेगा।

प्रस्तुत पुस्तक *बाल भारती, भाग 2* का संशोधित संस्करण परिषद् द्वारा प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा हिंदी पढ़ाने के लिए निर्मित *बाल भारती पुस्तकमाला* की दूसरी कड़ी है। *बाल भारती, भाग 1* में हिंदी के सभी स्वरों, व्यंजनों, मात्राओं और कुछ प्रमुख संयुक्ताक्षरों तथा उनसे बनने वाले शब्दों और वाक्यों के पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराया गया था। *बाल भारती, भाग 2* में प्रमुख उद्देश्य यह रहा है कि कक्षा 2 में पढ़ने वाले छात्र व छात्राएँ अधिकांश संयुक्ताक्षरों से बनने वाले शब्दों, उनसे निर्मित वाक्यों तथा ऐसे वाक्यों से निर्मित सरल पठन सामग्री को भली प्रकार पढ़ सकें। देवनागरी लिपि और हिंदी की वर्तनी व्यवस्था में प्राप्त सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए इस पाठमाला में यह प्रयत्न रहा है कि बच्चे कम से कम समय में अधिक से अधिक पठन-योग्यताओं का विकास कर सकें। इस प्रकार ये बच्चे दूसरी कक्षा मे जाने तक इतने समर्थ हो जाएँ कि वे न केवल हिंदी विषय अपितु हिंदी भाषा में लिखी अन्य विषयों की पुस्तकों को भी भली प्रकार समझ से पढ़ सकें।

बाल भारती, भाग 2 में साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा कविता, कहानी, वार्तालाप, पहेली, वर्णन और निबंध आदि में पाठ प्रस्तुत करके पठन सामग्री में विविधता और रोचकता लाने का प्रयास किया गया है। पाठों के निर्माण और चयन में ऐसे विषयों और मूल्यों का समावेश किया गया है जिनसे बच्चों की जानकारी बढ़ने के साथ उनमें वांछनीय और अपेक्षित जीवन मूल्यों का विकास हो सके। जिन विचारों और मानव मूल्यों पर बल दिया गया है उनमें से कुछ है, देशप्रेम, साहस, सहयोग, संकल्पशक्ति, परस्पर सद्भाव, विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन, समयपालन, पशु-पक्षियों के प्रति प्यार, सफ़ाई तथा परिश्रम का महत्त्व आदि। *केंद्रिक शिक्षाक्रम* मे सम्मिलित मूल्यों का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है। हमे विश्वास है कि पुस्तक पढ़ने के उपरांत विद्यार्थियों में पठन रुचि विकसित होगी तथा वे अपने स्तर की अन्य पुस्तकें पढ़ने में रुचि लेने लगेंगे। *शिक्षकों के लिए* सम्मिलित की गई सामग्री के अंतर्गत पुस्तक को कक्षा में पढ़ाने के लिए आदर्श

पाठ योजना पर सविस्तार चर्चा की गई है तथा व्यावहारिक और उपयोगी सुझाव भी दिए गए हैं। यदि अध्यापकगण इन शिक्षण बिंदुओं पर ध्यान देंगे तो पुस्तक का अध्ययन और अध्यापन सरल व सुगम हो जाएगा।

इस पुस्तक का प्रथम संस्करण वर्ष 1988 में प्रकाशित किया गया था। पुस्तक का निर्माण सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की श्रीमती संयुक्ता लूदरा और डॉ. सत्येंद्र शर्मा ने प्रो. अनिल विद्यालंकार के निर्देशन में किया था। परिषद की नीति के अनुसार *बाल भारती, भाग 2* का अखिल भारतीय स्तर पर मूल्यांकन किया गया। पुस्तक के मूल्यांकन में उन अध्यापकों का अभिमत और सहयोग लिया गया जो पुस्तक के अध्यापन से संबद्ध हैं। मूल्यांकन प्रतिवेदन के सभी निष्कर्षों, सुझावों तथा संस्तुतियों पर सविस्तार चर्चा होने के उपरांत व्यावहारिक, उपयोगी और अपेक्षित संशोधन किए गए हैं। प्रस्तुत संशोधित संस्करण के अंतर्गत कुछ पाठों में आवश्यकतानुसार संशोधन और परिवर्तन के अतिरिक्त दो कविताएँ, दो कहानियाँ और एक पाठ पहेली पर जोड़ा गया है। सूचना और संदर्भों की दृष्टि से पाठों को आधुनिक बनाया गया है। विषय, विधा तथा प्रस्तुति सभी दृष्टियों से *बाल भारती, भाग 2* के संशोधित संस्करण का अध्यापकों और विद्यार्थियों द्वारा स्वागत होगा, ऐसी आशा है।

विभाग के डॉ. सत्येंद्र शर्मा ने पुस्तक का संशोधित प्रारूप तैयार किया तथा अत्यंत परिश्रम और मनोयोग से इसका संपादन किया है। इस पुस्तक के संशोधन में श्रीमती संयुक्ता लूदरा, अवकाश प्राप्त प्रवाचक, सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी शिक्षा विभाग की प्रमुख भूमिका के अतिरिक्त अनेक अनुभवी अध्यापकों, शिक्षाविदों तथा भाषाविदों से सहयोग और सहायता मिली है। इन सभी के प्रति मैं हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

इस पुस्तक को और भी अधिक उपयोगी बनाने के लिए अध्यापकों और अन्य विद्वानों द्वारा भेजे गए सुझावों को प्राप्त करने में हमें हार्दिक प्रसन्नता होगी।

अशोक कुमार शर्मा
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली

पुस्तक-संशोधन में विशेष सहयोग

कु. ***कुसुम लता अग्रवाल***, राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, [illegible], नई दिल्ली, ***श्री लोकेंद्र*** [illegible], प्राचार्य, [illegible] हाईस्कूल, कनाड़िया, इन्दौर, मध्य प्रदेश; ***श्रीमती प्रभा शर्मा***, दिल्ली पब्लिक स्कूल, मथुरा रोड, नई दिल्ली, ***श्रीमती ताप्ती मुखर्जी***, केंद्रीय विद्यालय (एन सी ई आर टी शाखा), श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली, ***श्रीमती रोहिणी कृष्णानंद***, प्रायोगिक विद्यालय, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूर, कर्नाटक, ***श्री जटेश्वर राय***, केंद्रीय विद्यालय, मुगलसराय, वाराणसी, उत्तर प्रदेश, ***कु. उषा वधवा***, नगर निगम प्राथमिक विद्यालय, बसई दारापुर I, नई दिल्ली; ***श्रीमती विद्योतमा पाण्डे***, दिल्ली पब्लिक स्कूल, [illegible], नई दिल्ली, ***श्री विजय नारायण पाण्डे***, वसंत वैली पब्लिक स्कूल, वसंत कुंज, महरौली-महिपालपुर मार्ग, नई दिल्ली, ***श्रीमती रक्षा सिसोदिया***, प्राचार्या, शासकीय कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश, ***कु. उर्मिल लूथरा***, अवकाश प्राप्त सहायक शिक्षा अधिकारी, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली और ***श्री जगमोहन सिंह***, अवकाश प्राप्त प्रवक्ता, उत्तर प्रदेश राज्य शिक्षा संस्थान, इलाहाबाद। ❑

शिक्षकों के लिए

बाल भारती पुस्तकमाला की यह दूसरी पुस्तक है। पहली पुस्तक समाप्त करते-करते बच्चों में अक्षर-रूप (स्वर-व्यंजन), मात्राएँ, अनुस्वार तथा उनसे बनने वाले कई सौ शब्द पढ़ने की योग्यता विकसित हो जाती है। कुछ संयुक्तव्यंजनों का ज्ञान दृश्य शब्दों के रूप में पहली पुस्तक में दिया जा चुका है। इस पुस्तक में विशेष रूप से संयुक्तव्यंजनों को सिखाने का प्रयत्न किया गया है। इससे बच्चों में हिंदी भाषा के कई हज़ार शब्दों को पढ़ने की योग्यता का विकास हो पाएगा। जहाँ-कहीं नए लिपि संकेत दिए गए हैं वहाँ उनका कई बार प्रयोग करके बच्चों का ज्ञान दृढ़ करने की चेष्टा की गई है। बाद में भी उनकी यथास्थान आवृत्ति की गई है। नए शब्दों और वाक्यांशों की भी इसी प्रकार आवृत्ति की गई है जिससे बच्चों के पढ़ने की गति तीव्र हो सके।

पुस्तक पढ़ाने के लिए कुछ सुझाव

दूसरी कक्षा तक आते-आते बच्चों की स्वाभाविक झिझक काफ़ी कम हो जाती है और वे पाठशाला के परिवेश से पूर्णतया परिचित हो जाते हैं। उनमें कुछ समय तक एक स्थान पर बैठने और अध्यापक अथवा किसी साथी द्वारा कही गई बात को धैर्यपूर्वक सुनने की योग्यता भी आ जाती है। बच्चों में धैर्यपूर्वक सुनने की आदत का सायास विकास करें, साथ ही उन्हें लगातार सक्रिय बनाए रखें।

बालक/बालिकाएँ जाने-पहचाने शब्दों का वाक्यों में सप्रवाह प्रयोग कर सकें, वे छोटी-छोटी कविताएँ, कहानियाँ सुना सकें तथा संवाद आदि में सक्रिय भाग ले सकें, इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करें। पाठों के अतिरिक्त अपने परिवेश में घटित होने वाली घटनाओं पर वे खुलकर चर्चा कर सकें, इसके लिए प्रश्न पूछकर उन्हें सक्रिय रखें। उदाहरण के लिए परिवेश में कोई त्योहार, विवाह अथवा अन्य कोई पारिवारिक समायोजन, अनाज बोना और फसल काटना, वर्षा होना, किसी व्यक्ति का गाँव अथवा शहर से आना आदि प्रतिदिन के स्वाभाविक विषयों पर बिना किसी झिझक के बातचीत करने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित कीजिए।

दूसरी कक्षा तक बोलियों का प्रभाव कुछ कम हो जाता है और बच्चों का झुकाव हिंदी भाषा के परिनिष्ठित रूप की ओर होने लगता है। जिन बच्चों में अभी भी हिंदी में बात करने अथवा प्रश्न का उत्तर देते समय अपनी बोली का प्रयोग करने की प्रवृत्ति हो, उनकी ओर विशेष ध्यान दें। समय-समय पर उनका ध्यान भाषा के परिनिष्ठित रूप की ओर दिलाएँ जिससे वे बोलियों के प्रभाव से अधिकाधिक मुक्त हो सकें।

बालक/बालिकाओं को साहित्य की विविध विधाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से पुस्तक में कविता, कहानी, वर्णन, वार्तालाप आदि विधाओं में पाठ प्रस्तुत किए गए हैं। एक पाठ में पहेलियाँ भी दी गई हैं। इस पुस्तक के माध्यम से बच्चे अन्य विषयों की पठन-सामग्री को पढ़ने की योग्यता भी प्राप्त कर सकेंगे।

आदर्श पाठ-योजना

[illegible] की सहायता देने के लिए क्रमिक सोपानों में पाठों को [illegible] पाठ योजना में ये सभी पद सम्मिलित होने चाहिए जो [illegible] निर्धारित करने में सहायता देने के उद्देश्य से बनाए गए [illegible] प्रकार हो सकते हैं

1. पाठ की तैयारी : [illegible] के आरम्भ में उचित पृष्ठभूमि का निर्माण आवश्यक है जिसमें बच्चों का [illegible] उदाहरण के लिए ***ऐसे सूरज आता है*** पाठ कविता के [illegible] पूर्वज्ञान तथा अनुभवों पर चर्चा की जा सकती है। वे कक्षा [illegible] ***चंदा मामा*** [illegible] पाठ के आरंभ में बातचीत करते हुए प्रश्न पूछें और [illegible] दिन में रोशनी कौन फैलाता है, सूरज किस दिशा से [illegible] आदि। बातचीत द्वारा बच्चों को नवीन ज्ञान ग्रहण करने के लिए [illegible] किया जा सकता है। ऐसी मानसिक तैयारी से वे नई बात जानने के लिए प्रेरित [illegible] प्रकार [illegible] (कहानी) के लिए पृष्ठभूमि का निर्माण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए [illegible] ***कबूतर और जाल*** शीर्षक कहानी से कक्षा एक में [illegible] कथा के माध्यम से परिचित हो [illegible] पाठ की तैयारी की जा सकती है। [illegible] कबूतर पक्षी के बारे में जानते हैं और [illegible] कबूतर की आदतों और उसके भोजन के बारे में चर्चा करते हुए उन्हें [illegible] के लिए उत्सुक बनाया जा सकता है।

2. नवीन शब्द-परिचय : इस सोपान में यह निश्चित कर लेना उपयोगी होता है कि बच्चों ने प्रत्येक नए शब्द [illegible] अर्थ समझ लिया है और उसकी आकृति को पहचान लिया है। बच्चों को [illegible] नए शब्द [illegible] सुनाए जाते हैं और तब उन्हें श्यामपट पर लिखा जाना है [illegible] और अपने मन में उनकी बनावट ग्रहण कर सकें। बच्चों को शब्द, उनके अर्थ, [illegible] में सहायता देने के लिए विभिन्न उपायों द्वारा पर्याप्त अभ्यास [illegible] आवश्यक होगा। शब्द परिचय के लिए एक उदाहरण लें। ***साहसी बालक*** शीर्षक पाठ में ***पूर्णचंद्र, लट्ठ, बस्ती, प्रतिदिन, झोपड़ी*** आदि नए और कठिन शब्दों का प्रयोग है। इनमें अधिकतर [illegible] इन शब्दों का स्पष्ट उच्चारण बताकर बच्चों से बार-बार बुलवाइए। र के [illegible] स्पष्ट करें, जैसे ***पूर्ण, वर्षा, प्रतिदिन, समुद्र*** आदि। इसी प्रकार ***चंदा*** और ***बाँस*** [illegible] करवाकर अनुस्वार(ं) और अनुनासिक(ँ)का अंतर स्पष्ट कीजिए। इन नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर पढ़वाइए। नए शब्दों का परिचय हमेशा अर्थपूर्ण संदर्भ में [illegible] प्रयोग द्वारा दीजिए। जैसे ***पृथ्वी*** का अर्थ ***धरती*** न कहकर उसका वाक्य [illegible] स्पष्ट हो जाए। समान अर्थवाले और उलटे अर्थवाले शब्द भी शब्दार्थ ग्रहण करने में सहायक होते हैं। ***पृथ्वी*** और ***धरती*** का अर्थ ***ज़मीन*** शब्द के प्रयोग द्वारा दें क्योंकि बच्चा ***ज़मीन*** पहले से जानता है।

3. वाचन : इस सोपान में बच्चों से अपनी पुस्तकें खोलने और पाठ का सही पृष्ठ निकालने के लिए [illegible] शिक्षक/शिक्षिकाएँ पहले स्वयं आदर्श वाचन करें। अनुकरण वाचन करवाएँ और शुद्ध

[illegible] सस्वर वाचन एक महत्वपूर्ण सोपान है क्योंकि बालक/बालिकाएं इस प्रकार पहली बार सम्पूर्ण अनुच्छेदों के पठन से परिचित होते हैं। पठन के बीच बीच में प्रश्न पूछकर ज्ञात करें कि बच्चे समझकर पढ़ रहे हैं। बीच बीच में सभी बच्चों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक बच्चे को पाठ का अंश पढ़ने का अवसर दें। पाठ में दिए चित्रों पर विविध प्रश्न पूछें और पाठ में वर्णित घटनाओं से उनका संबंध स्थापित करें।

पाठ पर आधारित विशिष्ट प्रकार के प्रश्न पूछकर इस सस्वर पठन को उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है। उदाहरण के लिए उनसे कहा जा सकता है कि वह पंक्ति पढ़ो जिसमें बताया गया है कि कबूतर कहाँ पर कैसे आराम करते थे अथवा वे पंक्तियाँ पढ़ो जिनमें बताया गया है कि कबूतर नीचे उतरने लगे या उन्हें कबूतर ने उन्हें रोका आदि। बच्चों को उचित विराम और स्वर के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें। बीच बीच में नाटकीय शैली में संवाद पढ़ने और अभिनयात्मक ढंग से पढ़ने पर भी बल दें।

4. पढ़ने की कुशलताओं का विकास : बच्चों को अधिक गति से और अधिक सरलता से पढ़ना सीखने में सहायता देने के लिए कुछ विशेष प्रकार की कुशलताओं को सुव्यवस्थित ढंग से विकसित करना आवश्यक होता है। सामान्य रूप से ये कुशलताएं दो प्रकार की होती हैं - अर्थ-ग्रहण और शब्द-बोध। शिक्षकगण प्रत्येक पाठ के अंत में दिए हुए अभ्यासों तथा अभ्यास-पुस्तिका में दिए गए अभ्यास, अध्यापन संकेतों की मदद से कराएं और देखें कि बच्चों ने उन्हें कितनी सावधानी से और कहाँ तक सही सही किया है। इनके अतिरिक्त शिक्षक/शिक्षिकाएं स्वयं ऐसे अभ्यास तैयार करें जो बच्चों में पढ़ने की अपेक्षित कुशलताएँ विकसित करने में सहायक हों। शब्द-बोध के लिए कार्ड बनाएँ और विभिन्न क्रियाकलापों में इनका उपयोग करें। वाक्य-पट्टियों तथा चित्र कार्डों का भी प्रयोग करें।

5. अनुभव-विस्तार के क्रियाकलाप : बच्चों द्वारा पाठ या कहानी का समझ के साथ पठन पूरा हो जाने के बाद भी उनके ज्ञान तथा अनुभव में विस्तार की अनेक संभावनाएँ रहती हैं। शिक्षक को इन संभावनाओं की पहचान कर उनका लाभ उठाने का प्रयत्न करना होगा। उदाहरण के लिए कबूतर, गिलहरी आदि के बारे में बच्चे पाठ पढ़ चुके हैं। चर्चा के माध्यम से उन्हें चिड़ियों, उनकी आदतों, उनके भोजन, उनके रहने के स्थान आदि की जानकारी कराई जा सकती है जिसका संबंध विशेष रूप से विज्ञान विषय से है। गिलहरी के बारे में चर्चा के साथ पेड़ पर या झाड़ियों में रहने वाले अन्य जीव-जंतुओं की जानकारी कराई जा सकती है। ***दाँतों की सफ़ाई*** पाठ से भोजन के पोषक तत्वों, भोजन के बारे में सावधानियों आदि की चर्चा करते हुए स्वास्थ्य रक्षा, स्वच्छता के महत्व आदि का ज्ञान कराया जा सकता है। भाषा-शिक्षक को यह सदा स्मरण रखना चाहिए कि भाषा में विभिन्न विषयों से संबंध जोड़ने की अधिकाधिक संभावनाएँ हैं।

सुव्यवस्थित पाठ योजना के अनुसार शिक्षण करने के साथ ही शिक्षक/शिक्षिका को इस प्रकार के क्रियाकलाप कराने के संबंध में निरंतर प्रयत्नशील रहना होगा जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का समुचित विकास हो सके। इस दृष्टि से पाठों में दी गई कहानियों, संवादों आदि का अभिनय कराना उचित होगा। उदाहरण के लिए ***कबूतर और जाल, चींटी और हाथी, आसमान गिरा, नन्ही बुलबुल, हंस किसका*** आदि पाठों के अंशों या पूरे पाठ का अभिनय कराया जा सकता है।

शिक्षक पाठ के संदर्भ में यह ध्यान रखें कि यथासंभव वस्तुओं आदि को वास्तविक रूप में कक्षा में प्रस्तुत करें और यदि यह संभव न हो तो जीव जंतुओं, वस्तुओं आदि के मॉडल या चित्रों का प्रयोग करें। बच्चों से मॉडल बनवाकर क्रियाएँ कराने से वे उनमें सक्रिय होकर रुचिपूर्वक भाग लेंगे।

ये खेल और क्रियाएँ मनोरंजक होने के साथ ही बच्चों का भाषा ज्ञान बढ़ाने में सहायक होते हैं। खेल, पहेलियाँ बुझाना, कहानियाँ सुनाना, समूहगान, क्रियागान, कागज़, मिट्टी या लकड़ी से खिलौने बनाना, चित्र बनाना आदि क्रियाओं से कक्षा में कम बोलने वाले बच्चे भी प्रोत्साहित होते हैं और उनमें भाग लेने के लिए उत्सुक रहते हैं।

इस प्रकार की क्रियाएँ कराते समय बच्चों के उच्चारण की ओर विशेष रूप से ध्यान दें। यदि कुछ ध्वनियों के उच्चारण में सूक्ष्म भेद को स्पष्ट नहीं किया गया और पर्याप्त अभ्यास नहीं कराया गया तो बच्चों के उच्चारण में कमियाँ रह जाती हैं। अतः कुछ विशिष्ट ध्वनियों, जैसे **इ-ई, ए-ऐ, ओ-औ, क-ख, ण-न, श-स, व-ब, छ-क्ष, द-ध** आदि के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। इस पुस्तक में संयुक्ताक्षरों का विशेष ज्ञान कराया गया है। बच्चों को इनके उच्चारण और लिखित रूप का बार-बार अभ्यास कराएँ।

प्रारंभिक कक्षाओं में अक्षरों की बनावट तथा सुंदर लिखावट की ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। एक बार लिखावट दृढ़ हो जाने पर उसमें सुधार लाना कठिन होता है, अतः इस कक्षा में बच्चों का ध्यान सुंदर और सुडौल अक्षर लिखने की ओर आकर्षित करें। वे छोटे-छोटे वाक्य बनाकर लिख सकें, प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में लिखकर दे सकें तथा किसी परिचित विषय पर पाँच-छह वाक्य लिख सकें — इस योग्यता का विकास दूसरी कक्षा के अंत तक अवश्य हो जाना चाहिए।

पाठ पढ़ाते समय बीच-बीच में बच्चों से कहानी से संबंधित प्रश्न भी पूछने चाहिए जिससे पाठ के संबंध में उनकी उत्सुकता बनी रहे और वे उसके शेष भाग को पढ़ने में रुचि ले सकें। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को कविता की लय और तान से परिचित कराना है न कि उसका अर्थ समझाना। जहाँ कहीं कविता का भाव बच्चों को स्पष्ट न हो वहाँ प्रश्नोत्तर द्वारा उसे स्पष्ट करें। पाठ्य पुस्तक में दी गई कविताओं के अतिरिक्त कुछ अन्य कविताएँ भी कंठस्थ करवाएँ। कविता याद करने तथा सुनाने के लिए है। इससे संबंधित कोई भी प्रश्न लिखित परीक्षा में न पूछा जाए। बच्चे व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक रूप में उचित भाव-भंगिमा के साथ कविता गाएँ।

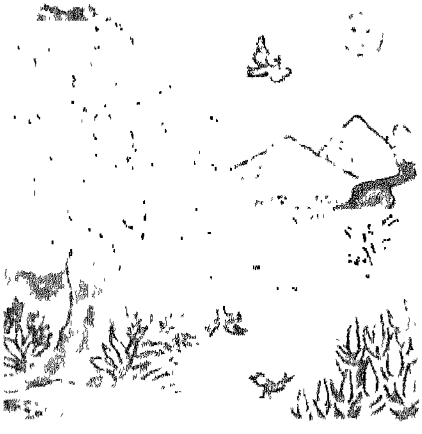
पाठ के अंत में दिए गए अभ्यासों की भाँति कुछ अन्य अभ्यास भी करवाए जा सकते हैं जिनसे बच्चों में भाषा की अपेक्षित योग्यताओं का विकास हो सके। इस दृष्टि से इस पुस्तक के साथ अभ्यास-पुस्तिका का भी निर्माण किया गया है जिसमें प्रत्येक अभ्यास के उद्देश्य स्पष्ट रूप से लिखे गए हैं। जिन बच्चों को किसी विशेष कुशलता को ग्रहण करने में कठिनाई हो, उन्हें उसी प्रकार के अतिरिक्त अभ्यास देकर कुशलता को दृढ़ करें। अभ्यास-पुस्तिका के प्रयोग से बच्चों की भाषा-योग्यताओं के विकास में विशेष सहायता मिल सकेगी।

विषय-सूची

1. प्यारा भारत



यहीं हिमालय-सा पहाड़ है
यहीं गंग की धारा है
यमुना लहराती है सुंदर
भारत कितना प्यारा है!



फल-फूलों से भरी भूमि है
खेतों में हरियाली है
आमों की डालों पर बैठी
गाती कोयल काली है।

अध्यापन संकेत : कविताएँ गाने और याद करने के लिए हैं। आप स्वयं कविता को कई बार उचित लय, तान और भाव-भंगिमा से पढ़ें। बच्चे सुनें और दोहराएँ। बार-बार कविता सुनाएँ और सुनें। इस प्रकार पूरी कविता याद कराएँ। पाठ्य पुस्तक की सभी कविताएँ इसी प्रकार कराएँ। कविता के अर्थ को केवल सरल प्रश्नों द्वारा ही स्पष्ट करें। सीधे-सीधे पंक्तियों के अर्थ न बताएँ। बच्चों का ध्यान उन शब्दों की ओर आकर्षित करें जिनकी तुक मिलती हो जैसे — *धारा-प्यारा, बनाया-खाया* आदि। प्रश्नों के माध्यम से कविता के मूल भाव पर ध्यान दिलाते हुए देश की सुंदरता का बोध कराएँ और अपनी मातृभूमि से प्रेम करने की भावना जाग्रत करें।

बच्चो, माँ ने पाल-पोसकर
तुमको बड़ा बनाया है
लेकिन यह मत भूलो तुमने
अन्न कहाँ का खाया है!





तुमने पानी पिया कहाँ का
खेले मिट्टी में किसकी
चले हवा में किसकी बोलो
बच्चो, प्यारे भारत की।

□गिरिजा दत्त शुक्ल 'गिरीश'

बताओ

(क) हमारे देश का क्या नाम है?

(ख) यहाँ कौन-कौन सी नदियाँ हैं?

(ग) आपको अपना देश क्यों अच्छा लगता है?

पूरा करो

1. यहीं हिमालय-सा पहाड़ है
   यहीं गंग की ____________
   यमुना लहराती है सुंदर
   ____________ प्यारा है!

2. आमों की डालों पर ______
   ____________ काली है।

याद करो

इस कविता को याद करो।

पढ़ो और समझो

भूमि = ज़मीन	अन्न = अनाज
गंग = गंगा, एक नदी का नाम	यमुना = एक नदी का नाम

2. कबूतर और जाल

पीपल	कबूतर	भोजन	धरती
चिल्लाना	बहेलिया	ज़ोर	इशारा
मित्र	उन्हें	उन्होंने	धन्यवाद

जंगल में पीपल का एक पेड़ था। पेड़ पर बहुत से कबूतर रहते थे। कबूतर दिन भर भोजन की खोज में घूमते रहते। रात होने पर वे सब पीपल के पेड़ पर लौट आते।

एक दिन की बात है। कबूतर भोजन की खोज में गए। थोड़ी दूर उड़ने पर एक छोटा कबूतर बोला,

---

अध्यापन संकेत : हाव-भाव तथा स्वर के उतार-चढ़ाव द्वारा, अभिनयात्मक ढंग से कहानी सुनाएँ। पाठ में आए नए शब्दों का प्रयोग कहानी कहते समय करें। इस पाठ में कुछ संयुक्तव्यंजनों का प्रयोग है जिन्हें पहले व्यंजन की पाई हटाकर, दूसरे व्यंजन के साथ जोड़ा गया है जैसे - *ल्ल*, *न्य*, *न्ह*। इन संयुक्तव्यंजनों से बनने वाले शब्दों को श्यामपट पर लिखकर, इनका उच्चारण करवाएँ। संयुक्तव्यंजन के लिखित रूप पर ध्यान दिलाएँ। इसमें दो आगत ध्वनियों ज़ और फ़ का भी प्रयोग है। ज और फ से इनका अंतर स्पष्ट करने के लिए *जलेबी-ज़मीन*, *फल-साफ़* जैसे शब्दों के उदाहरण दें। ड और ड़, ढ और ढ़ ध्वनियों के उच्चारण और लिखित रूप का अंतर



''देखो, उधर देखो। कितना दाना बिखरा पड़ा है! धरती पर कितना दाना बिखरा पड़ा है!''

सभी कबूतर उधर देखने लगे। उन्हें धरती पर बहुत-सा दाना दिखाई पड़ा। वे धीरे-धीरे नीचे उतरने लगे।

तभी एक बूढ़ा कबूतर बोला, ''ठहरो, ठहरो!

स्पष्ट करें। इनका बार-बार उच्चारण करवाएँ तथा लिखवाएँ। ड़ और ढ़ शब्द के शुरू में नहीं आते। चर्चा के माध्यम से ध्यान दिलाएँ : मिलजुल कर करने से सभी काम आसान हो जाते हैं। हमें दूसरों की मदद करनी चाहिए। हमें बड़ों का कहना मानना चाहिए। कहानी का अभिनय करवाएँ। रस्सी या सुतली को जाल की तरह फैलाकर, बच्चों को कबूतर बनाएँ। ध्यान रखें कि कक्षा के सभी बच्चे इस तरह के क्रियाकलापों में भाग लें।

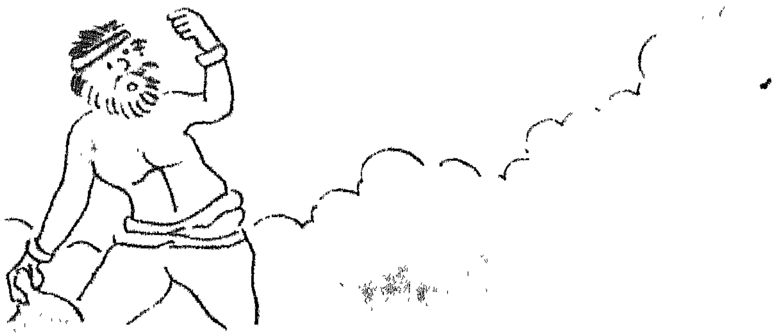
अभी वहाँ मत जाओ। जंगल में इतना दाना कहाँ से आया?''

दूसरा कबूतर बोला, ''कहीं से भी आया हो। आओ, हम सब मिलकर दाना खाएँ।''

कबूतर धरती पर उतरने लगे। वे दाना चुगने लगे। पर बूढ़ा कबूतर उनके साथ नहीं गया। वह दूर से ही देखता रहा। कबूतरों ने पेट भर दाना खाया। अब वे उड़ना चाहते थे, पर उड़ न सके। वे जाल में फँस गए थे।







कबूतर चिल्लाने लगे, ''बचाओ, बचाओ। हम जाल में फँस गए हैं।''

तभी एक कबूतर चिल्लाया, ''उधर देखो, अरे, वह तो बहेलिया है। वह हमें पकड़ने आ रहा है।''

बूढ़ा कबूतर बोला, ''घबराओ मत। सब मिलकर ज़ोर लगाओ। जाल को लेकर एक साथ उड़ चलो।''

सभी कबूतरों ने मिलकर ज़ोर लगाया। जाल कुछ ऊँचा उठा। कबूतरों ने और ज़ोर लगाया।



अब कबूतर जाल लेकर उड़ने लगे। बूढ़ा कबूतर आगे-आगे उड़ रहा था। सब कबूतर उसके पीछे थे।

बूढ़ा कबूतर उन्हें लेकर बहुत दूर उड़ गया। उसने एक पेड़ की तरफ़ इशारा किया। वह बोला, ''यहाँ एक चूहा रहता है। वह मेरा मित्र है। वह हमारी मदद करेगा। यहीं उतर जाओ।''

बूढ़े कबूतर ने चूहे को बुलाया। चूहे ने जाल काट दिया। कबूतर जाल से निकल आए। उन्होंने चूहे को धन्यवाद दिया।

पढ़ो और बताओ, कौन-कौन सी बात सही है?

(क) बूढ़ा कबूतर बोला, "चूहा मेरा मित्र है।"

(ख) जंगल में नीम का एक पेड़ था।

(ग) बूढ़ा कबूतर चतुर था।

(घ) कबूतर जाल में फँस गए।

(ङ) पेड़ के नीचे कबूतर रहते थे।

वाक्य पूरे करो

दाना धरती मदद पीपल जाल

1. कबूतर ———— के पेड़ पर रहते थे।
2. बहुत-सा दाना ———— पर बिखरा था।
3. जंगल में इतना ———— कहाँ से आया?
4. कबूतर ———— में फँस गए थे।
5. चूहा हमारी ———— करेगा।

वाक्य बनाओ

कबूतर	जाल काट दिया।
चूहे ने	आगे-आगे उड़ रहा था।
कबूतरों ने	पीपल के पेड़ पर रहते थे।
बूढ़ा कबूतर	चूहे को धन्यवाद दिया।

पढ़ो और लिखो

पिल्ला	गुल्ली	बिल्ली	चिल्लाना
नन्हा	इन्हें	उन्हें	उन्होंने
कन्या	न्याय	धन्य	धन्यवाद

पढ़ो

ज	=	जाल	जवाब	राजा
ज़	=	ज़मीन	कागज़	दरवाज़ा
फ	=	फल	फूल	मूँगफली
फ़	=	तरफ़	सफ़ाई	माफ़
ड़	=	पेड़	बड़ा	लड़का
ढ़	=	पढ़ना	बूढ़ा	चढ़ना

3. गिलहरी

अचानक	पत्थर	प्यारी	भाइयों
मूँगफली	कुतर	शरीर	धारियाँ
मुलायम	फुरतीली	चमकीली	रुक

रमेश और सुधीर दो भाई थे। एक दिन वे पेड़ के नीचे खेल रहे थे। अचानक सुधीर बोला, ''भैया! वह देखो, गिलहरी।'' यह कहकर सुधीर ने पत्थर उठा लिया।

रमेश ने कहा, ''नहीं, नहीं। पत्थर मत मारो। गिलहरी किसी को नहीं काटती। देखो! कितने मज़े

अध्यापन संकेत: नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण कराएँ। *रुकना, रुपया, रुई* — शब्दों में र के साथ उ की मात्रा का प्रयोग है। इन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर र में उ की मात्रा (ु) के लिखित रूप की ओर ध्यान दिलाएँ। अन्य व्यंजनों में उ की मात्रा नीचे लगती है — इस अंतर को स्पष्ट करें। इस पाठ में घुंडी हटाकर बनने वाले संयुक्तव्यंजन का प्रयोग है जैसे— *क्या*। क को दूसरे व्यंजन में संयुक्त करते समय इसकी घुंडी को हटा देते हैं। जैसे - *क्या, वाक्य, क्यारी* शब्दों में। इनका उच्चारण कराएँ और इन्हें लिखवाएँ। *सुंदर, मूँगफली* आदि शब्दों में अनुस्वार और अनुनासिक (चंद्र बिंदु) का उच्चारण स्पष्ट रूप से करें। *नहीं, मैं, फेंकी*, हैं आदि शब्दों में अनुनासिक (ँ) उच्चारण है यद्यपि लिखने में अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है क्योंकि मात्रा शिरोरेखा के ऊपर लिखी होने के कारण अनुनासिक (ँ) के स्थान पर अनुस्वार (ं) लिखने की छूट है। चर्चा द्वारा ध्यान दिलाएँ: हमें जीवों से प्यार करना चाहिए। उन्हें सताना नहीं चाहिए।



से कुतर-कुतर कर बेर खा रही है। कितनी प्यारी है! चलो, उसके पास चलें।''

सुधीर बोला, ''अरे! यह तो पेड़ पर चढ़ गई।''

रमेश ने कहा, ''गिलहरी को फल बहुत अच्छे लगते हैं। इसे मूँगफली भी बहुत अच्छी लगती है। अगर इसे मूँगफली दें तो यह हमारे पास आ जाएगी।''

सुधीर ने एक मूँगफली गिलहरी को दिखाकर फेंकी। गिलहरी बड़ी तेज़ी से नीचे उतरी। वह मूँगफली उठाकर पेड़ की डाल पर चढ़ गई और कुतर-कुतर कर मूँगफली खाने लगी।

रमेश बोला, "देखो, गिलहरी के शरीर पर कितनी सुंदर धारियाँ हैं। इसके बाल बड़े मुलायम होते हैं।"



सुधीर ने कहा, ''भैया, यह गिलहरी बहुत सुंदर है। आओ, इसे पकड़ें। मैं इसे घर ले जाऊँगा।''

रमेश बोला, ''सुधीर, गिलहरी बड़ी फुरतीली होती है। इसे पकड़ना आसान काम नहीं। ज़रा सी आवाज़ होते ही यह पेड़ पर चढ़ जाती है।''

सुधीर ने पूछा, ''क्या गिलहरियाँ पेड़ पर रहती हैं?''

रमेश ने उत्तर दिया, ''हाँ, गिलहरियाँ पेड़ पर ही रहती हैं। वही उनका घर होता है।''

इतने में गिलहरी फिर पेड़ से उतरी। वह एक जगह रुक गई। अपनी चमकीली आँखों से वह दोनों भाइयों को देखने लगी। सुधीर उसे पकड़ने दौड़ा। गिलहरी झट से पेड़ पर चढ़ गई।

सुधीर देखता ही रह गया।

बताओ

(क) गिलहरी कहाँ रहती है?
(ख) गिलहरी क्या-क्या खाती है?
(ग) सुधीर ने पत्थर क्यों उठाया?
(घ) सुधीर गिलहरी को क्यों नहीं पकड़ पाया?

पढ़ो और बताओ

लड़की	लड़कियाँ
नदी	नदियाँ
धारी	------
बकरी	------
गिलहरी	------

पढ़ो और लिखो

प्यारा	प्यास	प्याऊ
उत्तर	पत्ती	कुत्ता
पत्थर	कत्था	हत्था
क्या	क्यारी	क्यों
रुकना	रुपया	रुई

वाक्य पूरे करो

पेड़ फुरतीली तेज़ी मूँगफली धारियाँ

1. गिलहरी बड़ी ———— से नीचे उतरी।
2. गिलहरी को ———— अच्छी लगती है।
3. गिलहरी के शरीर पर ———— होती हैं।
4. गिलहरी बड़ी ———— होती है।
5. गिलहरी ———— पर रहती है।

4. बकरी का बच्चा और भेड़िया

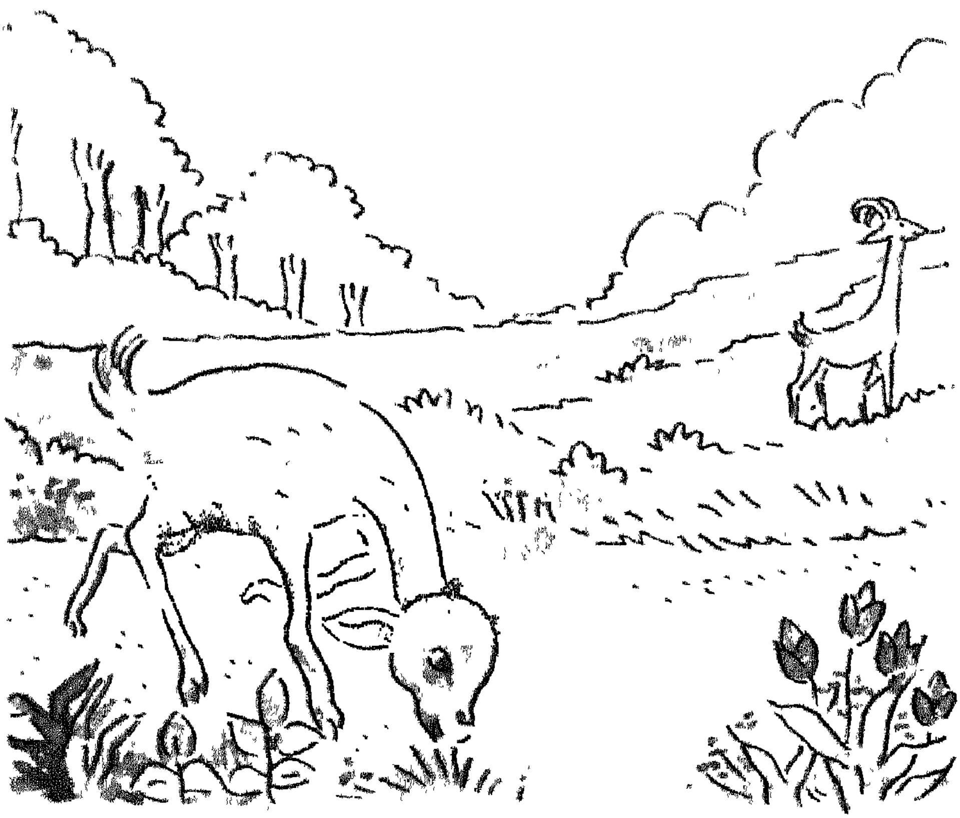
बच्चे बच्चों शैतान पत्तियाँ भेड़िया
शिकारी कुत्ते कोशिश तुम्हें अच्छा

एक बकरी थी। बकरी के दो बच्चे थे। दोनों बच्चे अपनी माँ के साथ-साथ रहते थे। जहाँ वह जाती, बच्चे भी उसके साथ जाते।

एक दिन बकरी ने बच्चों से कहा, ''आज मैं जंगल से घास लाने जा रही हूँ। तुम घर पर ही रहना। बाहर मत जाना।''

बकरी का छोटा बच्चा बहुत शैतान था। वह चुपके से माँ के पीछे-पीछे चला गया। जंगल के पास एक नाला था। नाले के किनारे हरी-हरी झाड़ियाँ थीं। वह

अध्यापन संकेत : [illegible] पाठ में [illegible] का कई बार प्रयोग हुआ है। [illegible] और [illegible] वाले शब्द श्यामपट्ट पर लिखकर [illegible] के उच्चारण के अंतर को स्पष्ट करें। र में ऊ की मात्रा ( ) नीचे न लगाकर, [illegible] शब्दों में इसका लिखित रूप दिखाएं तथा लिखने का अभ्यास [illegible] और [illegible] का अंतर बोलने और लिखने में स्पष्ट करें।



वहाँ पत्तियाँ खाने लगा। बकरी आगे निकल गई।

नाले के किनारे एक भेड़िया पानी पी रहा था। उसने दूर से बकरी के बच्चे को देखा। भेड़िए ने सोचा– अहा! बकरी का बच्चा! आज मैं इसे ज़रूर खाऊँगा। वह धीरे-धीरे उसके पास गया और बोला, ''कहो बेटे, क्या कर रहे हो?''

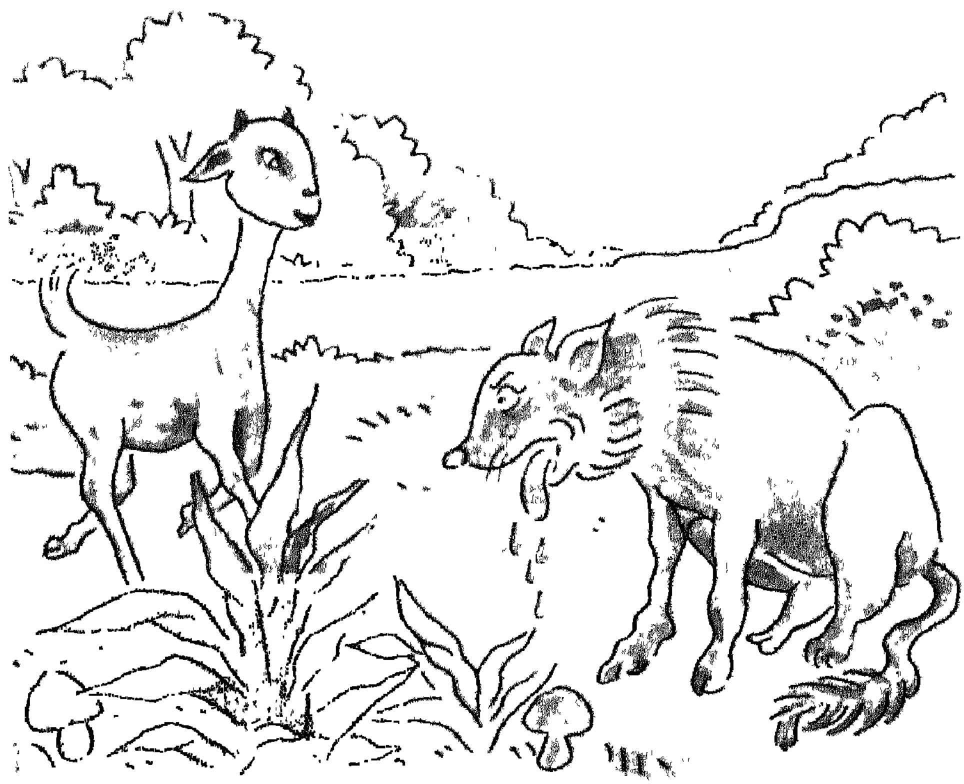
बकरी के बच्चे ने ऊपर देखा। भेड़िए को देखकर

वह बहुत डर गया। वह कुछ भी न बोल सका।

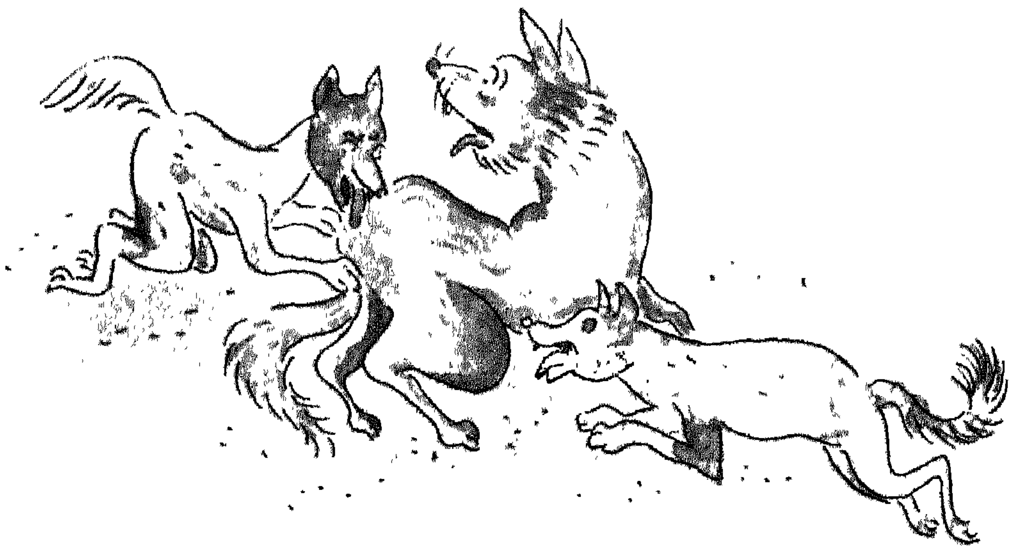
भेड़िया फिर बोला, ''खाओ, खाओ, खूब खाओ। मुझे भी बहुत दिन से खाने को कुछ नहीं मिला। आज मैं तुम्हें खाऊँगा।''

बकरी का बच्चा डरते-डरते बोला, ''भेड़िए मामा, मैं तो अभी बहुत छोटा हूँ।''

भेड़िया बोला, ''मुझे बकरी के छोटे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं।''



बकरी का बच्चा कुछ सोचने लगा। फिर बोला, ''मामा, पहले मुझे एक गाना सुना दो। फिर मुझे खा लेना।''



भेड़िया बोला, ''गाना! मुझे गाना नहीं आता।''

बकरी के बच्चे ने फिर कहा, ''मेरी माँ तो कहती है, भेड़िया मामा बहुत अच्छा गाते हैं।''

यह सुनकर भेड़िया बहुत खुश हुआ। वह ऊँची आवाज़ में गाने लगा। कुछ दूरी पर शिकारी कुत्ते

जा रहे थे। कुत्तों ने भेड़िए की आवाज़ सुनी। वे सब नाले की ओर दौड़ पड़े।

भेड़िया आँखें बंद किए गा रहा था। इतने में कुत्ते वहाँ आ पहुँचे। भेड़िया घबरा गया। उसने भागने की कोशिश की। पर कुत्तों ने भेड़िए को पकड़ लिया।

बकरी का बच्चा तेज़ी से घर भाग गया।

बताओ

1. बकरी जंगल में क्यों गई?
2. बकरी के बच्चे को नाले पर कौन मिला?
3. बकरी का बच्चा क्यों डर गया?
4. भेड़िए के गाना गाने पर क्या हुआ?
5. बकरी का बच्चा तुम्हें कैसा लगा?

पढ़ो, समझो और लिखो

(क)	पढ़	पढ़ो	पढ़ें	(ख)	बेटा	बेटी
	देख	------	------		दादा	------
	कह	------	------		मामा	------
	आ	आओ	आएँ		लड़का	------
	खा	------	------		चाचा	------
	गा	------	------		नाना	------

वाक्य पूरे करो

1. बकरी के दो ———— थे। (बच्चे/बच्चा)
2. भेड़िए की आवाज़ सुनकर ———— दौड़ पड़े। (कुत्ते/कुत्ता)
3. जंगल के पास ———— था। (नाला/नाले)
4. ———— पानी पी रहा था। (भेड़िया/भेड़िए)

पढ़ो और समझो

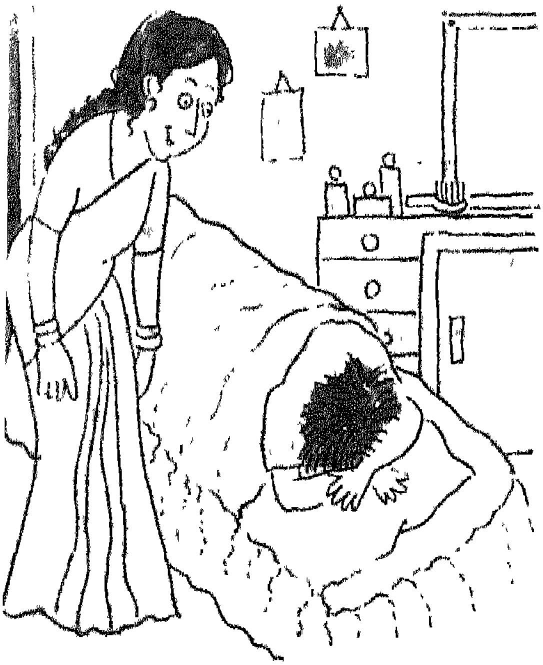
(क)	सच्चा	बच्चा	पच्चीस	च् + च = च्च
	पत्ती	गत्ता	छत्ता	त् + त = त्त
	अच्छा	मच्छर	गुच्छा	च् + छ = च्छ
	तुम्हारा	कुम्हार	तुम्हें	म् + ह = म्ह

(ख)	उ	ु	दुकान	तुम	दुनिया	खुश
	ऊ	ू	दूर	बूढ़ा	जादू	सूई
	उ	ु	रुई	रुकना	रुपया	गुरुजी
	ऊ	ू	रूमाल	रूठना	शुरू	ज़रूर



5. पाँच मिनट में

नाश्ता दुकान अध्यापक समाप्त स्कूल



एक लड़का था – गोपी। गोपी की माँ रोज़ सुबह उसे जगाती। वह आँखें बंद किए कहता, ''पाँच मिनट में उठता हूँ।'' पर वह फिर सो जाता।

माँ नहाने के लिए कहती तो गोपी बोलता, ''पाँच मिनट में नहाता

अध्यापन संकेत : इस पाठ में पाई (।) हटाकर बनने वाले दो प्रकार के संयुक्तव्यंजन सिखाए गए हैं जैसे ध्य, प्त, स्क, श्त। *ध्यान, समाप्त, स्कूल, नाश्ता, ग्यारह* आदि शब्द श्यामपट पर लिखकर समझाएं कि *स्क, ध्य* और *प्त* को संयुक्त रूप में लिखते समय *स, ध* और *प* में जुड़ी खड़ी लाइन हटा दी गई है परंतु *श्त* और *ग्य* में *ग* और *श* का पिछला भाग (।) जो वास्तव में पाई ही है, हटाया गया है। इसी प्रकार पाठ के अन्य शब्दों को पढ़ने और लिखने का अभ्यास कार्डों द्वारा करवाएँ। कक्षा में अभिनय कराएं। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाएं कि सभी काम समय पर करने चाहिए।

हूँ।'' पर वह खेलता ही रहता। जब माँ नाश्ता करने को कहती तो गोपी कहता, ''पाँच मिनट में।''

पाँच मिनट - पाँच मिनट करते-करते गोपी रोज़ स्कूल देर से पहुँचता। अध्यापक समझाते – स्कूल



समय पर आया करो। गोपी अपनी आदत के कारण कुछ न सुनता। कक्षा में भी वह अपना काम समय पर पूरा न कर पाता। दूसरे बच्चे काम समाप्त करके खेलने चले जाते, गोपी वहीं बैठा रहता।

एक दिन स्कूल में जादू का खेल दिखाया जाना था। अध्यापक ने बच्चों को सुबह दस बजे आने के लिए कहा।

बच्चे समय पर स्कूल पहुँच गए। कुछ बच्चों को थोड़ी देर हो गई थी। वे भागते हुए स्कूल जा रहे थे।

गोपी घर के बाहर खेल रहा था। एक बच्चा बोला, ''गोपी देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो। जादू का खेल शुरू हो जाएगा।''

गोपी बोला, ''तुम चलो, मैं पाँच मिनट में आता हूँ।''

पाँच मिनट करते-करते गोपी को बहुत देर हो गई।

जब गोपी स्कूल पहुँचा तो खेल समाप्त हो चुका था। सभी बच्चे जादू के खेल की बातें करते हुए लौट रहे थे। वे बहुत खुश थे।

गोपी उदास खड़ा सबकी बातें सुनता रहा।

बताओ, किसने कहा? कब कहा?

1. अभी पाँच मिनट में उठता हूँ।
2. देर हो रही है, जल्दी स्कूल चलो।
3. तुम चलो, मैं पाँच मिनट में पहुँचता हूँ।
4. स्कूल समय पर आया करो।

पढ़ो और समझो

ध्यान	अध्यापक	अध्यापिका	ध् + य = ध्य
समाप्त	गुप्त	सप्ताह	प् + त = प्त
नाश्ता	रिश्ता	कुश्ती	श् + त = श्त

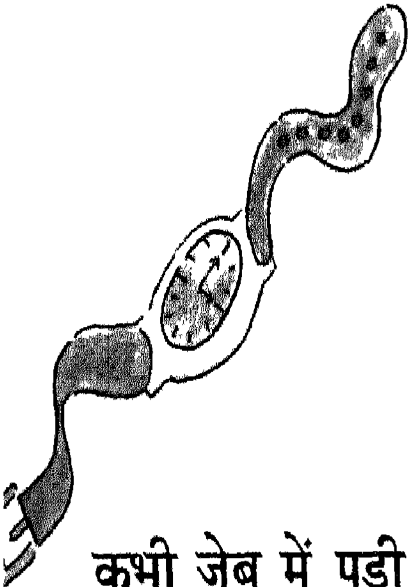
वाक्य बनाओ

गोपी	समय पर स्कूल पहुँच गए।
माँ	समय पर आया करो।
बच्चे	एक लड़के का नाम था।
स्कूल	रोज़ सुबह गोपी को जगाती।

लिखो

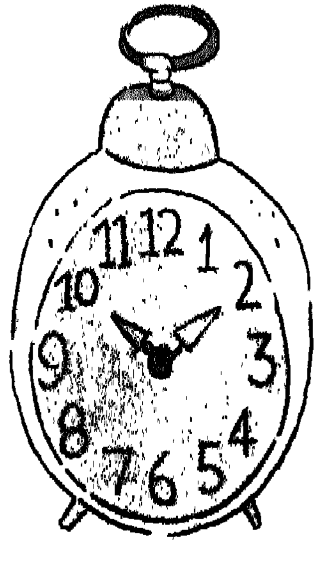
गोपी कैसा लड़का था? तुम गोपी की जगह होते तो क्या करते?

6. छोटी सी चीज़



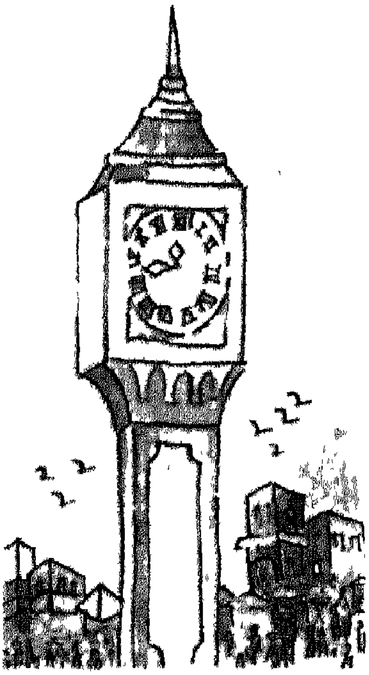
छोटी सी हूँ लेकिन फिर भी
बड़े काम की मानी जाती
सदा समय की पाबंदी मैं
रखना सबको हूँ सिखलाती।

कभी जेब में पड़ी ठुमकती
कभी कलाई पर बँध जाती
कभी मेज़ पर बैठ ठाठ से
टिक-टिक टिक-टिक राग सुनाती।



अध्यापन संकेत : कविता को लय और तान के साथ दो-तीन बार पढ़िए और बच्चों को सुनाइए। बच्चे पुस्तक बंद रखकर कविता का आनंद लें। घड़ी की उपयोगिता बताते हुए समयपालन पर चर्चा करें। अलग-अलग तरह की घड़ियाँ दिखाएँ तथा उनके चित्र बनवाएँ।

छोटी हूँ पर घंटाघर के
ऊपर होती बहुत बड़ी हूँ
सोच रहे होगे – मैं क्या हूँ
मैं तो केवल एक घड़ी हूँ।



अच्छा मुझे नहीं लगता है
पलभर भी रुकना-सुस्ताना
अच्छा मुझे बहुत लगता है
चलना, बस चलते ही जाना।

❑ दामोदर अग्रवाल

याद करो

इस कविता को याद करो।

पूरा करो

1. छोटी सी हूँ लेकिन फिर भी

____

____

रखना सबको हूँ सिखलाती।

2. अच्छा मुझे नहीं लगता है

____

अच्छा मुझे बहुत लगता है

____

बताओ

(क) घड़ी को क्या अच्छा नहीं लगता?

(ख) घड़ी हमें क्या सिखाती है?

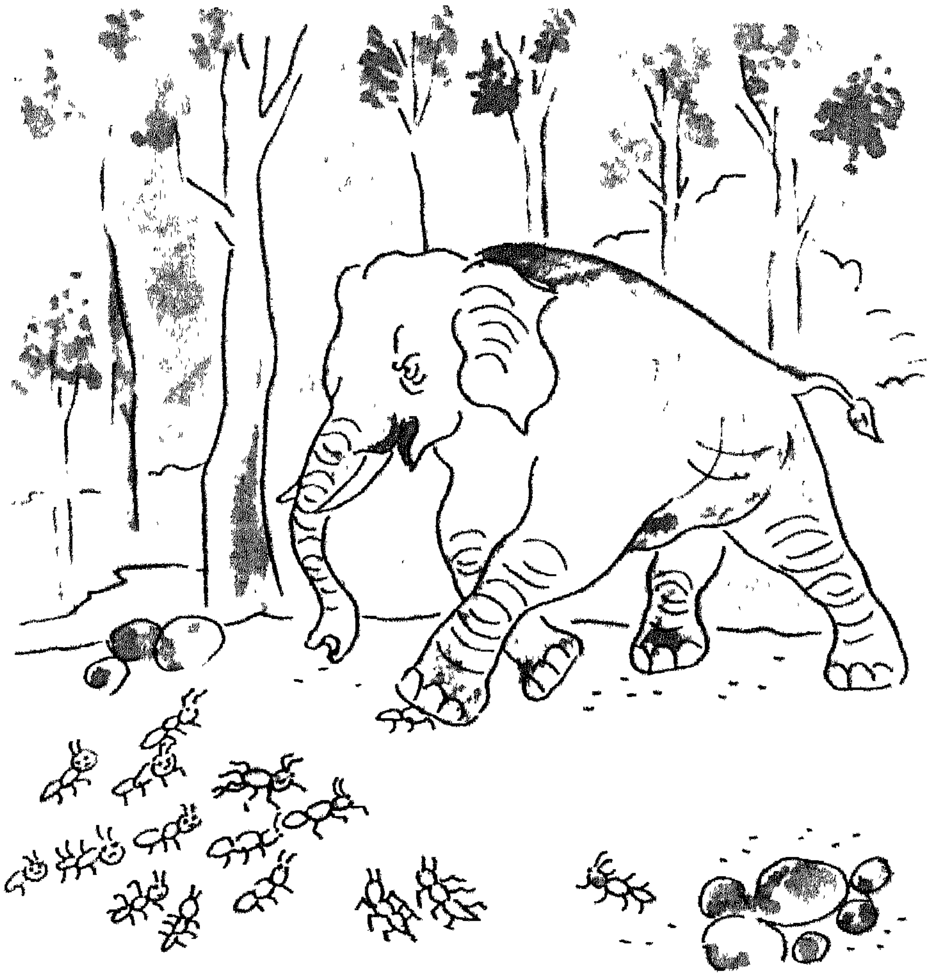
7. चींटी और हाथी

चींटी	परिवार	पेड़-पौधों	दुखी	ज़्यादा	
सूँड़	मौज	दशा	परेशान	कमज़ोर	कुचल

एक चींटी थी। वह रोज़ सुबह भोजन की तलाश में चल पड़ती थी। परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे-पीछे चलतीं।

वहीं एक हाथी रहता था। वह दिनभर इधर-उधर घूमता रहता। जंगल के पेड़-पौधों को तोड़ता। कभी-कभी हाथी अपनी सूँड़ में पानी भरकर लाता और जानवरों पर डाल देता। जंगल के जानवर उससे बहुत परेशान रहते।

अध्यापन संकेत : कहानी में आए पात्रों – चींटी और हाथी के बारे में बातचीत करें। हाव-भाव के साथ कहानी सुनाएं। कठिन शब्दों का उच्चारण करवाएँ तथा वाक्य-प्रयोग द्वारा अर्थ स्पष्ट करें। ज़ और फ़ ध्वनियों वाले शब्दों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। चींटियों के बारे में कुछ जानकारी दें। हाथी की कोई और कहानी बच्चों से सुनें या स्वयं सुनाएं।



हाथी की एक आदत और भी थी। जहाँ कहीं भी वह चींटियों को देखता, कुचल देता। चींटी यह सब देखती और दुखी होती।

एक दिन चींटी ने हाथी से कहा, ''तुम दूसरों को बहुत सताते हो, यह बात ठीक नहीं।''

हाथी बोला, ''चुप रहो। मैं जो चाहे करूँ। तुम

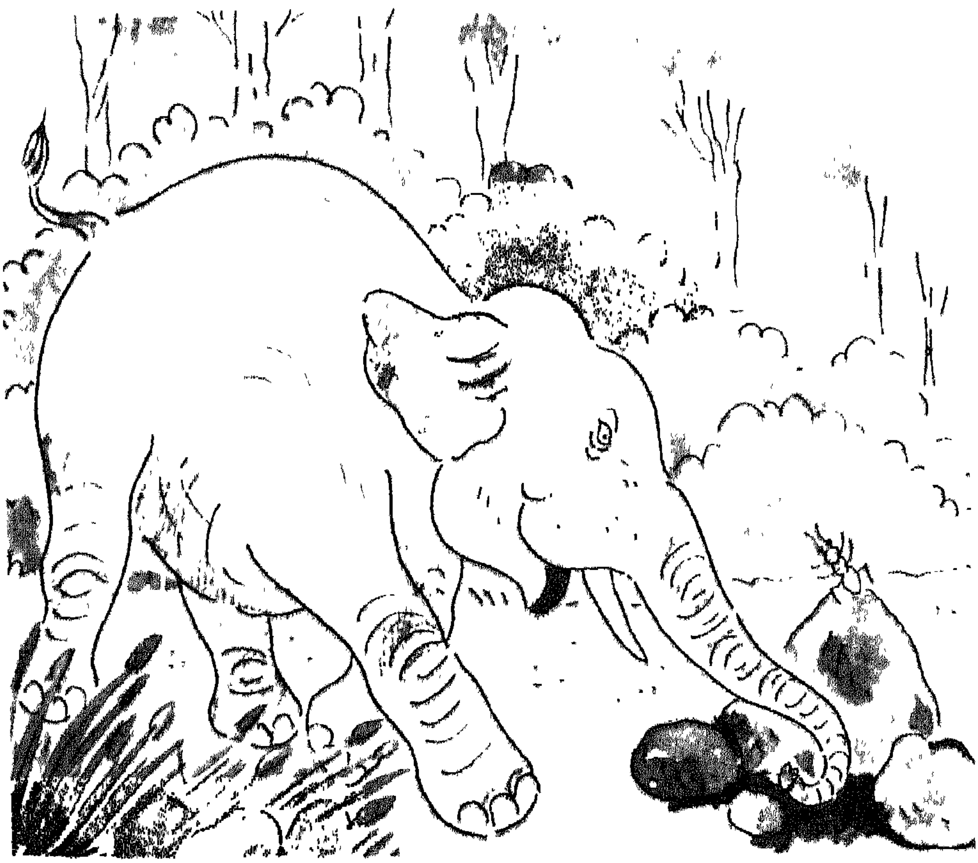
बहुत छोटी हो। ज़्यादा बोलोगी तो तुम्हें भी कुचल दूँगा।''

चींटी चुप हो गई और घास में जाकर छिप गई।

हाथी इधर-उधर घूम रहा था। तभी चींटी चुपके से उसकी सूँड़ में घुस गई और उसे काटने लगी।



हाथी परेशान होने लगा। उसने सूँड़ को ज़ोर-ज़ोर से हिलाया। पर उसकी परेशानी किसी तरह भी कम न हुई। तब चींटी बोली, ''परेशान क्यों हो रहे हो? तुम भी तो दूसरों को बहुत सताते हो।''



हाथी बहुत दुखी हो गया। वह बोला, ''मुझे माफ़ कर दो। अब मैं किसी को कभी नहीं सताऊँगा।''

चींटी को दया आ गई। वह हाथी की सूँड़ से बाहर

निकल आई। फिर बोली, ''किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।''

बताओ, कौन-कौन सी बात सही है?

1. परिवार की सभी चींटियाँ उसके पीछे चलतीं।
2. हाथी सभी जानवरों से प्यार करता था।
3. चींटी चुपके से हाथी की सूँड़ में घुस गई।
4. जंगल के जानवर चींटी से परेशान थे।
5. किसी को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए।

पढ़ो, समझो और लिखो

कमज़ोर	बलवान	ज़्यादा	कम
भीतर	______	अच्छा	______
दुखी	______	ऊपर	______

वाक्य बनाओ

सूँड़ कमज़ोर अच्छा घास जंगल

8. आम का पेड़

गुठली	मिट्टी	प्रसन्न	वर्षा	प्रिया
वर्ष	ज़रूर	शाखाएँ	तना	प्यार

गरमियों के दिन थे। सौरभ के चाचाजी ने अपने बगीचे के एक टोकरा आम भेजे। आम बहुत मीठे थे। सौरभ को आम बहुत अच्छे लगे। उसने सोचा – ऐसे ही आम मैं अपने बगीचे में लगाऊँगा।

उसने बगीचे में एक जगह थोड़ी मिट्टी खोदी। वहाँ आम की एक गुठली डाल दी। गुठली पर मिट्टी डालकर उसने थोड़ा पानी छिड़क दिया। वह रोज़

अध्यापन संकेत : पाठ में आए कुछ कठिन शब्दों — *मिट्टी*, *वर्षा*, *प्रसन्न*, *प्रिया*, *वर्ष* को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण कराएँ। *मिट्टी*, *चट्टान*, *गुड्डा*, *गड्ढा* आदि शब्दों के उदाहरण देकर समझाएँ कि इनमें ट्ट, ड्ड, ड्ढ हैं। लिखते समय पहले व्यंजन के नीचे हलन्त (्) लगाया गया है। इसके लगने पर आवाज़ हलकी बोली जाती है, जैसे *मिट्टी*, *चिट्ठी*, *इकट्ठा*, *गड्ढा* और *गुड्डा* आदि में। *वर्षा* और *वर्ष* शब्दों में रेफ (˘) के रूप में र् का प्रयोग पहली बार आया है। इसके उच्चारण पर विशेष ध्यान दें। बताएँ कि वहाँ र् का उच्चारण कुछ हलका होता है। जिस व्यंजन के ऊपर (˘) लिखा रहता है उसे व्यंजन से पहले बोला जाता



सुबह वहाँ पानी डालता। कुछ दिन बीत गए। आम का पौधा नहीं निकला। उसने पानी डालना बंद कर दिया।

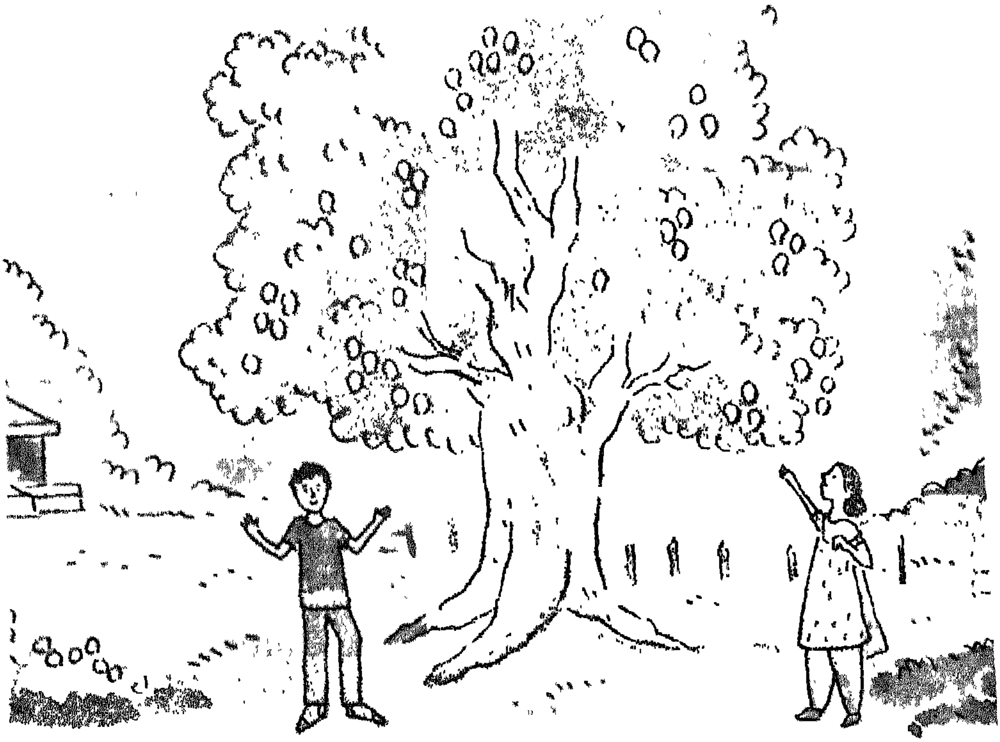
एक दिन हलकी-हलकी वर्षा हो रही थी। सौरभ घूमता हुआ बगीचे में उसी जगह पर जा पहुँचा। सामने ही लाल-लाल कोंपलों वाला नन्हा-सा पौधा लगा

है। *तर्क*, *वर्षा*, *सूर्य* आदि के द्वारा पढ़ने और लिखने का अभ्यास कराएँ। र में जब कोई व्यंजन मिलता है तो र को (्र) के रूप में लिखते हैं जैसे, *प्रिया*, *प्रसन्न* में। इनमें प् को पहले और हलका बोला जाएगा और र को बाद में। *प्रेम*, *प्रणाम*, *प्रथम* आदि में *प्र* को बोलने और लिखने का अभ्यास करवाएँ। बातचीत द्वारा ये बातें उभारें पेड़ हमें फल और छाया देते हैं। पेड़ हवा को साफ़ रखते हैं। हमें पेड़-पौधों की अच्छी तरह देखभाल करनी चाहिए। स्कूल में कुछ पेड़-पौधे लगवाएँ और बच्चों से उनकी देखभाल करवाएँ।

था। पौधा देखते ही सौरभ प्रसन्न हो उठा। ''पौधा निकल आया, पौधा निकल आया,'' कहते-कहते वह अंदर भागा। अपनी छोटी बहन प्रिया का हाथ पकड़कर उसे बगीचे में ले आया। पौधा देखकर प्रिया भी खुशी से उछल पड़ी।

सौरभ बोला, ''यह पौधा मैंने लगाया है। यह आम का पौधा है। इसमें खूब मीठे आम लगेंगे।''





दोनों भागे-भागे पिताजी के पास गए। पिताजी बोले, ''क्या बात है? आज तुम दोनों बहुत प्रसन्न हो।'' प्रिया बोली, ''पिताजी, बगीचे में आम का पौधा निकल आया है। अगले वर्ष हम अपने ही पौधे के आम खाएँगे।''

उसकी बात सुनकर पिताजी हँसे। वे प्यार से बोले, ''छोटे से पौधे को बड़ा होने में बहुत समय लगेगा। चार-पाँच वर्ष में यह एक बड़ा पेड़ बन जाएगा। इसका तना मोटा होगा। बड़ी-बड़ी शाखाएँ होंगी। तब इसमें आम लगेंगे।''

यह सुनकर प्रिया थोड़ी उदास हो गई। पर सौरभ तुरंत बोला, ''कोई बात नहीं। हम पौधे की देखभाल करेंगे। एक दिन हम इसके फल ज़रूर खाएँगे।''

वाक्य पूरे करो

आम गुठली गरमियों मीठे तना

1. आम ———— में मिलते हैं।
2. आम के पेड़ का ———— बहुत मोटा होता है।
3. आम के बीज को ———— कहते हैं।
4. ———— आम सबको अच्छे लगते हैं।
5. मेरे घर के पास ———— के पेड़ हैं।

पढ़ो, समझो और लिखो

गरमी	सरदी	थोड़ा	बहुत
मीठा	————	अगला	————
छोटा	————	उदास	————
सुबह	————	मोटा	————

पढ़ो और समझो

प्रथम	प्रसाद	प्रेम	प् + र = प्र
गन्ना	अन्न	प्रसन्न	न् + न = न्न
वर्ष			र् + ष = र्ष
सूर्य			र् + य = र्य
पूर्व			र् + व = र्व

पढ़ो और लिखो

पट्टी	छुट्टी	इकट्ठा	चिट्ठी
गन्ना	अन्न	मुन्ना	प्रसन्न
वर्ष	वर्षा	सूर्य	हर्ष

बताओ

1. चाचाजी ने आम कब भेजे?
2. आम के बीज को क्या कहते हैं?
3. आम के पौधे की कोंपलें किस रंग की थीं?
4. सौरभ ने प्रिया को क्या दिखाया?
5. आम का पेड़ कितने वर्षों में फल देता है?

9. फूलकुमारी

हँसने	चिड़ियाँ	मुरझाना	महाराज
मंत्री	इनाम	तमाशेवाला	दाढ़ी

एक था राजा। एक थी रानी। उनकी बेटी थी फूलकुमारी। जब फूलकुमारी खुश होती, ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगती।



अध्यापन संकेत : बच्चों से राजा-रानी की कोई कहानी सुनाने को कहें। कहानी पर चर्चा करते हुए बच्चों से यह कहानी स्वयं पढ़ने को कहें। अनुनासिक (ँ) और अनुस्वार (ं) वाले शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें। कहानी का अभिनय करवाएँ। त्र के अभ्यास के लिए-*पत्र, चित्र, मित्र, पुत्र, पुत्री, छात्र* आदि शब्द कार्डों से पढ़वाएँ। *खुश-उदास* का उदाहरण देकर कुछ अन्य उलटे अर्थवाले शब्दों का अभ्यास करवाएँ।

एक दिन फूलकुमारी राजा और रानी के साथ बगीचे में बैठी थी। तभी वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगी। यह देखकर राजा ने कहा, "तुम ऐसे ज़ोर-ज़ोर से क्यों हँसती हो?"

यह सुनकर फूलकुमारी उदास हो गई। अब वह न तो हँसती थी, न खेलती थी और न नाचती-गाती थी। वह उदास रहने लगी।

अपनी बेटी को उदास देखकर रानी बहुत उदास हो गई। बेटी और रानी को उदास देखकर राजा भी उदास रहने लगा।



एक दिन राजा बहुत उदास बैठा था। उसके पास एक आदमी आया और बोला, ''महाराज! सब फूल मुरझाने लगे हैं। वे उदास हो गए हैं।''

एक और आदमी आया। वह बोला, ''महाराज! सब चिड़ियाँ उदास हो गई हैं।''

इसके बाद एक आदमी और आया। उसने राजा से कहा, ''महाराज! महाराज! सब बच्चे उदास हो गए हैं।''

यह सुनकर राजा सोचने लगा – फूलकुमारी, फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए हैं!

राजा और रानी ने अपनी बेटी से कहा, ''हँसो बेटी, हँसो।'' पर फूलकुमारी नहीं हँसी। वह अब भी उदास थी।

राजा ने मंत्री से कहा, ''हमारी बेटी बहुत उदास रहती है। जाओ, सबसे कह दो, जो फूलकुमारी को हँसा देगा, हम उसे बहुत इनाम देंगे।''

यह सुनकर बहुत से लोग आए। भालूवाला आया। उसने भालू का नाच दिखाया। बंदरवाला आया।

उसने बंदर को नचाया। नाच देखकर सब लोग हँसे, फूलकुमारी नहीं हँसी।

तभी एक और तमाशेवाला आया। वह एक बकरे पर बैठा था। तमाशेवाला नाचने लगा। उसे देखकर बकरा नाचने लगा। यह देखकर सब हँसे, पर फूलकुमारी नहीं हँसी।

नाचते-नाचते तमाशेवाले की टोपी गिर गई। उसने टोपी उठाई तो दाढ़ी गिर गई। यह देखकर सब लोग हँस पढ़े, पर फूलकुमारी फिर भी नहीं हँसी।



जब तमाशेवाले ने अपनी दाढ़ी उठाई तो उसका बड़ा पेट गिर पड़ा। यह देखते ही फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।

फूलकुमारी के हँसते ही फूल, चिड़ियाँ और बच्चे भी चहक उठे। राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।

बताओ, क्यों ?

(क) 1. फूलकुमारी उदास रहने लगी।
2. फूल, चिड़ियाँ और बच्चे सभी उदास हो गए।
3. फूलकुमारी ज़ोर से हँस पड़ी।
4. राजा ने तमाशेवाले को बहुत इनाम दिया।

(ख) जब फूलकुमारी उदास रहने लगी तब राजा और रानी भी उदास हो गए। पर जब वह हँस पड़ी तब बताओ, राजा, रानी और सब लोगों को कैसा लगा होगा?

- ❑ वे उदास हो गए।
- ❑ वे खुश हो गए।
- ❑ उसका हँसना अच्छा नहीं लगा होगा।

पढ़ो, समझो और लिखो

(क) राजा	रानी	(ख) बादल	बादलों	से
राजकुमार	———	तालाब	———	में
लड़का	———	लड़का	———	को
बेटा	———	बंदर	———	का

पढ़ो और लिखो

फूलकुमारी हँसना सूर्य राजकुमार चिड़ियाँ

तमाशेवाला दाढ़ी मुरझाने मंत्री बकरा





10. ऐसे सूरज आता है

पूरब का दरवाज़ा खोल
धीरे-धीरे सूरज गोल
लाल रंग बिखराता है
ऐसे सूरज आता है।

अध्यापन संकेत : रोज़ सुबह सूरज निकलता है। पूछिए — सुबह सूरज निकलते हुए किस-किसने देखा है? उस समय उसका रंग कैसा होता है? सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है? आदि। बताइए कि दोपहर को सूरज बहुत तेज़ चमकता है। शाम होते-होते धूप कम होने लगती है और फिर सूरज डूब जाता है। डूबते समय उसक रंग फिर लाल होता है। बच्चों को निकलते और डूबते सूर्य को देखने के लिए प्रेरित करें। चर्चा द्वारा कवित का मूल भाव स्पष्ट करें। चारों दिशाओं का ज्ञान करवाएँ। कविता को पूर्व विधि द्वारा याद करवाएँ।



गाती हैं चिड़ियाँ सारी
खिलती हैं कलियाँ प्यारी
दिन सीढ़ी पर चढ़ता है
ऐसे सूरज बढ़ता है।

लगते हैं कामों में सब
सुस्ती कहीं न रहती तब
धरती-गगन दमकता है
ऐसे तेज़ चमकता है!

गरमी कम हो जाती है
धूप थकी सी आती है
सूरज आगे चलता है
ऐसे सूरज ढलता है।

❑ श्रीप्रसाद



पूरा करो

(क) पूरब का दरवाज़ा खोल

____

(ख) लगते हैं कामों में सब

सुस्ती ______________

(ग) धरती-गगन ______________

ऐसे तेज़ ______________

(घ) गरमी कम ______________

धूप थकी सी ______________

सूरज आगे चलता है

____

बताओ

1. सूरज किधर से निकलता है?
2. सूरज निकलने पर क्या-क्या होता है?
3. सूरज किधर छिपता है?
4. सूरज के छिपने पर क्या होता है?

पढ़ो और समझो

धरती	=	ज़मीन	ढलना	=	छिपना
गगन	=	आसमान	दमकना	=	चमकना

11. नन्ही बुलबुल

क्यारियाँ	आँवला	अमरूद	घोंसला
आँसू	नींबू	हिम्मत	परेशान

एक बगीचा था। बगीचा बहुत सुंदर था। उसमें तरह-तरह के फूलों की क्यारियाँ थीं। नींबू, आँवला, आम, जामुन और अमरूद के बहुत सारे पेड़ थे।

जामुन के पेड़ पर बुलबुल के एक जोड़े ने अपना घोंसला बनाया। पेड़ को बहुत अच्छा लगा। वह उनकी मीठी-मीठी बातें सुनता। उनकी हँसी-खुशी में खुश होता। जब बुलबुल का जोड़ा दाना चुगने जाता तो पेड़ घोंसले में पड़े अंडे पर अपने पत्तों से छाया करता। उसकी देखभाल करता।

अध्यापन संकेत : चिड़ियों के बारे में बातचीत करें। गानेवाली एक चिड़िया के रूप में बुलबुल का परिचय दें। उन्हें बताइए कि चिड़ियाँ घोंसला कहाँ बनाती हैं। अब पूरी कहानी पहले स्वयं पढ़ें। बीच-बीच में प्रश्नों द्वारा बच्चों की रोचकता बनाए रखें। कहानी के मूल भाव — हमें जीवों को सताना या मारना नहीं चाहिए, उनसे प्यार करना चाहिए — को निकलवाएँ। उन्हें इस प्रकार के अन्य अनुभव सुनाने को कहें। वचन बदलने के अभ्यास *रस्सी-रस्सियाँ* आदि श्यामपट पर लिखकर कराएँ। संयुक्तव्यंजन होने पर(ि)कहाँ लिखा जाएगा—इस ओर ध्यान दिलाएँ। चिड़ियों की और कहानियाँ या कविताएँ सुनें, सुनाएँ। अभिनय कराएँ।



एक दिन अंडे में से नन्ही बुलबुल निकली। उसकी आवाज़ सुनकर पेड़ बहुत खुश हुआ। उसने यह बात बगीचे के दूसरे पेड़-पौधों और चिड़ियों को बताई। इसे सुनकर चिड़ियाँ चहकने लगीं। पेड़-पौधे अपनी पत्तियाँ हिलाने लगे।

धीरे-धीरे नन्ही बुलबुल बड़ी होने लगी। वह फुदक-फुदक कर पूरे बाग में नाचती और गाती। सभी उसे प्यार करते।

एक दिन नन्ही बुलबुल के माता-पिता दाना चुगने गए। शाम को वे घर नहीं लौटे। नन्ही बुलबुल घबरा

गई। पेड़ ने कहा, ''घबराओ मत। वे अभी लौट आएँगे।'' पर वे नहीं आए। रात हो गई। नन्ही बुलबुल रोने लगी। यह बात पूरे बगीचे में फैल गई। सब परेशान हो उठे। आम, अमरूद, नींबू, आँवला सब नन्ही बुलबुल को समझाने लगे। पर वह सारी रात जागती रही। बगीचे की चिड़ियाँ और पेड़-पौधे भी उसके साथ जागते रहे।

सुबह हो गई। सब सोच रहे थे – क्या किया जाए! तभी उन्होंने देखा कि बुलबुल का जोड़ा धीरे-धीरे उड़ता चला आ रहा है। पूरे बगीचे में खुशी छा गई।



नन्ही बुलबुल, माँ के गले लगकर खूब रोई। ये खुशी के आँसू थे। माँ बुलबुल ने बताया, ''कल जब हम दाना चुगने एक खेत में उतरे, एक लड़के ने मुझे पत्थर मार दिया। मेरे पंख में चोट लग गई। पर मैंने हिम्मत से काम लिया। किसी तरह उड़कर पास ही नीम की डाल पर बैठ गई। तुम्हारे पिता मेरी देखभाल करते रहे। अब मैं काफी ठीक हूँ।''

पूरी बात सुनकर नन्ही बुलबुल को बड़ा गुस्सा आया। उसने कहा, ''मैं ऐसे बच्चों को कभी गाना नहीं सुनाऊँगी।''

बताओ

1. बगीचे में कौन-कौन से पेड़ थे?
2. बुलबुल के जोड़े ने अपना घोंसला कहाँ बनाया?
3. नन्ही बुलबुल की आवाज़ सुनकर बगीचे में क्या हुआ?
4. बुलबुल का जोड़ा रात को घर क्यों न लौट पाया?
5. नन्ही बुलबुल किन बच्चों को गाना नहीं सुनाना चाहती?

पढ़ो और लिखो

(क)	पत्ती	पत्तियाँ	मक्खी	मक्खियाँ
	रस्सी	———	बिल्ली	———
	सब्ज़ी	———	बस्ती	———
(ख)	पौधा	पौधे	आँवला	———
	घोंसला	———	अंडा	———
	बगीचा	———	पत्ता	———

पढ़ो और समझो

क्यों	क्यारी	वाक्य	क् + य = क्य
मक्खी	मक्खन		क् + ख = क्ख
इन्हें	नन्ही	उन्हें	न् + ह = न्ह

श्रुतलेख

क्यारियाँ अमरूद हिम्मत पत्तियाँ रूमाल
रुकना नन्ही ज़रूर आँवला

वाक्य बनाओ

हिम्मत छाया घोंसला आँसू देखभाल

12. आसमान गिरा



खरगोश	अचानक	धम्म	ठहरो	लोमड़ी
आसमान	जानवर	चौंक	दहाड़	हँसने

एक खरगोश था। वह पेड़ के नीचे सो रहा था। अचानक ज़ोर की आवाज़ हुई – धम्म! खरगोश उठ बैठा। वह बोला, ''अरे, क्या गिरा?''

अध्यापन संकेत : जंगली जानवरों के नाम पूछें। छोटे-बड़े जानवरों के बारे मे बात करें। अभिनयात्मक ढंग मे कहानी सुनाएँ। बीच-बीच में प्रश्न पूछकर बच्चों का ध्यान कहानी में बनाए रखें। प्रश्नों द्‌वारा कहानी का मुख्य भाव—किसी की कही हुई बात को सुनकर ही सच नहीं मान लेना चाहिए, किसी बात के बारे में पूरी जानकारी लेकर ही उस पर विश्वास करना चाहिए, निकलवाएँ। *म्म* और *म्ह* संयुक्तव्यंजनों से बनने वाले शब्दों को अभ्यास कार्य में करवाकर कुछ अन्य शब्दों को कार्डों से पढवाएँ। जानवरों के मुखौटे बनवाएँ और कहानी का अभिनय करवाएँ।

खरगोश ने इधर-उधर देखा। उसे कुछ दिखाई नहीं दिया। उसे लगा आसमान गिर रहा है। खरगोश डर गया और भागने लगा।

भागते-भागते उसे एक लोमड़ी मिली। उसने पूछा, ''खरगोश भाई, कहाँ भागे जा रहे हो? ज़रा सुनो तो।''

खरगोश भागते-भागते बोला, ''आसमान गिर रहा है, भागो! भागो! जल्दी भागो!''

लोमड़ी भी भागने लगी। आगे जाकर उन्हें एक भालू मिला। भालू बोला, ''ठहरो, ठहरो! कहाँ भागे जा रहे हो?''

खरगोश और लोमड़ी बोले, ''भागो! तुम भी भागो। आसमान गिर रहा है!''

भालू भी उनके साथ भागने लगा।

खरगोश, लोमड़ी और भालू भागते-भागते एक हाथी के पास से निकले। हाथी बोला, ''अरे! सब क्यों भागे जा रहे हो? ठहरो, कुछ बताओ तो।''

भालू बोला, ''आसमान गिर रहा है, तुम भी भागो।'' हाथी भी भागने लगा। सब भाग रहे थे – आगे-आगे खरगोश, उसके पीछे लोमड़ी, उसके



पीछे भालू और सबके पीछे हाथी।

भागते-भागते उन्हें शेर मिला। उसने पूछा, ''तुम सब क्यों भागे जा रहे हो?''

हाथी बोला, ''आसमान गिर रहा है। तुम भी भागो।''

शेर ने दहाड़ कर कहा, ''आसमान गिर रहा है।

कहाँ गिर रहा है? रुको।'' यह सुनकर सभी जानवर रुक गए।

शेर ने पूछा, ''किसने कहा आसमान गिर रहा है?''

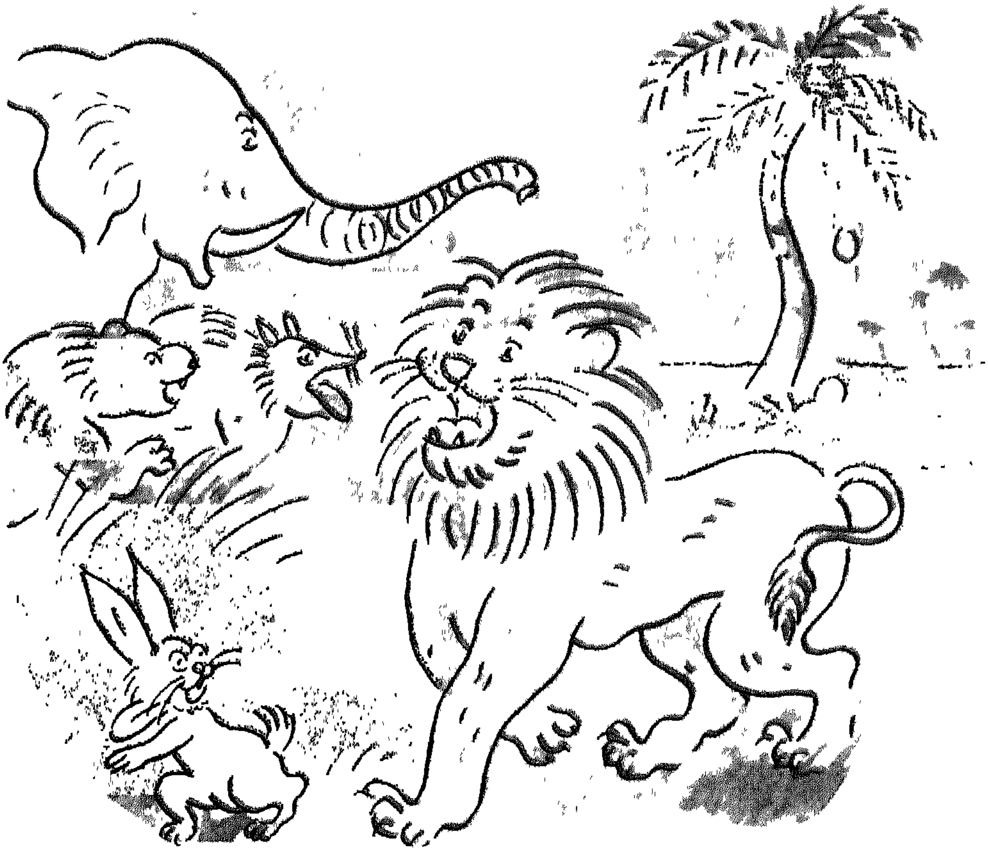
हाथी बोला, ''भालू ने कहा।''

भालू बोला, ''मुझसे तो लोमड़ी ने कहा।''

लोमड़ी बोली, ''मुझसे तो खरगोश ने कहा था। सबसे पहले इसी ने कहा था।''

खरगोश चुप रहा।





शेर बोला, ''कहो खरगोश! कहाँ गिर रहा है आसमान?''

खरगोश ने कहा, ''मैं पेड़ के नीचे सो रहा था। वहीं धम्म से आसमान गिरा।''

शेर ने कहा, ''चलो, चलकर देखें।''

वे सब उस पेड़ के नीचे गए। सबने पेड़ के नीचे देखा। वहाँ एक बड़ा सा फल गिरा पड़ा था। तभी वैसा ही एक और फल गिरा – धम्म! खरगोश चौंक गया।

शेर बोला, ''तो यही तुम्हारा आसमान था। लो फिर आसमान गिरा। भागो!''

और सभी हँसने लगे।

बताओ

1. धम्म की आवाज़ सुनकर खरगोश ने क्या समझा?
2. खरगोश के पीछे कौन-कौन भागा?
3. शेर ने जानवरों से क्या पूछा?
4. पेड़ के नीचे पहुँचकर जानवरों ने क्या देखा?

पहले क्या हुआ? फिर क्या हुआ? उसके बाद क्या हुआ?

- [ ] खरगोश डरकर भागने लगा।
- [ ] शेर ने पूछा, ''किसने कहा, आसमान गिर रहा है?''
- [ ] भागते-भागते खरगोश को एक लोमड़ी मिली।
- [ ] खरगोश पेड़ के नीचे सो रहा था।
- [ ] तभी वैसा ही एक और फल गिरा।

पढ़ो और समझो

धम्म	अम्मा	हिम्मत	म् + म = म्म
गुब्बारा	धब्बा	डिब्बा	ब् + ब = ब्ब
तुम्हारा	तुम्हें	कुम्हार	म् + ह = म्ह

पढ़ो, समझो और लिखो

तुम्हारा	तुम्हारी	तुम्हारे
हमारा	______	______
मेरा	______	______
उसका	______	______

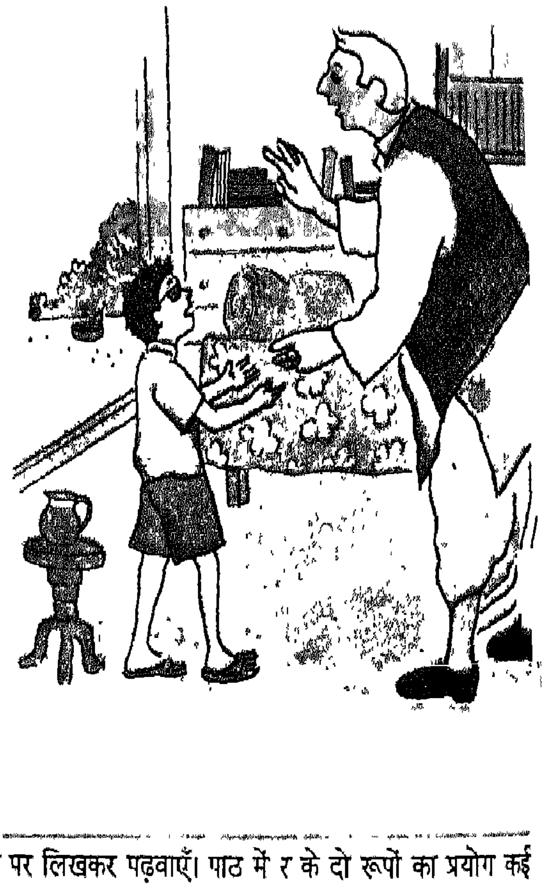
करो

अध्यापक/अध्यापिका की सहायता से कक्षा में इस कहानी का अभिनय करो।



13. साथी की सहायता

उम्र	ग्यारह	रुपए	सहायता
साथियों	खर्च	चित्तरंजन	देशबंधु



एक बालक था। उसकी उम्र ग्यारह वर्ष की थी। एक दिन वह अपने पिताजी के पास गया और बोला, ''पिताजी ! मुझे पाँच-सात रुपए दे दीजिए।''

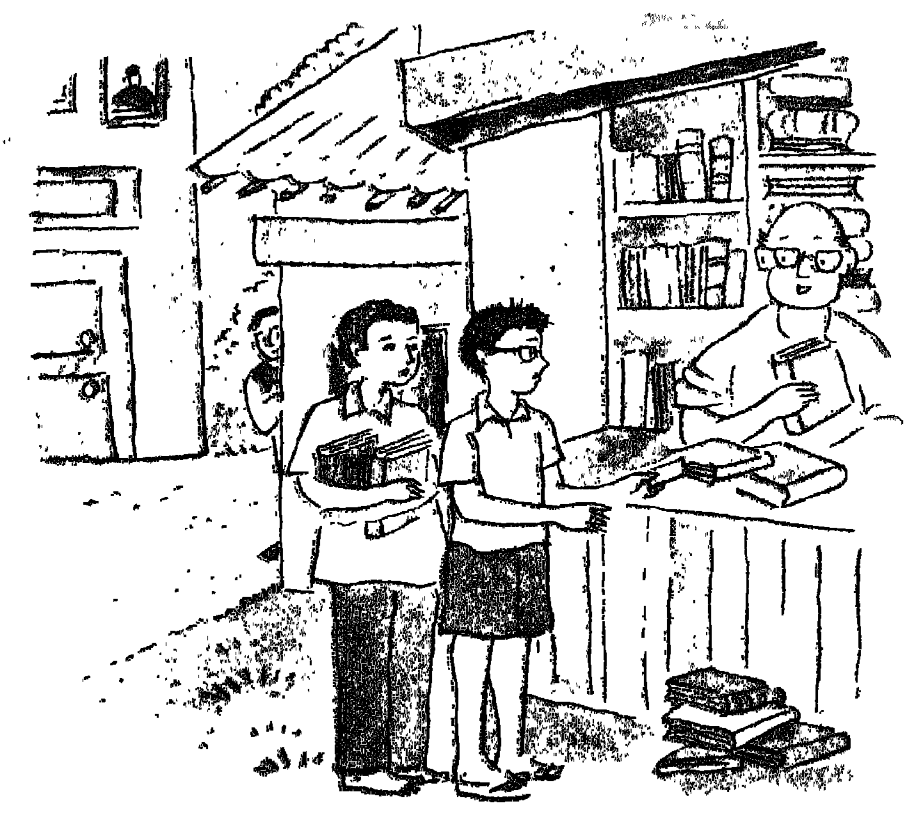
अध्यापन संकेत : पाठ के नए शब्द श्यामपट पर लिखकर पढ़वाएँ। पाठ में र के दो रूपों का प्रयोग कई बार हुआ है, जैसे— *उम्र*, *प्रसन्न*, *वर्ष*, *खर्च* आदि। इन्हें श्यामपट्ट पर लिखकर बार-बार पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बातचीत द्वारा बच्चों से निकलवाइए : ज़रूरत के समय लोगों की सहायता करनी चाहिए। अन्य महापुरुषों के बचपन की घटनाएँ सुनाएँ और उन्हें पढ़ने को प्रेरित करें।

पिताजी ने कहा, "पाँच-सात रुपए ! तुम ये रुपए किसलिए माँग रहे हो?"

बालक बोला, "मुझे इन रुपयों की ज़रूरत है।"

पिताजी ने बालक को पाँच रुपए दे दिए। लेकिन वे जानना चाहते थे कि बालक रुपए किस काम में खर्च करेगा। वे चुपचाप उसके पीछे चल पड़े।

बालक सीधा अपने साथी के घर गया। वह उसे बुला लाया। फिर दोनों बाज़ार की ओर चल पड़े। पिताजी भी उनके पीछे-पीछे गए।



बाज़ार में पुस्तकों की एक दुकान थी। वहाँ दोनों रुक गए। बालक ने कुछ पुस्तकें खरीदीं और अपने साथी को दे दीं। साथी को इन पुस्तकों की बहुत ज़रूरत थी।

पिताजी सब कुछ समझ गए। वे प्रसन्न थे कि उनके बेटे ने अपने साथी की मदद की।

पिताजी ने बालक को बुलाया। वे प्यार से बोले, "तुमने बहुत अच्छा काम किया है। साथियों की सहायता करना बहुत अच्छी बात है। मैंने तुम्हें पुस्तकें खरीदते देख लिया था।"

इस बालक का नाम था – चित्तरंजन दास। चित्तरंजन दास ने देश की बहुत सेवा की। लोग इन्हें देशबंधु चित्तरंजन दास कहने लगे।

बताओ

1. बालक का नाम क्या था?
2. बालक ने अपने पिताजी से रुपए क्यों माँगे?
3. पिताजी बालक के पीछे-पीछे क्यों गए?
4. पिताजी क्यों प्रसन्न थे?

पढ़ो, समझो और लिखो

पुत्र	बेटा	बालक	———
साथी	———	साल	———
किताब	———	सहायता	———

खाली स्थान भरो

साथी   सहायता   बाज़ार   पुस्तक

(क) मेरे ——— का नाम मोहन है।

(ख) ——— में कई चीज़ें बिकती हैं।

(ग) राजन ने कहानी की ——— खरीदी।

(घ) हमें सबकी ——— करनी चाहिए।

पढ़ो और लिखो

उम्र	नम्र	चक्र
नमस्ते	बस्ता	पुस्तक
ग्यारह	योग्य	भाग्य

पढ़ो और समझो

रुपया	रुपए	रुपयों से
भेड़िया	भेड़िए	भेड़ियों ने
पहिया	पहिए	पहियों से

14. दीप जलाओ



दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे
खुशी-खुशी सब हँसते आओ
आज दिवाली रे।

मैं तो लूँगा खील-खिलौने
तुम भी लेना भाई
नाचो गाओ खुशी मनाओ
आज दिवाली आई।

अध्यापन संकेत : बच्चों से दिवाली के बारे में बातचीत करें। बच्चों को,इस त्योहार के बारे में अपने अनुभव सुनाने को कहें। लय और तान के साथ कई बार कविता-पाठ करें। बच्चों को कविता गाकर सुनाने को कहें। बच्चे कक्षा साफ़ करें, सजाएँ, बत्तियाँ बनाएँ, दीप जलाएँ। कार्ड बनाकर अपने साथियों को भेजें। चार्ट-पेपर से दीए काटकर, सुनहरे कागज़ की बत्ती लगाकर दीए और मोमबत्ती, कंडील बनवाएँ। चर्चा द्वारा उभारें—हमें पटाखे चलाते समय सावधान रहना चाहिए।



आज पटाखे खूब चलाओ
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।

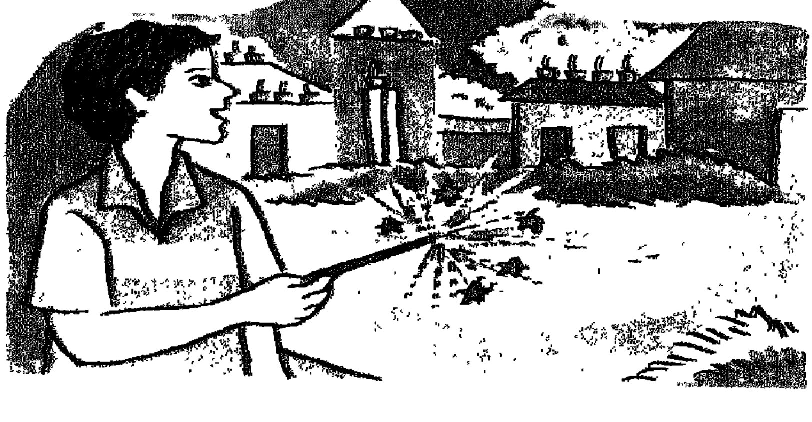
नए-नए मैं कपड़े पहनूँ
खाऊँ खूब मिठाई
हाथ जोड़कर पूजा कर लूँ
आज दिवाली आई



खाओ मित्रो खूब मिठाई
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।

आज दुकानें खूब सजी हैं
घर भी जगमग करते
झलमल-झलमल दीप जले हैं
कितने अच्छे लगते।

आओ नाचो खुशी मनाओ
आज दिवाली रे
दीप जलाओ दीप जलाओ
आज दिवाली रे।



पढ़ो और पूरा करो

(क) दीप जलाओ ____________

आज ____________

(ख) आज पटाखे ____________

आज ____________

(ग) आज दुकानें खूब सजी हैं

____

(घ) खाओ मित्रो ____________

आज दिवाली रे

बताओ

1. यह कविता किसके बारे में है?
2. दिवाली के दिन क्या-क्या करते हैं?

चित्र बनाओ

दिवाली के बारे में कोई चित्र बनाओ।

करो

पाठशाला में सभी साथी मिलकर दिवाली मनाओ।

15. बादल

बूँदें	वर्षा	समुद्र	प्रश्न	भाप
सूर्य	ठंड	रसोईघर	तुरंत	केतली

एक दिन भरत पाठशाला से घर आ रहा था। आसमान में बादल छाए हुए थे। घर अभी कुछ दूर था। इतने में बड़ी-बड़ी बूँदें पड़ने लगीं। भरत भागता हुआ घर पहुँचा। फिर भी वह भीग गया था।

भरत को देखते ही पिताजी बोले, ''जाओ, कपड़े बदल लो, नहीं तो सरदी लग जाएगी।''

कपड़े बदलते हुए भरत सोचने लगा – आसमान में पानी कहाँ से आता है? बादल आने पर ही वर्षा

अध्यापन संकेत : यह पाठ विज्ञान से संबंधित है। इसमें बादलों के बनने और वर्षा होने की प्रक्रिया का वर्णन है। पाठ शुरू करने से पहले बच्चों से बादलों और वर्षा के संबंध में बातचीत करें। अपनी ओर से पूरी प्रक्रिया को सरल ढंग से समझाएँ। पूरा पाठ धीरे-धीरे पहले स्वयं पढ़ें। वाक्य-प्रयोग द्वारा कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें। चर्चा द्वारा विषय को सरल बनाएँ। बच्चों से पाठ का सस्वर वाचन करवाएँ। बादल और वर्षा पर कोई कविता सुनें और सुनाएँ। बादल कई रूप बदलते हैं। बच्चों को उन्हें देखने और उनका आनंद उठाने के लिए प्रेरित करें।



क्यों होती है? उसने सोचा, पिताजी से पूछना चाहिए। वह कपड़े बदलकर पिताजी के पास गया।

भरत ने पूछा, ''पिताजी, वर्षा का पानी कहाँ से आता है?''

''बादलों से !'' पिताजी ने बताया।

भरत ने फिर पूछा, ''लेकिन बादलों में इतना पानी कहाँ से आता है?''

पिताजी ने समझाते हुए कहा, ''बेटा, तालाबों, नदियों और समुद्रों में पानी होता है। सूर्य की तेज़ गरमी से यही पानी भाप में बदल जाता है। फिर भाप आसमान में जाकर बादल बन जाती है।''

भरत ने प्रश्न किया, ''पिताजी, भाप बादल कैसे बन जाती है?''

पिताजी ने उत्तर दिया, ''भाप हवा से हलकी होती है। हलकी होने के कारण यह ऊपर उठती है। ऊपर होती है ठंड! ठंड से ही भाप फिर से पानी की



बहुत ही नन्ही-नन्ही बूँदों का रूप ले लेती है। बादल ऐसी ही नन्ही-नन्ही बूँदों का समूह है।''

पिताजी भरत को रसोईघर में ले गए। वहाँ माँ चाय बना रही थी। चूल्हे पर केतली रखी थी। केतली के मुँह से भाप निकल रही थी। भाप ऊपर की ओर उठ रही थी। पिताजी ने ठंडे पानी से भरा एक गिलास उठाया। इस गिलास को वे भाप के पास ले आए। कुछ देर गिलास को वहीं पकड़े खड़े रहे।

भरत ने देखा – गिलास पर से पानी की बूँदें टपक रही हैं। भरत सब कुछ समझ गया। वह बहुत खुश था।

बताओ

1. भरत क्यों भीग गया था?
2. भाप कैसे बनती है?
3. भाप ऊपर क्यों उठती है?
4. पिताजी भरत को रसोईघर में क्यों ले गए?

वाक्य पूरे करो

भाप बूँदों बादल पानी

(क) बादलों में इतना ——— कहाँ से आता है?

(ख) सूर्य की गरमी से पानी ——— बन जाता है।

(ग) ——— पानी बरसाते हैं।

(घ) बादल नन्ही-नन्ही ——— का समूह है।

पढ़ो और लिखो

चूल्हा	कुल्हाड़ी	दूल्हा	वर्षा	सूर्य	हर्ष
प्रेम	प्रश्न	मद्रास	नन्ही	इन्हें	उन्हें

पढ़ो और समझो

पंख	=	पङ्ख	सुंदर	=	सुन्दर
चंचल	=	चञ्चल	आनंद	=	आनन्द
ठंड	=	ठण्ड	रंजन	=	रञ्जन
तुरंत	=	तुरन्त	बंधु	=	बन्धु
पंप	=	पम्प	मंजन	=	मञ्जन

16. साहसी बालक

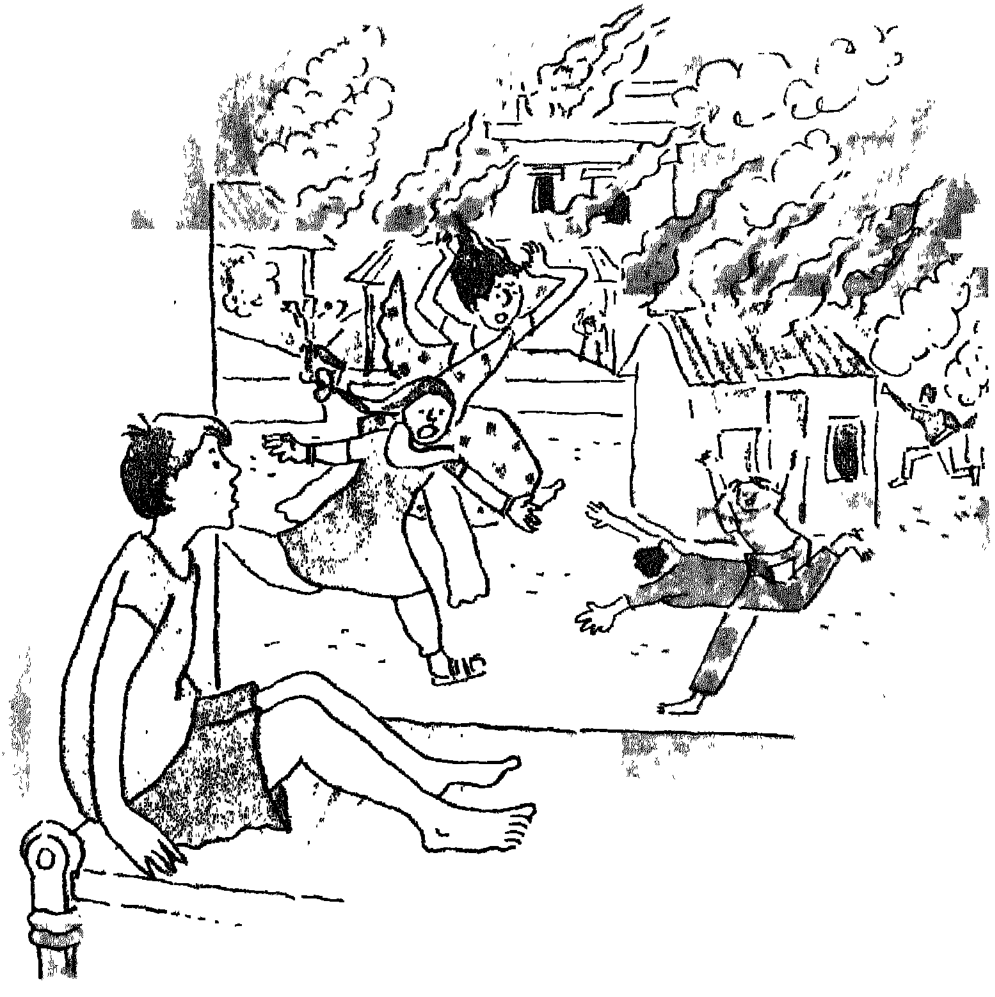
पूर्णचंद्र	बस्ती	प्रतिदिन	झोपड़ियाँ
लट्ठे	जनवरी	साहसी	इनाम

पूर्णचंद्र का घर एक घनी बस्ती में था। वह प्रतिदिन बस्ती की पाठशाला में पढ़ने जाया करता था। उसे पढ़ने-लिखने का बहुत शौक था। वह पाठशाला से आकर थोड़ा खेलता और फिर पढ़ने बैठ जाता।

आज पाठशाला में ही पूर्णचंद्र खेलते-खेलते बहुत थक गया था। उसने सोचा—खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा, फिर पढ़ूँगा।

अध्यापन संकेत : *पूर्णचंद्र, लट्ठे, बस्ती, बाँस, झोपड़ी* — शब्दों को श्यामपट पर लिखें और इनका उच्चारण करवाएँ। *लट्ठा, बस्ती, फूस, झोपड़ी* के अर्थ स्पष्ट करें। *इंद्र-सुंदर, चंद्र-मंदिर* जैसे शब्दों के उदाहरणों द्वारा *द्र (द् र)* और *(दर)* के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। *बंद* और *बन्द*, *चंद्र* और *चन्द्र* की तरह के अन्य जोड़े श्यामपट पर लिखकर बताएँ कि ये दोनों ही ठीक हैं लेकिन आजकल इन्हें बिंदु के साथ ही लिखा जाता है। मिलते-जुलते क्रियापदों जैसे—*करूँगा, पढ़ूँगा, खेलूँगा* आदि पर ध्यान दिलाएँ और वैसे ही अन्य क्रियापद बताने को कहें। बच्चों को अपने जीवन या परिचित व्यक्तियों के जीवन के साहसिक अनुभव सुनाने को प्रोत्साहित करें।

पूर्णचंद्र थका हुआ तो था ही, जैसे ही चारपाई पर लेटा उसे गहरी नींद आ गई। नींद में उसे कुछ लोगों के भागने और चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं। वह घबराकर उठ बैठा। सचमुच लोग चिल्ला रहे थे।





''आग! आग!''

''आग! आग! बस्ती में आग लग गई है।''

पूर्णचंद्र भागा-भागा बाहर आया। उसने इधर-उधर देखा, लोग एक ओर भागे जा रहे थे। पूर्णचंद्र भी उधर ही भागने लगा।

उसने देखा, कई झोंपड़ियों और मकानों में आग लगी हुई थी। आग पूर्णचंद्र की पाठशाला की ओर

बढ़ रही थी। इतने में पाठशाला की छत पर एक जलती हुई लकड़ी आ गिरी।

पाठशाला का दरवाज़ा बंद था। उस पर ताला लगा हुआ था। पूर्णचंद्र ने कुछ सोचा। वह झट बाँस के एक लट्ठे के सहारे छत पर चढ़ गया।

फूस की छत तेज़ी से आग पकड़ रही थी। पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस नीचे फेंक दिया।

लोगों ने फूस पर पानी डाला। आग बुझ गई। पूर्णचंद्र ने अपनी पाठशाला को जलने से बचा लिया।

इतने में आग बुझाने वाले भी आ गए। जगह-जगह पानी डालकर उन्होंने आग बुझा दी।

भारत सरकार ने 26 जनवरी को साहसी बालक पूर्णचंद्र को इनाम दिया।

किसने कहा, क्यों कहा?

(क) खाना खाकर कुछ देर आराम करूँगा।

(ख) आग! आग! बस्ती में आग लग गई।

बताओ

1. पूर्णचंद्र ने जलता हुआ फूस नीचे क्यों फेंक दिया?
2. सरकार ने पूर्णचंद्र को इनाम क्यों दिया?
3. पूर्णचंद्र कैसा लड़का था?

पढ़ो और समझो

लट्ठा	गट्ठा	इकट्ठा	ट्+ठ=ट्ठ
चन्द्रमा	इन्द्र	पन्द्रह	न्+द्+र=न्द्र
चंद्र	इंद्र	पंद्रह	

वाक्य बनाओ

प्रतिदिन गहरी साहसी इनाम झोंपड़ी

पढ़ो और लिखो

पूर्णचंद्र	बस्ती	शौक	चारपाई	झोंपड़ियाँ
साहसी	इनाम	राजेन्द्र	इकट्ठा	बस्ता

17. सबकी सुराही

सुराही मज़बूत कुम्हार कीचड़ बेल-बूटे



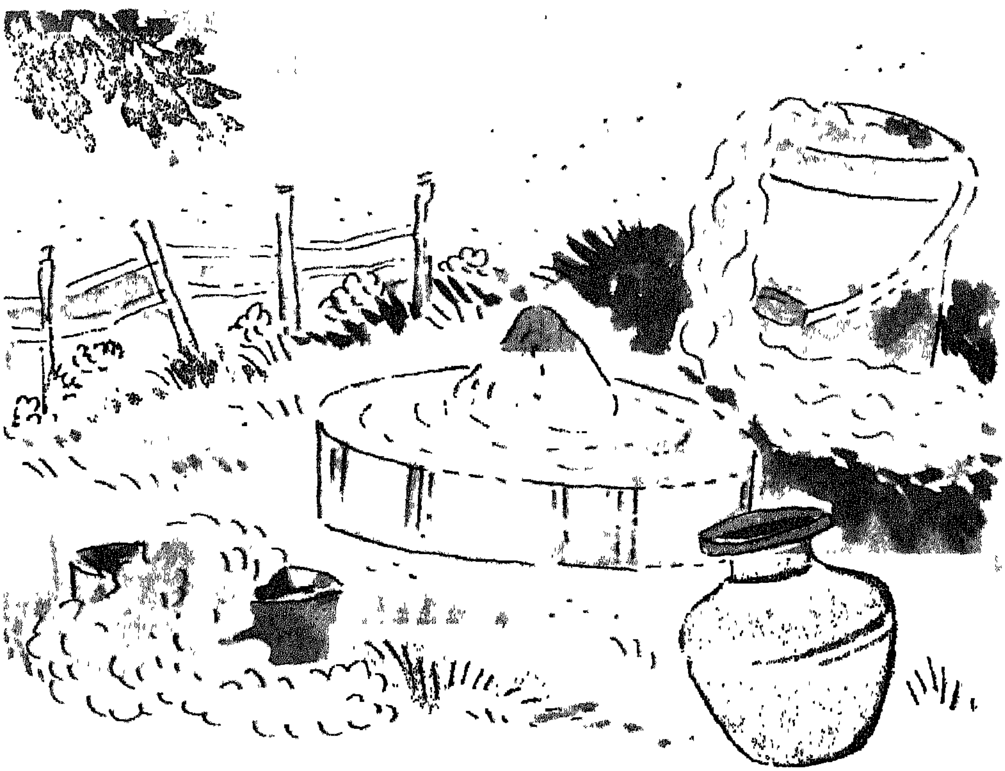
एक थी सुराही। बहुत सुंदर, बहुत मज़बूत। उस पर सुंदर-सुंदर बेल-बूटे बने थे। भीमा सुराही को बार-बार देखता और खुश होता। वह सोचने लगा - मेरी मेहनत से ही यह

अध्यापन संकेत : यह पाठ गद्य और पद्य की मिली-जुली शैली में है। पहले इसे स्वयं पढ़ें फिर बच्चों से अभिनयात्मक ढंग से पढ़वाएँ। बच्चे — *कुम्हार, मिट्टी, पानी, चाक, आग और सुराही* पात्र बनकर पढ़ें। *कुम्हार, बेल-बूटे, चाक, मिट्टी* आदि के बारे में बात करें। सुराही या घड़ा कैसे बनाया जाता है — इसकी पूरी प्रक्रिया बच्चों को बताएँ। *मिट्टी-मिटी, पक्का-पका, बच्चा-बचा* शब्दों को श्यामपट पर लिखकर दोनों के उच्चारण और अर्थ के अंतर पर ध्यान दिलाएँ। सुंदर-सुंदर दो बार लिखने का मतलब है बल देना अर्थात बहुत सुंदर। अभ्यास में दिए इसी प्रकार के शब्दों को पढ़वाएँ और वाक्य बनवाएँ। चर्चा के माध्यम से उभारें — मिलजुल कर काम करने से काम अच्छा होता है। बच्चों से मिट्टी के बरतन बनवाएँ।

सुराही इतनी सुंदर बनी है। सोचते-सोचते उसे नींद आ गई। वह सपना देखने लगा। सुराही के पास पड़ी मिट्टी हिली और कहने लगी–

"सुराही सुराही मैंने तुम्हें बनाया
सुंदर रूप तुम्हारा मुझसे ही है आया।"

मिट्टी ने जब बार-बार यह कहना शुरू किया तब पास ही रखी हुई बालटी का पानी छलका। वह कहने लगा–



''मिट्टी रानी मिट्टी रानी मेहनत सारी मेरी
मैंने इसे बनाया तुम थी धूल की बस ढेरी।''

मिट्टी और पानी की बातें सुनकर भीमा कुम्हार का चाक चुप न रह सका। वह बोला–



''तुम दोनों थे कीचड़-मिट्टी
इस सच को लो जान
बनी सुराही मेरे कारण
बात यही लो मान।''

मिट्टी, पानी और चाक की बातें सुनकर बुझती आग भी जोश में आकर कहने लगी-

''तुम सब बातें कच्ची करते
कच्चा काम तुम्हारा
तप कर मुझमें बनी सुराही
असली काम हमारा।''

भीमा कुम्हार ने सबकी बातें सुनीं। वह बोला, ''सब चुप हो जाओ, चलो सुराही से पूछते हैं, उसे किसने बनाया।''

सुराही ने जब यह सवाल सुना, वह बोली-

''किसी एक का काम नहीं यह
सबकी मेहनत सबका काम
मिलजुल कर सब कर सकते हैं
अच्छे-अच्छे, सुंदर काम।''

बताओ

1. सुराही कैसी थी?
2. चाक ने क्यों कहा — सुराही मेरे कारण बनी है?
3. आग ने सुराही बनाने में क्या मदद की?
4. सुराही ने क्या कहा?

पढ़ो और समझो

सुंदर-सुंदर
बार-बार
ज़ोर-ज़ोर
पीछे-पीछे
हरी-हरी
धीरे-धीरे

वाक्य बनाओ

कुम्हार	पर	सबकी बातें सुनीं।
	को	सुंदर बेल-बूटे बने थे।
सुराही	ने	सबने मिलकर बनाया था।
	का	नाम भीमा था।

करो

मिट्टी से खिलौने बनाओ।

18. चाँद का कुरता

चाँद झिंगोला ठिठुर यात्रा भाड़े सलोने अंगुल

हठ कर बैठा चाँद एक दिन, माता से यह बोला,
''सिलवा दो माँ, मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला।

सन-सन चलती हवा रात भर, जाड़े से मरता हूँ,
ठिठुर-ठिठुर कर किसी तरह यात्रा पूरी करता हूँ।

आसमान का सफ़र और यह मौसम है जाड़े का,
न हो अगर तो ला दो कुरता ही कोई भाड़े का।''

अध्यापन संकेत : चर्चा करें कि हम कपड़े क्यों पहनते हैं? तुम नए कपड़े लेने के लिए किससे कहते हो? चाँद आसमान में रातभर घूमता है, क्या उसे भी कपड़ों की ज़रूरत पड़ती होगी? कपड़े सिलवाने के लिए वह किससे कहेगा? क्या माँ उसे कुरता या झिंगोला सिलवा देगी? लय और तान के साथ कविता को धीरे-धीरे पढ़ें जिससे अर्थ स्वयं ही स्पष्ट हो जाए। बच्चे साथ-साथ कविता बोलें, याद करें और सुनाएँ। चाँद के घटते-बढ़ते आकार को देखने के लिए प्रोत्साहित करें। श्यामपट पर चाँद का अलग-अलग आकार बनाकर भी दिखाएँ। बच्चों से चाँद के अलग-अलग आकार बनवाएँ।

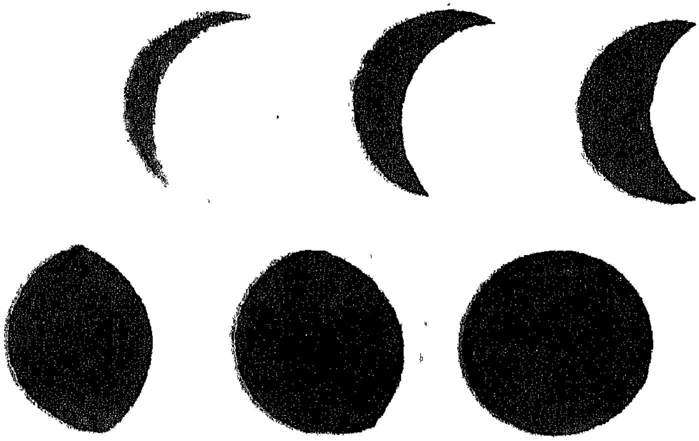
बच्चे की सुन बात कहा माता ने, ''अरे सलोने!
कुशल करें भगवान, लगे मत तुझको जादू-टोने।

जाड़े की तो बात ठीक है, पर मैं तो डरती हूँ,
एक नाप में कभी नहीं तुझको देखा करती हूँ।

कभी एक अंगुल भर चौड़ा, कभी एक फुट मोटा,
बड़ा किसी दिन हो जाता है और किसी दिन छोटा।

घटता-बढ़ता रोज़ किसी दिन ऐसा भी करता है,
नहीं किसी की भी आँखों को दिखलाई पड़ता है।





अब तू ही तो बता, नाप तेरी किस रोज़ लिवाएँ,
सी दें एक झिंगोला जो हर रोज़ बदन में आए?''

❑ रामधारी सिंह 'दिनकर'

पूरा करो

(क) हठ कर बैठा चाँद एक दिन,
______________________________,
''सिलवा दो माँ, __________
______________________________।

(ख) कभी एक अंगुल भर चौड़ा,
______________________________,
बड़ा किसी दिन हो जाता है
______________________________।

बताओ

1. चाँद ने माँ से क्या कहा?
2. माँ ने चाँद को क्या उत्तर दिया?
3. चाँद को रात में क्या कठिनाई होती थी?
4. चाँद एक जैसा क्यों नहीं दिखता?

पढ़ो और समझो

हठ	=	ज़िद्द करना
झिंगोला	=	झबला, कुरते जैसा दिखने वाला एक ढीला वस्त्र
सन-सन	=	हवा चलने की आवाज़
ठिठुर-ठिठुर	=	सरदी से सिकुड़ना/काँपना
यात्रा	=	सफ़र
भाड़े	=	किराये का
सलोने	=	सुंदर

करो

1. चाँद और तारों के बारे में कोई और कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।
2. चमकीले कागज़ों से चाँद-सितारे काटकर मुखौटे बनाओ।

19. मोची और बौने

पत्नी	दुकान	चमड़ा	अंधेरा	बौने	खिड़की

एक मोची और उसकी पत्नी अपनी दुकान के पीछे रहते थे। मोची बहुत अच्छे जूते बनाता था। उसके पास पैसे बहुत कम थे। इसलिए वह एक जोड़ा जूते के लिए ही चमड़ा लाता था।

एक दिन काम करते-करते अंधेरा हो गया। मोची ने जूते बनाने के लिए चमड़ा काटकर रख दिया। फिर वह घर चला गया।

अगले दिन मोची दुकान में आया। मोची ने अपनी पत्नी से कहा, ''अरे! ये जूते! शाम को तो मैंने चमड़ा काटकर ही रखा था। देखो, रात में ऐसे सुंदर

अध्यापन संकेत : कहानी को रोचक ढंग से सुनाएँ। बच्चों से बीच-बीच में प्रश्न पूछकर निश्चित करें कि वे ध्यान से कहानी सुन रहे हैं। कहानी का मूल भाव कि अच्छे लोग दूसरों की मदद करके खुश होते हैं, निकलवाएँ। बच्चों से अपने शब्दों में कहानी सुनाने को कहें। कहानी का अभिनय करवाएँ। *ज़, फ़, ड़-ढ़, श-स* के शुद्ध उच्चारण पर बल दें।



और मज़बूत जूते किसने बना दिए!''

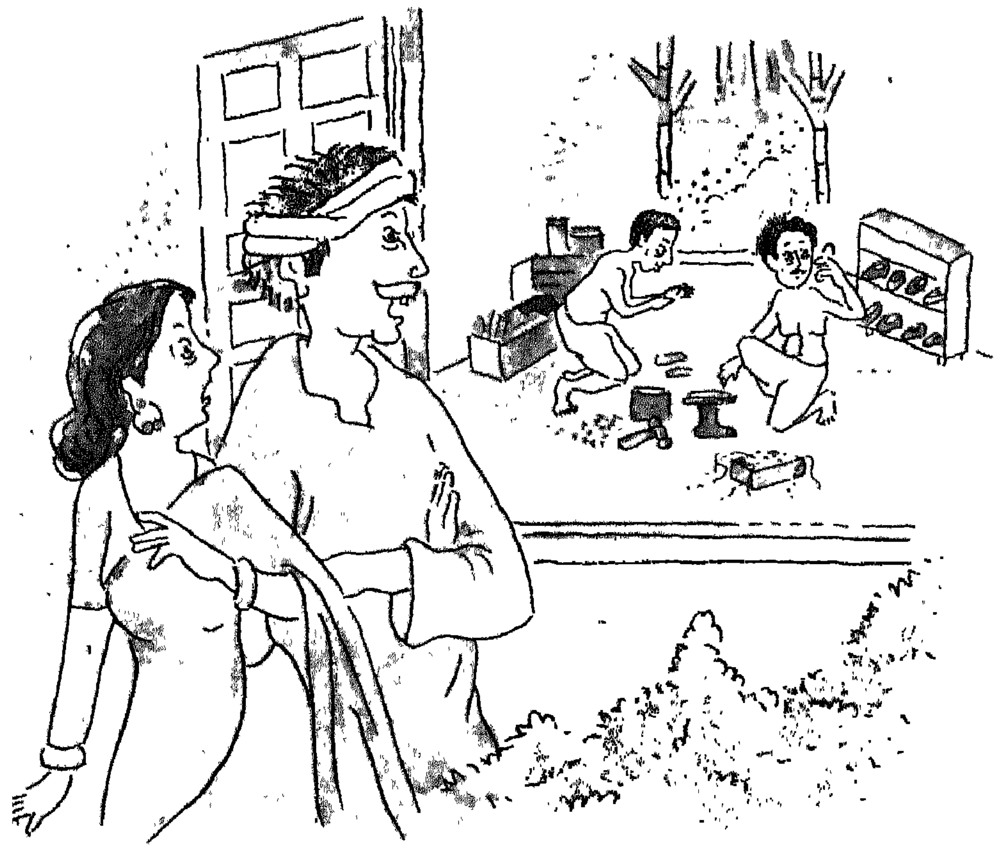
''कितने सुंदर जूते हैं!'' उसकी पत्नी बोली।

तभी दुकान पर एक आदमी आया। उन जूतों को देखकर बोला, ''ये जूते बड़े सुंदर हैं। मुझे दे दो भाई।'' मोची ने जूते उसे दे दिए। उसने मोची को बहुत से पैसे दिए।

उस दिन मोची दो जोड़े जूतों के लिए चमड़ा लाया। शाम को फिर चमड़ा काटकर वह चला गया।

अगले दिन वह दुकान में आया और बोला, ''अरे! आज भी जूते बन गए हैं। इनको कौन बना जाता है?''

उस दिन भी उसकी दुकान पर एक आदमी आया और बोला, ''ये जूते बड़े मज़बूत हैं। मुझे दे दो।'' मोची ने दोनों जोड़े जूते उसे दे दिए। उस आदमी ने भी मोची को बहुत-से पैसे दिए।



अब मोची अधिक चमड़ा लाने लगा। वह शाम को चमड़ा काटकर रख देता। दूसरे दिन उसे जूते बने मिलते। इस तरह उसके पास बहुत-से पैसे हो गए।

एक दिन मोची ने अपनी पत्नी से कहा, ''हम आज रात को खिड़की में से देखेंगे, ये जूते कौन बना जाता है।'' चमड़ा काटकर मोची अपनी पत्नी के साथ खिड़की के पीछे छिपकर बैठ गया और देखने लगा।

''देखो, देखो'', उसकी पत्नी धीरे से बोली। मोची ने देखा – दो बौने नाचते-नाचते आए और जूते बनाने लगे।

मोची की पत्नी बोली, ''अच्छा! तो ये बौने ही जूते बना जाते हैं। इन दोनों ने हमारी बहुत मदद की है। मैं इनके लिए सुंदर-सुंदर कपड़े बनाऊँगी।''

''मैं इनके लिए छोटे-छोटे जूते बनाऊँगा,'' मोची बोला।

मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए जूते और कपड़े बनाए। शाम को उन्हें दुकान में रख दिया। फिर वे खिड़की के पीछे बैठकर देखने लगे।



रात हुई। बौने आए। "आज तो चमड़ा नहीं है," एक ने कहा।

"अरे! देखो! यह क्या? कपड़े और जूते!" दूसरे बौने ने कहा।

कपड़े और जूते पहनकर वे बहुत खुश हुए और उछलते-कूदते चले गए।

मोची और उसकी पत्नी दोनों बहुत प्रसन्न थे।

बताओ

1. मोची और उसकी पत्नी कहाँ रहते थे?
2. मोची दो जोड़े जूतों के लिए चमड़ा क्यों लाया?
3. मोची को कैसे पता चला कि जूते कौन बना जाता था?
4. मोची और उसकी पत्नी ने बौनों के लिए क्या-क्या बनाया?

पढ़ो और बताओ, कौन सी बात सही है?

- ❑ मोची बहुत धनी था।
- ❑ मोची और उसकी पत्नी को बौने अच्छे लगे।
- ❑ मोची और उसकी पत्नी दोनों ही अच्छे थे।
- ❑ बौनों ने उनकी कुछ मदद नहीं की।
- ❑ वे भी बौनों को कुछ देना चाहते थे।

पढ़ो, समझो और लिखो

जूता	जूते
कपड़ा	——
बौना	——
दीया	दीए
रुपया	——
भेड़िया	——

पढ़ो और समझो

मज़बूत	रोज़	जहाज़
साफ़	सफ़ाई	सफ़ेद
पेड़	सड़क	खिड़की
दाढ़ी	सीढ़ी	पढ़ना
शहतूत	शीशा	मशाल
सवेरा	बरसना	साहसी

20. बूझो तो जानें

(1)

नीचे पटको ऊपर जाती
ऊपर से फिर नीचे आती
ऊँची-ऊँची कूद लगाती
गोल-गोल हूँ तुमको भाती।

(2)

बिना पंख ही उड़ जाती
बाँध गले में डोर
खींचो तो ऊपर चढ़ जाती
रहे हाथ में छोर।

अध्यापन संकेत: ये पहेलियाँ एक-एक करके पूछिए। पहेली का सही उत्तर मिलने पर उसे श्यामपट पर लिखें। इसी प्रकार की अन्य पहेलियाँ बच्चों से आपस में बूझने को कहें।

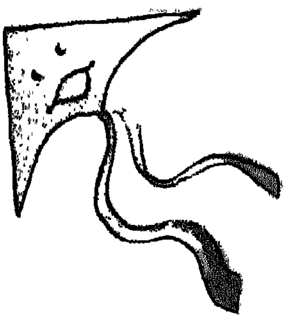
(3)

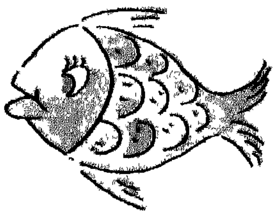
चार पाँव पर चल न पाऊँ
बिना हिलाए हिल न पाऊँ
फिर भी सबको दूँ आराम
झटपट बोलो मेरा नाम।

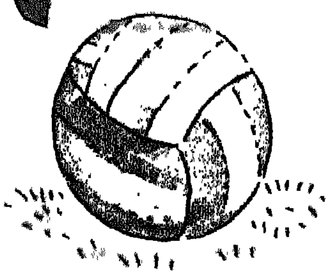
(4)

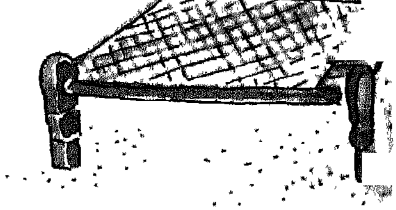
तैर-तैर कर आती हो
मचल-मचल कर जाती हो
करती हो तुम मनमानी
कहलाती जल की रानी ।

❑ जयप्रकाश भारती









21. दाँतों की सफ़ाई

ऋषि	दाँत	डाक्टर
दातुन	बुरुश	खोखला

आज ऋषि के दाँत में बहुत दर्द हो रहा था। वह पाठशाला भी नहीं जा सका। ऋषि की माँ उसे दाँतों के डाक्टर के पास ले गई। डाक्टर ने ऋषि के दाँतों को देखा। वे बोले, "ऋषि बेटा, तुम्हारे दाँत तो बहुत गंदे हो रहे हैं। क्या तुम रोज़ दाँत साफ़ नहीं करते?"

ऋषि चुप रहा। माँ बोली, "हाँ, डाक्टर साहब, यह रोज़ दाँत साफ़ नहीं करता। बहुत कहने पर ही दाँत साफ़ करता है।"

डाक्टर बोले, "इसके दाँत में कीड़ा लग गया

अध्यापन संकेत: पाठ में आए नए शब्दों जैसे *ऋषि, दाँत, बुरुश, डाक्टर* आदि को श्यामपट पर लिखकर स्वयं उनका उच्चारण करें और बच्चों से करवाएँ। ऋ का यहाँ पहली बार प्रयोग किया गया है। ऋ श्यामपट पर लिखकर इसका उच्चारण करवाएँ। फिर लिखने का अभ्यास दें। इससे बनने वाले शब्दों, जैसे *ऋषि, ऋतु, ऋचा, ऋण* आदि को श्यामपट या कार्डों पर लिखकर पढ़वाएँ और लिखवाएँ। बच्चों को दाँत साफ़ करने का सही तरीका बताएँ।

है। मैं अभी दवा लगा देता हूँ। दवा से दर्द कम हो जाएगा। पर आप ध्यान रखिएगा यह रोज़ दो बार अवश्य दाँत साफ़ करे।''

माँ बोली, ''दो बार?''

डाक्टर दवा लगाते हुए बोले, '' जी हाँ, दाँत दो बार ही साफ़ करने चाहिए। एक बार सुबह उठने के बाद और दूसरी बार रात को सोने से पहले। बुरुश या दातुन से दाँत साफ़ करवाइए। ऋषि को दूध भी





खूब दीजिए। दूध पीना दाँतों के लिए अच्छा है।''

ऋषि बोल उठा, ''अच्छा डाक्टर साहब, मैं दो बार दाँत साफ़ करूँगा और दूध भी पिया करूँगा। फिर तो मुझे दर्द नहीं होगा?''

डाक्टर बोले, ''नहीं, फिर तुम्हारे दाँत में दर्द नहीं होगा। दाँत साफ़ रखने से दाँत में कीड़ा नहीं लगता। कीड़ा दाँतों को खोखला कर देता है। लो, यह लो दवा। दाँत साफ़ करते समय पानी में डाल लेना।''

ऋषि जाने लगा तो डाक्टर ने कहा, ''सुनो ऋषि, एक बात का और ध्यान रखना। दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए कच्ची सब्ज़ियाँ और फल खाना बहुत

ज़रूरी है। इससे दाँतों की कसरत होती है और दाँत साफ़ रहते हैं।''

माँ बोली, ''मैं इस बात का ज़रूर ध्यान रखूँगी। मैं इसे फल और कच्ची सब्ज़ियाँ खाने को दिया करूँगी।''

दवा लगाने से ऋषि के दाँत का दर्द कुछ ठीक हो गया था। वह खुशी-खुशी वहाँ से चल पड़ा।

बताओ

1. दाँत साफ़ न करने से क्या होता है?
2. डाक्टर ने ऋषि की माँ को क्या सलाह दी?
3. दाँतों को मज़बूत बनाने के लिए क्या-क्या चीज़ें खानी चाहिए?
4. कच्ची सब्ज़ियाँ क्यों खानी चाहिए?

लिखो

ऋ = ऋ ऋ ऋ ऋ

ऋषि ऋतु ऋचा आँख दाँत हँसना आँसू

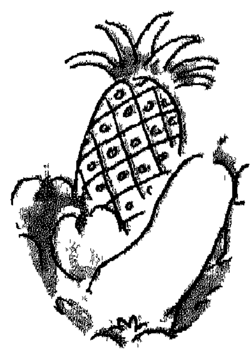
दर्द सर्प बुरुश प्रणाम डाक्टर कंडक्टर

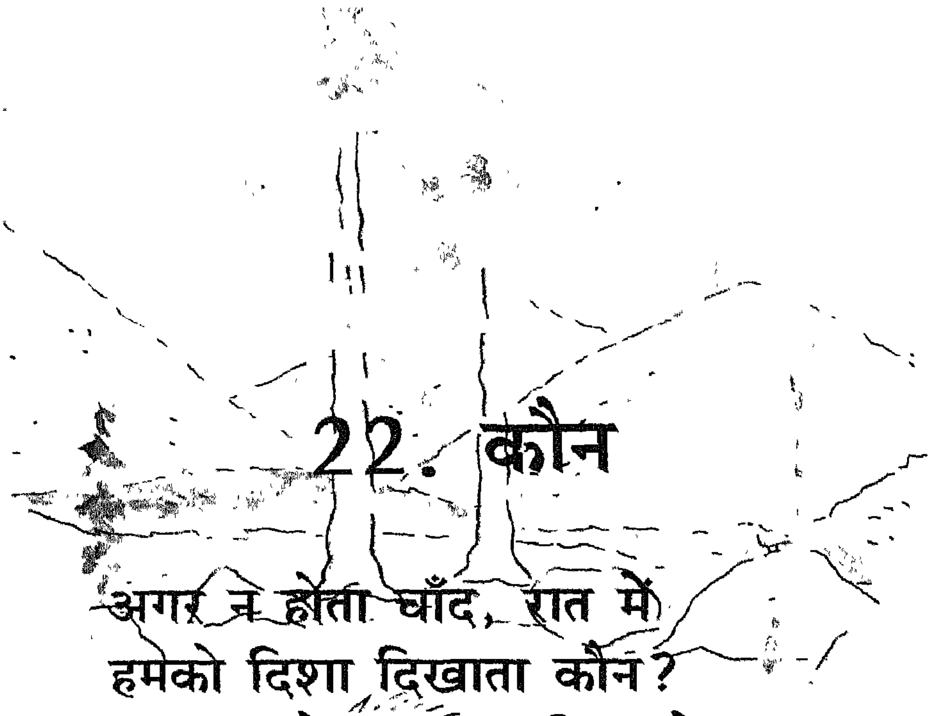
पढ़ो, समझो और लिखो

सुबह	शाम	मज़बूत	कमज़ोर
अच्छा	______	कच्ची	______
धीरे	______	साफ़	______
आगे	______	कम	______
अँधेरा	______	आज	______

करो

नीम या कीकर की टहनी का दातुन बनाओ। उससे दाँत साफ करो।





22. कौन

अगर न होता चाँद, रात में
हमको दिशा दिखाता कौन?
अगर न होता सूरज, दिन को
सोने-सा चमकाता कौन?

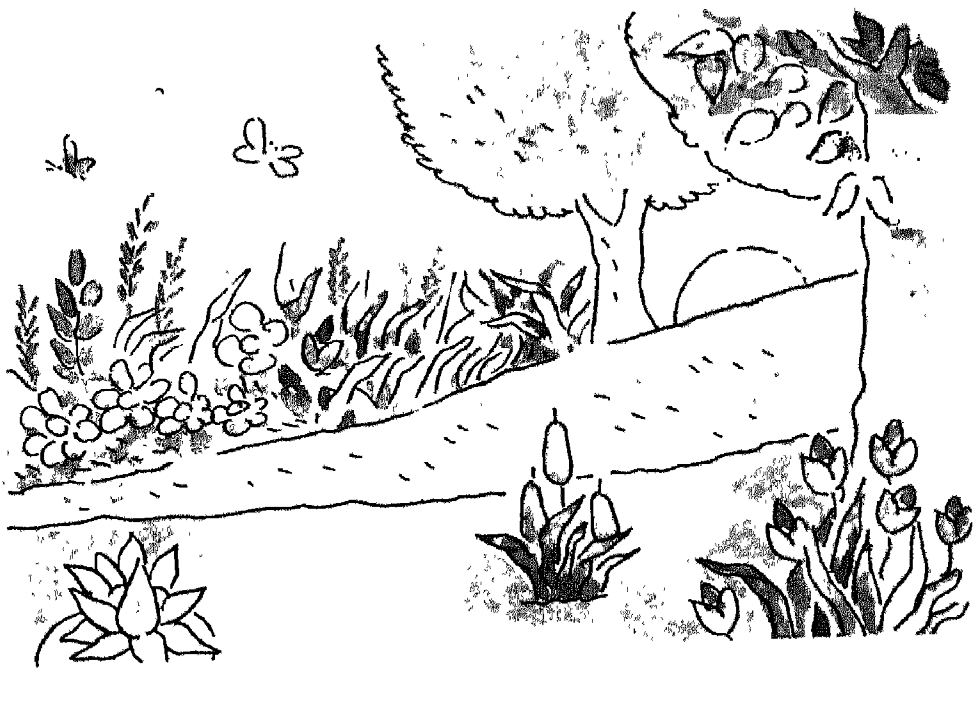
अगर न होतीं निर्मल नदियाँ
जग की प्यास बुझाता कौन?
अगर न होते पर्वत, मीठे
झरने भला बहाता कौन?

अध्यापन संकेत: कविता को गाकर पढ़ें और फिर बच्चे और आप साथ-साथ गाएँ। इस कविता में प्रकृति के उपहारों का उल्लेख किया गया है। *कौन* वाली पंक्तियों के संबंध मे प्रश्न पूछें — रात के समय रास्ता कौन दिखाता है? दिन को सोने-सा कौन चमकाता है? संसार की प्यास कौन बुझाता है? हरियाली कौन फैलाता है? इसी प्रकार अन्य पंक्तियों पर प्रश्न पूछकर कविता का भाव स्पष्ट करें। बच्चों से निकलवाएँ कि सूरज, चाँद, नदियां, पर्वत, पेड़, बादल आदि सभी हमें कुछ न कुछ देकर हमारी मदद करते हैं। हमें भी दूसरों की मदद करनी चाहिए। अंत की दो पंक्तियों में *हम* शब्द बच्चों के लिए आया है।

अगर न होते पेड़ भला फिर
हरियाली फैलाता कौन?
अगर न होते फूल बताओ
खिल-खिलकर मुसकाता कौन?

अगर न होते बादल, नभ में
इंद्रधनुष रच पाता कौन?
अगर न होते हम तो बोलो
ये सब प्रश्न उठाता कौन?

❑ बालस्वरूप राही



पढ़ो और समझो

निर्मल	=	साफ़	नभ	=	आसमान, आकाश
रच	=	बना	जग	=	संसार, दुनिया
पर्वत	=	पहाड़	प्रश्न	=	सवाल

चर्चा करो

1. आकाश में इंद्रधनुष कब दिखाई देता है?
2. पेड़ों से हमें क्या-क्या लाभ हैं?
3. सूर्य, चंद्र और बादल हमें क्या देते हैं?

पढ़ो, समझो और लिखो

पर्वतों से निकलते हैं --- नदियाँ और झरने
पेड़ों से मिलते हैं ---
चाँद देता है ---
सूरज हमें देता है---
बादल देते हैं ---

याद करो

इस कविता को याद करके कक्षा में सुनाओ।

23. हंस किसका

पक्षी	सिद्धार्थ	चहचहाना	घायल	घाव
शरीर	राजमहल	शिकायत	पट्टी	देवदत्त

सुबह का समय था। बगीचे में रंग-बिरंगे फूल खिले थे। पक्षी चहचहा रहे थे।

सिद्धार्थ बगीचे में घूम रहा था। अचानक पक्षियों का चहचहाना बंद हो गया। उनके चीखने की आवाज़ें आने लगीं। जैसे पक्षी डरकर चिल्ला रहे हों। तभी एक हंस उसके पैरों के पास आ गिरा। हंस के शरीर में तीर लगा हुआ था। वह तड़प रहा था।

सिद्धार्थ ने हंस को उठाया। उसने प्यार से हंस

अध्यापन संकेत: नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखें और उनके उच्चारण करवाएँ। *क्ष* और *द्ध* वाले शब्दों को श्यामपट या फ्लैश कार्डों से पढ़वाएँ और शुद्ध उच्चारण करवाएँ। इसी प्रकार *हंस* और *हँस* शब्दों को बार-बार पढ़वाकर अनुस्वार (ं) तथा अनुनासिक (ँ) के उच्चारण-भेद से , अर्थ-भेद को स्पष्ट करें। ध्यान दिलाएँ : हमें जीवों के साथ दया का बरताव करना चाहिए। हमें किसी को सताना नहीं चाहिए।



के पंखों पर हाथ फेरा। धीरे से तीर निकाला।

सिद्धार्थ ने हंस का घाव धोया और पट्टी बाँधी। हंस का तड़पना कुछ कम हो गया। सिद्धार्थ उसे अपनी गोद में लिए रहा।

इतने में उसका भाई देवदत्त दौड़ा आया। वह

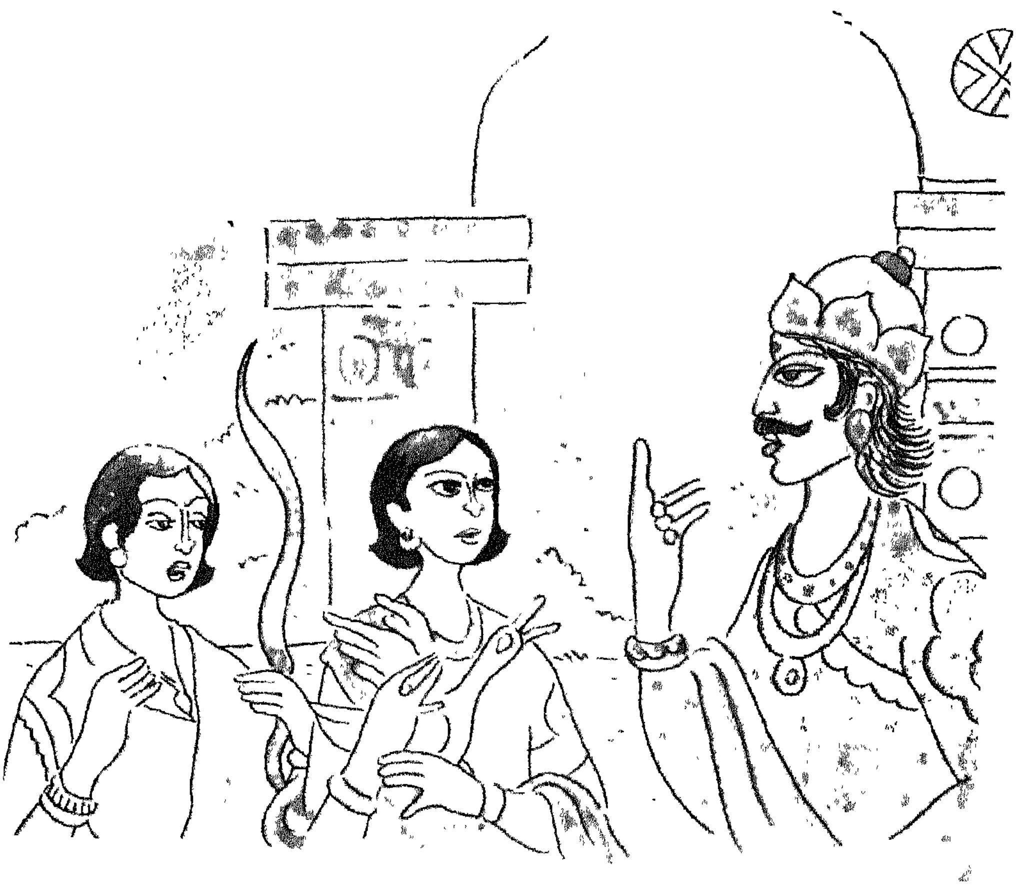
बोला, ''यह हंस मुझे दो। यह मेरा शिकार है।''

सिद्धार्थ ने उत्तर दिया, ''नहीं, यह हंस मेरा है। मैंने इसे बचाया है।''

वह हंस को लेकर राजमहल की ओर चल दिया। देवदत्त भी सिद्धार्थ के पीछे-पीछे चला।

सामने ही राजा खड़े थे। देवदत्त ने उनसे शिकायत की, ''सिद्धार्थ मेरा हंस नहीं दे रहा।''

सिद्धार्थ बोला, ''पिताजी, देवदत्त ने हंस को



तीर मारा था। वह घायल हो गया। मैंने इसे पट्टी बाँधी। अब यह हंस मेरा है।''

देवदत्त बोला, ''नहीं, नहीं। यह मेरा है, मैंने इसे तीर से गिराया है।''

सिद्धार्थ ने कहा, ''लेकिन मैंने इसे बचाया है।''

राजा सोचकर बोले, ''देवदत्त तुम तो इस हंस को मारना चाहते थे। पर सिद्धार्थ ने इसे बचाया है। हंस सिद्धार्थ का ही है।''

बताओ

1. सिद्धार्थ कहाँ घूम रहा था?
2. हंस को क्या हुआ था?
3. सिद्धार्थ ने घायल हंस के लिए क्या किया?
4. देवदत्त ने हंस क्यों माँगा?
5. राजा ने क्या फैसला दिया?

इन वाक्यों को पूरा करो

चहचहाना राजमहल तीर रंग-बिरंगे घायल

1. बगीचे में ________ फूल खिले थे।
2. पक्षियों का ________ बंद हो गया।
3. हंस के शरीर में ________ लगा हुआ था।
4. हंस तीर लगने से ________ हो गया था।
5. वह हंस को लेकर ________ की ओर चल दिया।

समझो और पढ़ो

द् + ध = द्ध = बुद्ध सिद्धार्थ शुद्ध
त् + त = त्त = पत्ता देवदत्त छत्ता
ट् + ट = ट्ट = पट्टी मिट्टी छुट्टी

लिखो

पक्षी	रक्षा	हंस	हँस
सिद्धार्थ	शुद्ध	बुद्ध	देवदत्त

24. होली

पिचकारी श्याम टोली टेसू विक्टर गुलाल

विनोद पाठशाला से आते ही बोला, ''माँ मुझे कुछ पैसे दे दो। मैं बाज़ार से रंग और पिचकारी लाऊँगा।''

माँ बोली, ''बेटा, अभी तो होली में दो दिन हैं। क्या अभी से होली खेलोगे?''

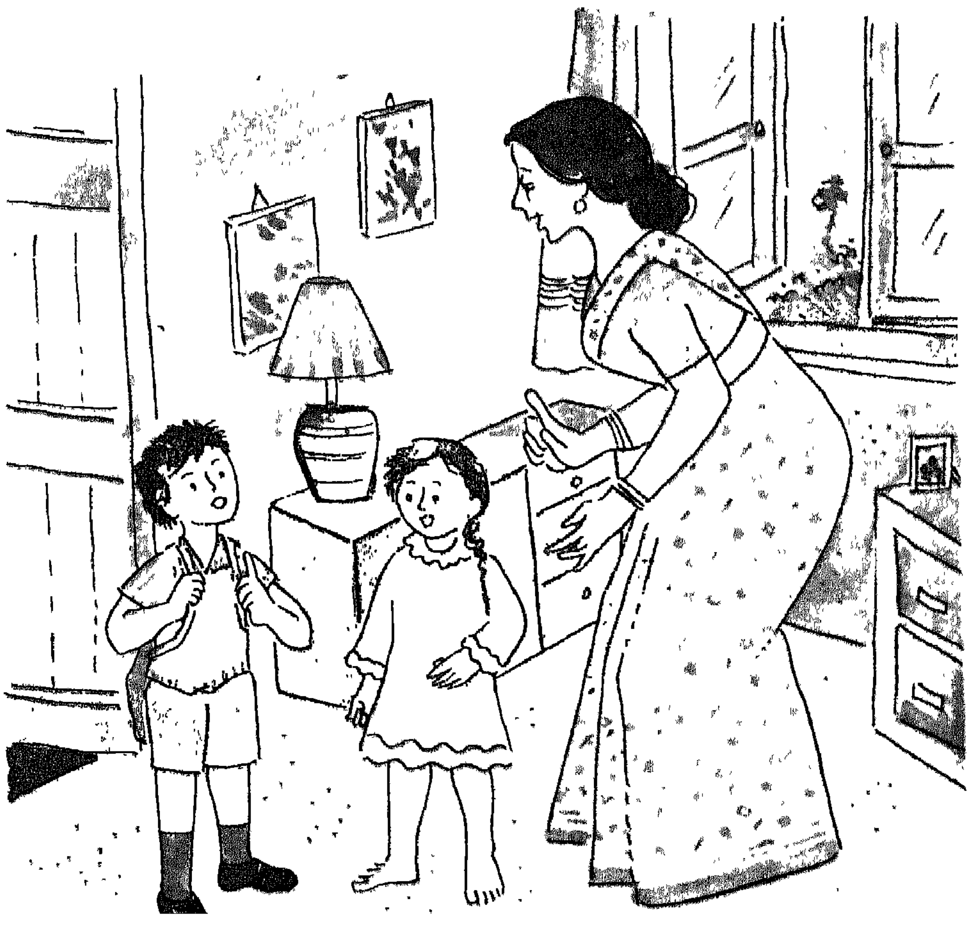
विनोद ने कहा, ''माँ, श्याम कहता था, वह सब मित्रों को लेकर आएगा। मैं भी तैयार रहना चाहता हूँ। मुझे पैसे दे दो।''

माँ ने कहा, ''मैंने टेसू के फूलों से रंग बनाया है। यह लो पैसे, गुलाल और पिचकारी ले आना।''

अध्यापन संकेत: बच्चे होली कैसे मनाते हैं — चर्चा करें। *पिचकारी*, *श्याम*, *टेसू*, *विक्टर*, *गुलाल* — शब्दों का उच्चारण करवाएँ। टेसू के फूलों को उबालकर होली खेलने के लिए रंग बनाया जाता है, बताएँ। बातचीत द्वारा उभारें: होली मेल-मिलाप और भाईचारे का त्योहार है। पाठशाला में होली मनाएँ। बच्चे एक-दूसरे को गुलाल का टीका लगाएँ। होली से संबंधित कथा — *प्रह्लाद और होलिका* सुनाएँ।

माँ ने विनोद को कुछ रुपए दिए। विनोद को रास्ते में अपना एक मित्र मिला। वह भी रंग लेने जा रहा था। उसने रंग खरीदे। विनोद ने पिचकारी और गुलाल खरीदा।

होली का दिन आ गया। बालटी में टेसू का रंग देखकर विनोद खुश हुआ।





विनोद ने पिचकारी में रंग भरा और गीता पर छोड़ दिया। गीता का सारा कुरता पीला हो गया। वह रोने लगी। विनोद ने बहन को प्यार किया और बोला, ''गीता, रोओ मत। देखो, होली पर रंग खेलते हैं। तुम भी मुझ पर रंग डालो। मैं बिलकुल बुरा नहीं मानूँगा।''

गीता ने बालटी से रंग लिया और विनोद पर डाल दिया। दोनों भाई-बहन हँसने लगे। तभी श्याम, सुरजीत, विक्टर, नजमा और सलीम आ गए।



बच्चों ने खूब होली खेली। एक-दूसरे के मुँह पर गुलाल लगाया। गीता ने भी सब पर रंग डाला। सभी बहुत खुश थे।

पिताजी के मित्र भी होली खेलने आए। सब एक-दूसरे के गले मिले। माँ ने सबको मिठाई खिलाई।

बच्चे टोली बनाकर दूसरे मित्रों के साथ होली खेलने चल पड़े।

बताओ

1. विनोद रंग और पिचकारी क्यों खरीदना चाहता था?
2. माँ ने रंग किससे बनाया?
3. गीता क्यों रोने लगी?
4. बच्चों ने होली कैसे मनाई?

लिखो

तुम होली कैसे मनाते हो, पाँच वाक्य लिखो।

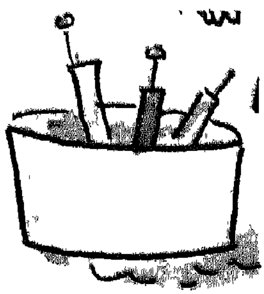
वाक्य बनाओ

मैं	एक-दूसरे के	रुपए दिए।
माँ ने	रंग और पिचकारी	गले मिले।
गीता ने	विनोद को	लाऊँगा।
सब	बालटी से	रंग लिया।

पढ़ो और लिखो

प्यार प्यास सप्ताह समाप्त श्याम अवश्य

तुरंत परंतु जंतु रंग विक्टर डाक्टर



25. ऋतुएँ



सूरज तपता धरती जलती
गरम हवा ज़ोरों से चलती
तन से बहुत पसीना बहता
हाथ सभी के पंखा रहता।

आ रे बादल, काले बादल
गरमी दूर भगा रे बादल
रिमझिम बूँदें बरसा बादल
झम-झम पानी बरसा बादल।

अध्यापन संकेत: इस कविता में *रिमझिम, झम-झम, टप-टप, चम-चम, रंग-रंग, रंग-रंगीली* जैसे शब्दों का प्रयोग हुआ है। इनकी ओर बच्चों का ध्यान दिलाएँ और बार-बार पढ़वाकर यह स्पष्ट करें कि शब्दों के दोहराने से ये पंक्तियाँ सुनने में अधिक अच्छी लगती हैं। हमारे देश की तीन मुख्य ऋतुओं की चर्चा इस कविता में है — *गरमी*, *बरसात* और *सरदी* या *जाड़ा*। तीनों ऋतुओं के बारे में कक्षा के तीन समूह बनाकर बातचीत करें। प्रत्येक समूह अपने निश्चित मौसम की विशेषताएँ बताए और उसी के अनुसार चित्र बनाकर कक्षा में प्रदर्शित करें। इन ऋतुओं से संबंधित कुछ अन्य कविताएँ सुनाएँ और याद करवाएँ।



लो घनघोर घटाएँ छाईं
टप-टप टप-टप बूँदें आईं
बिजली चमक रही अब चम-चम
लगा बरसने पानी झम-झम।

लेकर अपने साथ दिवाली
सरदी आई बड़ी निराली
शाम सवेरे सरदी लगती
पर स्वैटर से है वह भगती।



सरदी जाती गरमी आती
रंग-रंग के फूल खिलाती
रंग-रंगीली होली आती
सबके मन उमंग भर जाती।

रात और दिन हुए बराबर
सोते लोग निकलकर बाहर
सरदी बिलकुल नहीं सताती
सरदी जाती गरमी आती।

पढ़ो और पूरा करो

(क) आ रे बादल, काले बादल
गरमी दूर ________

(ख) लेकर अपने साथ दिवाली
सरदी ________

(ग) रंग-रंगीली होली आती
सबके मन ________ ।

(घ) सरदी बिलकुल नहीं सताती
________ ।

बताओ

1. गरमी में क्या-क्या अच्छा लगता है?
2. सरदी में क्या-क्या होता है?
3. बरसात में क्या-क्या होता है?
4. होली कब आती है?
5. दिवाली कब आती है?

पढ़ो और लिखो

ऋषि ऋतु ऋण ऋचा

पढ़ो और समझो

तपना	=	बहुत गरम होना
तन	=	शरीर
घनघोर घटाएँ	=	घने बादल
उमंग	=	जोश

confused and uncertain as well as very narrow range of vocational aspiration among the students of Mirzapur district in general.

[illegible] : VALUES OF TRIBAL STUDENTS :

For exploring the personal value pattern of tribal students and comparing it with those of backward and upper caste students of the Mirzapur district, Personal Values Questionnaire (Sherry and Verma year) was administered to them. The data was tabulated and analysed for three categories of students separately. Means and S.D.'s for each of the ten values measured by the test were calculated and the results have been presented in Table 30.

It is evident from Table 30 that there are differences in the means on different values of all the three categories of students. Thus all these sets of mean scores were subjected to t-test of significance of difference between means and the obtained t-values have been presented in Table 31.

Table-30: Mean and S.D's of Upper Caste, Backward Caste and Tribal Students on Ten Values

Ten Values	Caste					
	Upper		Backward		Tribal	
	M	S.D.	M	S.D.	M	S.D
[illegible]	[illegible]	1.35	3.93	1.42	4.14	1.58
[illegible]	4.8[illegible]	2.10	4.18	1.82	4.96	1.65
[illegible]	5.30	2.09	5.39	1.50	5.02	1.26
[illegible]	[illegible]	1.75	3.24	1.78	2.69	1.27
[illegible]	3.19	1.64	3.46	1.62	1.27	3.18
[illegible]	3.83	1.87	4.61	1.70	4.24	1.55
[illegible]	[illegible]	1.75	1.70	5.45	1.55	3.14
[illegible]	3.0[illegible]	1.13	4.60	1.34	3.14	1.40
[illegible]	4.56	1.48	4.50	1.58	4.5	1.22
[illegible]	[illegible]	[illegible]	4.80	1.42	4.74	1.84

Table-31: t-values between sets of value mean scores among upper caste, backward caste and tribal students

Groups compared Value	Scheduled Tribe Vs Backward Caste	Scheduled Tribe Vs Upper Caste	Backward Caste Vs Upper Caste
	t value	t value	t value
[illegible]	.616	.345	1.31
[illegible]	2.290*	.160	1.997*
[illegible]	1.252	1.269	.095
[illegible]	1.700	1.467	.563
[illegible]	.941	.100	1.157
[illegible]	1.070	1.327	2.671**
[illegible]	5.760**	.885	8.210**
[illegible]	5.060**	.157	7.099**
[illegible]	.203	.250	.000
[illegible]	.167	1.443	.834

* - Significant at .05 level of confidence

** - Significant at .01 level of confidence.

Table 5 shows that out of 30 t-values only 7 are significant, either at .01 or .05 level of confidence.

It is interesting to note that there is no significant difference on any of the ten values measured between the scheduled tribe and the upper caste high school students of [illegible] district. This shows that sociologically and culturally different categories of students have developed almost similar value pattern in [illegible].

However, when the scheduled tribe students' value pattern is compared with backward caste students' value pattern it is found that they differ significantly on social, hedonistic and power values.

The obtained t-ratio between mean scores of scheduled tribe and backward caste students for social value is 2.29 which is significant at .05 level of confidence. This indicates that scheduled trabe students are having significantly more social values in them in comparison to their counterparts in backward class.

On hedonistic value backward caste students score significantly higher than the scheduled tribe students as the obtained t-value is 5.76 which is significant at .01 level of confidence. It means that as a whole the backward caste students are more after pleasure seeking pursuits than the scheduled tribe students.

The magnitude of power value is also significantly higher among backward caste students than the tribal students. The obtained t-ratio for this value is 5.00 which is sig-

[illegible] .01 level of confidence.

On the basis of the results it can be concluded [illegible] students have more tendency for [illegible] power and [illegible]. In addition to [illegible] of ruling and leading others [illegible] students in comparison [illegible] less desire to pursue hedonistic [illegible] others. In contrast [illegible] students [illegible] social values and tend to be charitable, [illegible] sympathy for the people in general and their [illegible] in particular.

The comparison of the value patterns of backward caste and upper caste students indicates that they [illegible] on four values namely social, knowledge, [illegible] and power.

Social value shows a significantly higher trend [illegible] upper caste students than the backward caste students as the obtained t-ratio is 1.99 which is significant at .05 level of confidence. This shows that upper caste students are having more social value and tend to be more helping, kind, sympathetic and sacrificing for the needy and afflicted in the society, than the backward caste students.

It is [illegible] to note that upper caste students [illegible] lower on knowledge value in comparison [illegible] caste students as the t-value obtained between [illegible] is 2.6/ which is significant at .01 level of confidence. The results [illegible] explained in terms of the

[illegible] students [illegible] about knowledge, academic [illegible] values which they take for granted [illegible] in the present social context. [illegible] towards other values is [illegible] comparison to the knowledge value. On [illegible] other hand probably backward caste students who are [illegible] for upward mobility in socio-economic [illegible] more [illegible] of the importance of knowledge [illegible] and scientific pursuits.

[illegible] hedonistic value it has been [illegible] backward caste students as having more [illegible] than the upper caste and scheduled tribe students as the obtained t-value for this is 8.21 and 5.70 respectively which are significant at .01 level of confidence. This shows that backward caste students are also striving for hedonistic persuits more than upper caste students and scheduled tribe students.

Power value again puts backward caste students on higher side than the upper caste and scheduled tribe high school students as the obtained t-ratio of 7.09 and 5.06 which are significant at .01 level of confidence. This shows that backward caste students are more power hankering in comparison to their counterparts belonging to upper caste and scheduled tribe.

4.3.1: Hierarchy of Values among Schedule tribe, Backward Caste and Upper Caste Students :

Further analysis of the data has been conducted to find out the hierarchy of values among three cate-

gories of the subjects. For this purpose the obtained means for the three categories of the students on 10 values have been put in rank order the results are shown in Table 32.

Table-32: Hierarchy of value orientation among scheduled tribe, backward caste and upper caste students

Scheduled Tribe		Backward Caste		Upper Caste	
Value	Mean	Value	Mean	Value	Mean
(ga) Democratic	5.02	(ja) Hedonistic	5.45	(ga) Democratic	5.36
(kha) Social	4.96	(ga) Democratic	5.38	(tha) Health	5.05
(tha) Health	4.74	(tha) Health	4.80	(kha) Social	4.82
(ta) Prestige	4.50	(jha) Power	4.66	(ta) Prestige	4.56
(chha) Knowledge	4.24	(chha) Knowledge	4.61	(ka) Religious	4.24
(ka) Religious	4.14	(ta) Prestige	4.56	(chha) Knowledge	3.83
(cha) Economic	3.17			(cha) Economic	3.15
(ja) Hedonistic	3.14	(kha) Social	4.17	(gha) Aesthetic	3.07
(jha) Power	3.14	(ka) Religious	3.94	(jha) Power	3.02
(gha) Aesthetic	2.69	(cha) Economic	3.46		
		(gha) Aesthetic	3.23		

Table 32 clearly shows that democratic values ranks first among scheduled tribes and upper caste students whereas

the hedonistic value occupies the top rank among the backward caste students. On the second rank for scheduled tribe students comes the social value, whereas for backward caste and upper caste democratic and health occupy the second position. Among the scheduled tribe and backward caste students health value stands at the third rank whereas at this rank in upper caste students lies the social value. The results indicate clearly that irrespective of caste and creed democratic and health values are the top ranking values.

Scheduled tribe and backward caste students have put aesthetic value at the bottoms but the lowest rank among upper caste students has been occupied by hedonistic value. The rank of hedonistic value among scheduled tribe students is the last but two. This again shows similarity of value pattern among the upper caste and scheduled tribe students.

3.4: PERSONALITY PATTERN OF TRIBAL STUDENTS

For exploring the differential personality traits of the tribal students, High School Personality Questionnaire (HSPQ) was administered to tribal, non-tribal students studying in different High Schools of Mirzapur District. Means and S.D's of their scores were calculated separately castewise and are presented in Table 33.

It is evident from table 33 that the mean scores on different personality factors for different caste categories are not the same. Thus, it was decided to employ

Table: 33 Mean and S.D's of Tribal, Backward Caste and Upper caste High School students on HSPQ

Student Categories	Upper Caste		Backward		Tribals	
Personality factors	M		M		M	
A	9.00	2.82	9.56	3.05	9.00	2.7
B	5.13	2.64	5.13	1.22	6.08	2.02
C	11.24	4.23	11.75	3.16	12.14	3.40
D	9.28	2.70	7.12	2.73	9.06	1.71
E	9.02	2.62	8.12	2.65	8.08	2.72
F	9.28	3.90	9.25	3.42	8.32	3.53
G	11.34	3.48	11.25	3.36	11.61	4.07
H	9.14	3.44	9.37	4.05	9.84	3.49
I	9.99	3.92	12.12	3.34	11.81	3.77
J	9.53	3.42	9.12	3.37	8.79	3.56
Q_1	9.42	3.40	10.41	3.05	10.24	3.52
Q_2	9.34	3.21	10.72	2.96	10.00	3.60
Q_3	9.52	3.58	12.03	1.78	11.13	3.54
Q_4	8.15	2.97	9.28	2.47	8.99	3.58

t -test of significance of difference between means. t-values for each set of mean was calculated and the results have been presented in Table 34.

Table - 34: t-values for different sets of Means among upper caste, backward caste and tribal students on HSPQ.

Groups--- compared / Personality factors	Upper Caste Vs Backward Caste	Upper Caste Vs Tribals	Backward Caste Vs Tribals
	t values	t values	t values
A	1.12	0.0	0.92
B	0.13	0.10	0.13
C	0.86	1.32	0.62
D	3.47**	0.59	2.85**
E	2.09	1.84	0.07
F	.05	1.26	1.24
G	0.16	0.36	0.52
H	0.36	1.08	0.58
I	4.02**	2.66**	1.70
J	0.73	1.16	0.48
Q_1	1.90	1.12	0.24
Q_2	0.76	1.02	1.01
Q_3	6.12**	3.74**	1.43
Q_4	2.63**	1.29	0.43

* Significant at .05 level of confidence.

** Significant at .01 level of confidence.

3.41: Backward Caste Vs Scheduled Tribe :

Table 34 shows that when mean scores obtained on different personality factors were subjected to t-test of significance of difference between means only one t-value (2.85) with respect to Factor-D; phlegmatic temperament Vs Excitability is found to be significant at .01 level of significance. For all other factors the t-values are not significant. This indicates that tribal students of Mirzapur District can be differentiated by their counterparts of Backward Caste studying in the same schools. Only on factor-D. Otherwise, in general they can not be differentiated on the basis of their personality factor scores with backward caste students. On Factor-D scheduled tribe students have significantly higher mean (9.06) than the mean score (7.72) of Backward Caste students. This means that scheduled tribe students are more excitable, impatient, demanding over active and unrestrained in comparison to backward caste students.

3.4.2: Upper Caste Vs Scheduled Tribe :

It is evident from Table 34 that obtained t-values are significant at .01 level of confidence only for Factors I and Q_3. For remaining twelve factors t-values are not significant. This means that on the basis of HSPQ scores these two categories of students can be differentiated only on Factors I and Q_3 as regards all other factors they are almost similar. Tables 33 and 34 show that tribal students are having significantly higher means (11.81 and 11.13) for Factors I and Q_3 in comparison to the mean

scores (9.99 and 9.52) obtained by the upper caste students. This means that tribal students are significantly more tenderminded, sensitive (I+) as well as they are having significantly more high strength of self sentiment, controlled exacting will power (Q_3+) in comparisons to upper caste High School students of this district.

3.4.3: Upper Caste Vs Backward Caste :

When the mean scores obtained by backward and upper caste students on different HSPQ factors were compared it was found that these two groups differed significantly at .01 level of confidence on personality factors- D, I, Q_3 and Q_4, but they do not differ significantly on other 10 factors. From Table 33 and 34 it is evident that upper caste students ares significantly higher than backward caste students on Factor-D i.e. phlegmatic temperament Vs excitability this means that upper caste students are more excitable, impatient, demanding over active and unrestrained in comparison to their counterparts of backward caste. However, on Factors I, Q_3 and Q_4 backward caste students are significantly higher than upper caste students. It shows that backward caste students are more tenderminded, sensitive and dependent (I+), having more high strength of self sentiment and controlled exacting will power (Q_3+), having more ergic tension and fretful (Q_4+) in comparison to upper caste students of this part.

It is interesting to note that upper caste students differ from backward caste students significantly on four personality factors but backward as well as upper caste students differ from tribal students only on two personality factors.

3.4.4: Personality Profiles of Scheduled Tribe, Backward Caste and Upper Caste Students of Mirzapur District:

For studying the variations in the personality-pattern of these three groups of high school students studying in Mirzapur District from the general high school students of Hindi speaking area, raw scores obtained by the subjects were converted into sten-scores withtthe help of norm table (Kapoor et al. 1976). Thereafter the mean sten scores were calculated for all the three different groups separately on all the fourteen personality factors which have been shown in Table 35.

Mean sten-values above 6.4 and below 4.6 are underlined to emphasize that they differ significantly from the general population. (Cattell 1957, Scheir and Cattell 1961).

It is evident from Table 35 that tribal students do not differ significantly on any personality factor from the general high school population and as such they are almost having same pattern of personality as other high school students belonging to all caste and creeds.

The personality profile of backward caste students (Table 35) indicates that they differ significantly on

Table -35 : HSPQ Profiles (in stens) of scheduled tribe, backward caste and upper caste students.

Personality Factors	Scheduled tribe Profile	Backward Caste Profile	Upper Caste Profile
A	5.00	5.45	5.00
B	5.01	5.03	6.03
C	6.01	5.48	5.34
D	5.38	4.91	5.48
E	5.00	5.01	5.41
F	4.70	5.17	5.18
G	5.72	5.54	5.56
H	5.82	5.59	5.56
I	5.58	<u>6.55</u>	4.98
J	4.84	5.00	5.10
O	5.15	5.56	5.12
Q_2	5.00	5.98	5.32
Q_3	5.00	<u>6.05</u>	5.18
Q_4	5.85	5.86	5.56

Note - Values are in S-stens with 5.5 fixed as the general (normal) High School population average. Values above 6.4 are underlined to emphasize that they differ significantly from the population average.

factors I and Q_3 from the general high school students population. This shows that they are significantly more tender minded sensitive and dependent (II), and having more high strength of self sentiment and controlled exacting will power than the general High School student population. These results confirm the results obtained in the previous section.

As far as HSPQ profile of upper caste students studying in Mirzapur District is typically the same as the average of general high school students.

It is interesting to note that the personality profiles of scheduled tribes and upper caste students are almost similar to the general Hindi speaking High School population of the country.

4.0 : <u>CONCLUSIONS</u>

The following conclusions may be drawn from the results and the discussion thereupon.

(1) The tribal sub-divisions of Mirzapur District have a total population of 264395 and out of these only 56 students have been found in Classes IX and XI of eleven Higher Secondary and Intermediate Colleges situated in this area. This shows that very few students of tribal population are coming to High School and Intermediate Colleges.

(2) The most pressing problem areas for tribal students are Psychological-Personal Relations (PPR); Health and Physical Development (HPD) and Courtship, Sex and Marriage (CSM); the least pressing problem areas are curriculum and teaching procedure (CTP), Adjustment to School work (ASW) and Moral and Religious (MR).

(3) Among backward caste students the most acute problem areas are Courtship, Sex and Marriage (CSM), Health and Physical Development (HPD) and Social and Recreational Activities (SRA); the least worrying problem areas for this group are Home and Family (HF), Curriculum and Teaching Procedure (CTP) and Adjustment to School Work (ASW).

(4) In the upper caste student sample Health and Physical Development (HPD) Finances, Living conditions and Employment (FLE) and Social and Recreational Activities (SRA) problem areas topped the list, whereas Curriculum and Teaching Procedure (CTP), Future : Vocational and Educational (FVE) and Personal Psychological Relations (PPR) are least worrying problem areas.

(5) There is no significant difference in the problem faced by the scheduled tribe students and upper caste students.

(6) Backward caste students are having significantly less problems in the problem area of Finance, Living conditions and Employment. Similarly they are significantly less worried about the problem area of Home and Family (HF) than the upper caste students.

(7) Irrespective of caste and creed the students of Mirzapur in general have a very narrow range of awareness of the world of work. They could name only fourteen occupations for which they aspire.

(8) The most aspired occupations for tribal students are service (27.3%), Teacher (17.5%), Engineer (14.8%) or Doctor (10.81%). The least aspired occupations for them were overseer, magistrate, minister and contractor.

(9) 13.51% of tribal students were uncertain about their occupational aspiration and they did not mention any occupation in the questionnaire.

(10) There is no significant difference in the occupational aspiration of scheduled tribe, backward class and upper caste students.

(11) There is no significant difference between the scheduled tribe students and the upper caste students in their value orientation.

(12) Backward caste students are significantly lower in social values in comparison to upper caste and scheduled tribe students.

(13) Backward caste students are significantly higher on knowledge values than upper caste students but there is no significant difference between them and tribal students on the value.

(14) Backward caste students are significantly higher on hedonistic value in comparison to the upper caste and tribal students.

(15) Backward caste students are significantly higher on power value than the upper caste and tribal students.

(16) In the hierarchy of values among tribal students democratic, social and health values topped the list whereas aesthetics power and hedonistic values are at the bottom.

(17) Among backward caste students hedonistic, democratic and health values are at the top of the hierarchy ladder and aesthetic, economic and religious values are at the bottom.

(18) Democratic, Health and Social values are at the top of hierarchy among the upper caste students whereas hedonistic, power and aesthetic values are at the bottome.

(19) Irrespective of caste and creed democratic and health values are the top ranking two values.

IMPLICATIONS :

The findings of the present study have several important educational and social implications for all those who are striving for raising the standard of tribals to bring them up and absorb them in the main stream of the national life. The study has established that the problems, aspirations, value and personality pattern of the tribal students are by and large similar to that of the upper caste and backward caste students of Mirzapur district in particular and to the students of the entire country in general. This implies that the impact of education and socio-cultural-inter communication has bridged the gulf between the so-called traditional differences in the tribal and non-tribal communities. Even in the case of personality traits of temperamental origin like affectothemia and schezothemia (Factor A), intelligence (Factor B), threctia-parmia (Factor H) there is no significant difference between the tribal and non-tribal students. Whatever differences have been found, are in the personality factors which are more environmentally determined and shaped. The findings boldly attack on the notion that tribals are temperamentally different from the non-tribals.

The astonishing similarity between the problems, value systems and occupational vocational aspirations of the educated (even upto higher secondary level) tribals and non-tribal students emphatically put the fact that propogation of education among the tribals is the only solution for uplifting them.

The nature of problems mentioned by the tribals, the narrow range of their vocational aspirations and the emerging value pattern among them stress upon the need for implementing educational and vocational guidance programme in the school system in the tribal areas.

It is distressing to note that only 8.01% of the student population belong to scheduled caste and scheduled tribe in the high and higher secondary schools of this area. This shows that majority of the tribals are not availing the opportunity of education. Probably this is due to the location of the higher secondary schools which are situated far away from the tribal villages. If education is the only weapon to eradicate the socio-cultural disparity between tribals and non-tribals governmental and non-governmental agencies should take immediate steps to open higher secondary schools in the near visinity of the tribal villages.

The study reveals that highest percentage of tribal students are aspiring for teachership. It will be extremely beneficial if Regional Colleges of Education deliberately pick up these tribal students for their four year B.Ed. degree courses so that these students may take up the task of educating their own community in the schools to be opened for them in the near future.

Economic hardship among the tribal students is another problem area which ddserves immediate attention of the government. This issue shoulds be taken immediately

in hand and all possible economic help should be provided to tribal students to raise their educational standards at par with the general population as it has been proved beyond doubt by this study that tribals are not any way intellectually inferior to upper caste and backward caste students.

R E F E R E N C E S

Bose, S. A Socio-psychological Study of the Adolescent Tribal Children of West Bengal Himalayan Regions for purpose of National Integration in relation to Co-curricular Participation, Ph.D. Dissertation Calcutta University, 1963.

Cattell, R.B. Personality and Motivation Structure and Measurement, World Book Co., New York, 1957.

Cattell, R.B. and Cattell, M.D.L. Hand Book for the Jr.-Sr. High School Personality Questionnaire, IPAT, Illinois, 1969.

Cattell, R.B. and Scheier, I.H. The Anxiety Scale Questionnaire. IPAT, Illinois, 1963.

Chandrasekharaiah, K. Educational Problems of Scheduled Castes, NCERT, Project Department of Sociology, Karnataka University, 1969.

Chattopadhyay, P. A Psychological Study of Intelligence of Tribal and Non-tribal Children of Tripura, D.Phil. Dissertation Calcutta University, 1961.

Jaiprakash. A Comparative Study of Urban, Rural and Tribal Higher Secondary Students of Madhya Pradesh with reference to their general Mental Ability and Interest Patterns. I.C.S.S.R Project, Department of Psychology, Sagar University, 1972.

Kapoor, S.D., Srivastava, S.S. and Srivastava, C.N.P. Jr.-Sr. High School Personality Questionnaire, (Hindi Edition). The Psycho Centre, New Delhi, 1980.

Krippner, S. Junior High School Students, Vocational Preferences and their Parents Occupational Levels, Personnel and Guidance Journal, Volume 4, 1963.

Kundu, C.L. Differential Personality Traits in Juvenile Offenders Belonging to Scheduled Tribes and Other Communities, unpublished Ph.D. Edu., Thesis, Rajasthan University, 1966.

Lal, S.K., Educational Progress and Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribes College Students in Rajasthan, ICSSR Project, Department of Socilogy, Jodhpur University, 1974.

Lee, B. and King, P. Vocational Choices of IXth Grade Girls and their Parents Occupational Levels, Vocational Guidance Quarterly, Vol. 12, No.3. 1964.

Mooney, R.L. and Gorden, L.V. The Mooney Problem Check Lists, The Psychological Corporation, New York, 1950.

Nayak, T.B. An Educational Survey on Bastar District, Madhya Pradesh, NCERT Project, Board of Secondary Education, Madhya Pradesh, 1978.

Nayar, P.K.B. The Scheduled Caste and Tribe High School Students in Kerala, ICSSR Project, Department of Sociology, Kerala University, 1975.

Parvathamma, C. The Study of Scheduled Caste and Scheduled Tribe College Students in Karnataka, ICSSR Project, Department of Post Graduate Studies in Sociology, Mysore University, 1974.

Rajgopalan, C. Educational Progress and Problems of Scheduled Castes and Scheduled Tribe Students in Karnataka (High School), ICSSR Project, Department of Sociology, Banglore University, 1974.

Rath, R. and Misra, S.K. The Study of Scheduled Caste and Scheduled Tribe College Students in Orissa, ICSSR Project, Department of Psychology, Utkal University, 1974.

<u>Report of the Educational Commission, 1964-66</u>, Ministry of Education, Government of India, 1966.

Sachchidanand Education Among the Scheduled Castes and Scheduled Tribes in Bihar (School Students), ICSSR Project, A.N.S. Institute of Social Studies Patna, 1974.

Sharma, R.C. A Survey of Education in the Hilly Tribal Area of Jaunsar Bawar, Unpublished Ph.D. Thesis, Meerut University, 1968.

Sherry, G.P. and Verma, L.P. Personal Value Questionnaire, National Psychological Corporation, Agra, 1977.

Singh, T.P., Pandey, B.P., Dubey, G.S. and Yadav, D.R. The Study of Schedule Castes and Schedule Tribe Students of Secondary Schools in U.P. (East), ICSSR Project, Department of Economics, Gandhiyam Institutes, Varanasi, 1974.

Sriwastava, L.R.N. Education and Modernization Among the Munda and Oraon of ..., Unpublished Ph.D. Thesis, Patna University, 1968.

Srivastava, S.S. and Pal, K. Hindi Adaptation of Mooney's Problem Checklist, Department of Education, B.H.U., 1980.

Vyas, N.N. and Bhil, R.S. The Backward Classes, Hostels in Rajasthan : A Study in Socio-cultural Aspects, Tribal Research Institute and Training Centre, Udaipur, 1969.

Vyas, N.N. and Chowdhury, .D. The Dropouts in a Tribal Situation, Tribal Research Institute and Training Centre, Udaipur, 1970.

मूनी समस्या जाँच सूची

Mooney Problem Checklist
Ross L. Mooney

(Hindi Adaptation of Mooney Problem Check-List)

HIGH SCHOOL FORM

By

DR. S.S. SRIVASTAVA, M.A., M.Ed., Ph. D. (Psy. & Ed.) AND DR. K. RAI, M.A., M.Ed., Ph.D.
FACULTY OF EDUCATION, BANARAS HINDU UNIVERSITY, VARANASI.

नाम ____________________

आयु ____________________ छात्र / छात्रा ____________________

कक्षा ____________________ वर्ग ____________________

वैकल्पिक विषय ____________________

स्कूल का नाम ____________________

दिनांक ____________________

निर्देश

यह परीक्षण नहीं है। यह उन समस्याओं की सूची है जिनका सामना आपके आयु की लड़कियों एवं लड़कों को प्राय: करना पड़ता है। ये समस्याएँ स्वास्थ्य, धन, सामाजिक जीवन, घरेलू सम्बन्ध, धर्म, व्यवसाय, स्कूली कार्य आदि से सम्बन्धित हो सकती हैं। इनमें से कई समस्याएँ आपको परेशान करती होंगी और कई नहीं। इस सूची को पढ़ते समय उन समस्याओं को चुनें जो आपको परेशान करती है। ऐसा करने के लिए आपको क्रम से निम्नलिखित तीन कार्य करने होंगे :—

(i) इस सूची को धीरे-धीरे पढ़िये और ज्यों ही आप किसी ऐसी समस्या को पढ़ते/पढ़ती हैं जो आपको परेशान कर रही हैं, उसे रेखांकित कर दे। उदाहरण के लिए, यदि आपका वजन कम है और यह बात आपको परेशान करती है तब इस सूची में "1. कम वजन होना" इस पद को रेखांकित कर दे। इसी प्रकार पूरी सूची को पढ़ते जाइए और उन सभी समस्याओं को रेखांकित कीजिए जो आपको परेशान करती हों।

(ii) जब आप ऊपर बताए गये तरीके से परेशान करने वाली समस्याओं को रेखांकित कर चुकें तब आप पुन: एक बार इन समस्याओं को पढ़ें और इनमें जो समस्या आपको सबसे अधिक परेशान करती हो उसके क्रमांक को वृत्त से घेर दें। उदाहरण के लिये आपने अपने द्वारा रेखांकित सभी समस्याओं को पुन: पढ़ा और आप इस निश्चय पर पहुँचे कि कम वजन का होना आपकी सबसे प्रमुख समस्या है तो इस समस्या के क्रमांक को इस प्रकार वृत्त से घेर दें "(1) कम वजन होना"।

(iii) दूसरा कार्य करने के बाद अन्तिम पृष्ठ पर लिखे गये प्रश्नों के उत्तर लिखिये।

पढ़ाई खतम करने के बाद आप को कौन सा काम या व्यवसाय मिल जायेगा ? ____________________

पहला कार्य : सूची को धीरे धीरे पढ़िये और जैसे ही किसी ऐसी समस्या को पढ़े जो आपको परेशान करती हो उसे रेखांकित कर दें।

१. कम वजन का होना
२. अधिक वजन का होना
३. पर्याप्त शारीरिक व्यायाम का न होना
४. जल्दी जल्दी बीमार पड़ना
५. जल्दी ही थक जाना

६. पैसा इकट्ठा करना सीखने की आवश्यकता
७. बुद्धिमत्ता से पैसा खर्च करना न आना
८. मित्रों की तुलना मे अपने पास कम पैसा होना
९. माता-पिता से पैसा माँगने की आवश्यकता पड़ना
१०. नियमित रूप से जेब खर्च न मिलना

११. लोगों से परिचय करने मे झिझकना
१२. लोगो से मिलने में परेशानी अनुभव करना
१३. सामाजिक कार्य-क्रमो मे सहज ही बेचैनी अनुभव करना
१४. बातचीत चालू या जारी रखने में कठिनाई अनुभव करना
१५. अपने सामाजिक शिष्टाचार के बारे में दुबिधा मे रहना

१६. लड़कों/लड़कियो से मिलने जुलने जाना
१७. लड़कों/लड़कियो से मिलने जुलने में परेशानी अनुभव होना
१८. लडकों/लडकियो से ठीक से न मिल पाना
१९. लड़कों/लड़कियों के लिए आकर्षक न होना
२०. लड़कों/लड़कियो से मिलने जुलने की अनुमति न पाना

२१. बहस (तर्क वितर्क) मे पड़ जाना
२२ लोगो की भावनाओ को ठेस पहुँचा देना
२३. लोगों की चर्चा या बात-चीत का विषय बन जाना
२४. दूसरो द्वारा अपना मजाक उड़ाया जाना
२५. दूसरों के द्वारा पूछा न जाना

२६. जल्दी गुस्सा आना
२७. बात को अत्यन्त गंभीरता पूर्वक लेना
२८. घबराना
२९. शीघ्र उत्तेजित हो जाना
३०. चिन्ता या फिक्र करना

३१. धर्मोपासना (मंदिर, मस्जिद, चर्च आदि) के स्थानो पर अक्सर न जाना
३२. अपने आदर्शों के अनुसार न रह पाना
३३. 'ईश्वर' के विषय मे उलझन
३४ धर्म के बारे मे बताई गई कुछ बातो पर संदेह करना
३५. अपने कुछ धार्मिक विश्वासो के बारे में स्पष्ट न होना

३६. परिवार के किसी एक के बारे में चिन्तित रहना
३७. परिवार मे बीमारी
३८. माता-पिता का मेरे लिए बहुत अधिक त्याग करना
३९. माता-पिता का मुझे ठीक से न समझना
४०. घर पर अभी भी छोटा बच्चा समझा जाना

४१. इच्छित व्यवसाय को न पा सकना
४२. व्यावसायिक चुनाव के बारे में अपनी समझदारी पर संदेह करना
४३. अपनी व्यावसायिक क्षमता जानने की आवश्यकता
४४. अपने पसन्द का व्यवसाय मिलेगा इस पर संदेह करना
४५. स्कूल की पढाई के बाद क्या करें इस विषय पर मार्गदर्शन की आवश्यकता अनुभव करना

४६. स्कूल से बहुत अनुपस्थित रहना
४७. स्कूल मे एक कक्षा पिछड़ जाना
४८. एक नये स्कूल मे समायोजित होना
४९. गलत विषयो को चुन लेना
५०. पढ़ाई मे पर्याप्त समय न दे पाना

५१. घर पर पढाई के लिए उपयुक्त स्थान का न होना
५२. मुझे स्कूल मे क्या करना है यह परिवार के लोगो द्वारा न समझा जाना
५३. ऐसे विषयो को पढने की इच्छा करना जिनकी पढाने की व्यवस्था स्कूल मे नहीं है
५४. ऐसे विषयो को लेने के लिए मजबूर होना जो मुझे पसन्द नही है
५५. दैनिक जीवन से असबंधित विषय

५६. बार बार सर मे दर्द होना
५७. कमजोर आँखें
५८. भोजन के लिए अक्सर भूख न लगना
५९. उपयुक्त खाना न खाना
६०. धीरे धीरे वजन का कम होना

६१. अपने पास अच्छे कपडे बहुत कम होना
६२. मनोरंजन के लिए बहुत कम पैसे होना
६३. रुपये पैसे के लिए परिवार का चिन्तित रहना
६४. एक एक पैसा बहुत सावधानी से खर्च करने की आवश्यकता पडना
६५. पैसा कमाने के लिये स्कूल छोडने की आवश्यकता पडना

६६. मनोरंजन के लिए पर्याप्त समय न होना
६७. बहुत सी ऐसी चीजों का आनन्द नही ले पाना जो दूसरे लेते है
६८. जो मुझे पसंद है उसे पढने का अवसर न मिलना
६९. बाहर निकलने व प्रकृति का आनन्द लेने के लिए बहुत कम अवसर मिलना
७०. अपने लिए अधिक समय पाने की इच्छा

७१. लड़कों/लड़कियों से मिलने जुलने के लिए उपयुक्त स्थानो की कमी
७२. लडको/लडकियों से निश्चित दिन या समय पर मिलने पर उनका मन बहलाव कैसे किया जाय यह न जानना
७३. लडको/लडकियो से बहुत कम आमत्रण मिलना
७४. लडको/लडकियो से घनिष्ट संबंध बढाने मे भय का होना
७५. यौन एवं वासना सम्बन्धी बातचीत करने मे शर्माना

७६. अधिक प्रसन्न चित्त व्यक्तित्व की चाह
७७. अन्य लोगों के साथ अच्छा सम्बन्ध निर्वाह न कर पाना
७८. दूसरो पर मेरा प्रभाव कैसा पडता है, इससे चिन्तित रहना
७९. अन्य लोगों द्वारा जल्द प्रभावित हो जाना
८०. नेतृत्व की क्षमता की कमी

८१. दिवा-स्वप्न देखना
८२. लापरवाह होना
८३. चीजों को भूलना
८४. आलसी होना
८५. चीजो को अधिक गभीरता से न लेना

८६. माता-पिता का मुझे पूजा पाठ करने के लिए बाध्य करना
८७. उपासना-गृहो की धार्मिक क्रियाओं को ना पसंद करना
८८. उपासना और प्रार्थना के मूल्यों पर संदेह करना
८९. ईश्वर के नजदीक होने का अनुभव करने की इच्छा
९०. जातीय एवं धार्मिक पूर्वाग्रह से प्रभावित होना

९१. माता-पिता के साथ न रहना
९२. माता-पिता का अलग होना या सम्बन्ध विच्छेद (तलाक)
९३. पिता का जीवित न होना
९४. माता या पिता के साथ आमोद-प्रमोद का न होना
९५. मेरा कोई अपना घर नही ऐसा अनुभव करना

९६. अपने लिए कोई व्यवसाय निश्चित करने की आवश्यकता होना
९७. व्यवसायो के सम्बन्ध मे और अधिक जानकारी की आवश्यकता होना
९८. स्कूल से निकलकर कोई कामकाज करने के लिए छटपटाना
९९. स्कूल कार्य मेरे लिए लाभदायक है ऐसा अनुभव न करना
१००. अपने पैरो पर खडे होने की इच्छा

१०१ किताबो मे सचमुच रुचि न लेना
१०२ अपने विचारो को शब्दों मे ठीक से व्यक्त न कर पाना
१०३. शब्द भडार का बहुत सीमित होना
१०४. मौखिक विवरण देने मे कठिनाई
१०५. कक्षा मे विचार विमर्श के समय बोलने से डरना

१०६. पाठ्यपुस्तकों को समझने में बहुत कठिनाई होना
१०७. शिक्षको को समझने में बहुत कठिनाई होना
१०८. प्रायः कक्षा में बेचैनी का अनुभव करना
१०९. कक्षा में बहुत कम स्वतन्त्रता का होना
११०. कक्षा मे पर्याप्त विचार-विमर्श एवं परिचर्चा का अभाव

१११. उतना सबल और स्वस्थ्य न होना जितना मुझे होना चाहिये
११२. पर्याप्त खुली हवा व धूप का न मिलना
११३. पर्याप्त निद्रा का अभाव
११४. प्रायः सर्दी-जुकाम का हो जाना
११५. अक्सर गले में खराश हो जाना

११६. अपने लिए कुछ पैसा कमाने की चाह
११७. अपने लिए और चीजें खरीदने की चाह
११८. हाईस्कूल के बाद शिक्षा के लिए धन की आवश्यकता
११९ अल्प कालिक नौकरी पाने की आवश्यकता
१२०. छुट्टियों में काम पाने की आवश्यकता

१२१. खाली समय मे कोई रुचिकर काम का न होना
१२२. प्रदर्शनी एवं फिल्म आदि देखने के लिए बहुत कम अवसर मिलना
१२३. रेडियो तथा टेलीविजन का आनन्द लेने का बहुत कम अवसर मिलना
१२४. कोई शौकिया कार्य (हॉबी) करने का कम अवसर मिलना
१२५. छुट्टियों मे किसी भी रोचक कार्य का न होना

१२६. किसी प्रेम सम्बन्ध में निराश होना
१२७. बालिका मित्र
१२८. बालक मित्र
१२९. यह निश्चय करना कि क्या यह प्रेम सम्बन्ध चलता रहे ?
१३०. मुझे कोई उपयुक्त जीवन साथी मिलेगा क्या ?

१३१. मित्रता करने में सुस्त होना
१३२. डरपोक या शर्मीला/शर्मीली होना
१३३. बहुत आसानी से भावनाओ पर ठेस अनुभव करना
१३४. बहुत जल्दी झेंपना एवं लज्जित होना
१३५. हीनता का अनुभव करना

१३६. तुनकमिजाज एवं अचानक उदास होना
१३७. चीजों के बारे तय करने मे कठिनाई का अनुभव
१३८. गलती न हो जाय इस भाव से डरते रहना
१३९. बहुत आसानी से हतोत्साहित होना
१४०. कभी-कभी ऐसा सोचना कि मै पैदा ही न हुआ होता

१४१. गलत और सही में भेद कैसे करें ?
१४२. कुछ नैतिक प्रश्नो पर अस्पष्ट रहना
१४३. माता-पिता का पुराने विचार धारा का होना
१४४. धर्म ग्रन्थो के बारे मे और अधिक समझने की इच्छा
१४५. मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है इस पर सोच विचार करना

१४६. माता-पिता द्वारा अपनी आलोचना होना
१४७. माता-पिता का किसी भाई या बहन के साथ पक्षपात करना
१४८. माता
१४९. पिता
१५०. परिवार मे मृत्यु

१५१. अगले शैक्षिक सत्र (सेशन) में सर्वोत्तम विषयो का चुनाव करना
१५२. कालिज में प्रवेश पाने के लिए सर्वोत्तम विषयो का चुनाव
१५३. किसी नौकरी की तैयारी के लिए सर्वोत्तम विषयों का चुनाव
१५४. किसी व्यवसाय के लिए आवश्यक प्रशिक्षण प्राप्त करना
१५५. एक धन्धा सीखने की इच्छा

१५६. समय पर पढ़ाई पूरा न कर पाना
१५७. स्कूल को पसन्द न करना
१५८ कुछ विषयो मे रुचि का न होना
१५९. अपनी पढाई मे मन स्थिर न रख पाना
१६०. ठीक एवं प्रभावकारी ढंग से अध्ययन करना न आना

१६१. पुस्तकालय मे पर्याप्त संख्या मे अच्छी पुस्तकों का न होना
१६२. कुछ विषयो मे बहुत अधिक काम करना पडना
१६३. कुछ विषयो को जिन्हे मै लेना चाहता हूँ, लेने की अनुमति न मिलना
१६४. किसी एक शिक्षक के साथ अच्छा सम्बन्ध निर्वाह न कर पाना
१६५. स्कूल में बहुत सख्ती है

१६६. रूप रंग का अच्छा न होना या चर्म रोग का होना
१६७. बुरी भगिमा (पोस्चर) का होना
१६८. बहुत अधिक नाटा होना
१६९. बहुत अधिक लम्बा होना
१७०. शारीरिक दृष्टि से बहुत आकर्षक न होना

१७१. स्कूल से निवास स्थान (घर या डेरा) का बहुत दूर होना
१७२. हम लोगो के साथ रिश्तेदारो का रहना
१७३. अपने लिये अलग कमरे का न होना
१७४. अपने मित्रो के स्वागत एव मनोरजन के लिये जगह की कमी
१७५. परिवार मे मोटर-गाडी का न होना

१७६. पारिवारिक मोटर गाड़ी / स्कूटर / साइकिल आदि चलाने के लिये अनुमति न मिलना
१७७. जिन लोगो को मैं पसन्द करता / करती हू उनके साथ कही जाने की अनुमति न मिलना
१७८. रात को घर से बाहर जाने की अनुमति अवसर न मिलना
१७९. विद्यार्थियो के कार्यक्रमो मे बहुत कम भाग लेना
१८०. सामाजिक जीवन मे बहुत कम भाग लेना

१८१. किसी से प्रेम होना
१८२. ऐसे किसी से प्रेम करना जो मुझसे प्रेम नही करता / करती
१८३. यह निश्चय करना कि मुझे प्यार हो गया है
१८४. इसका निश्चय करना कि क्या वैवाहिक सम्बन्ध मे बंध जायें
१८५. विवाह-सम्बन्ध के बारे मे सलाह की आवश्यकता

१८६. लोगों द्वारा अपनी आलोचना होना
१८७. अपने को बहुत बनने वाला या 'घमण्डी' कहा जाना
१८८. दूसरों द्वारा 'घूरा' जाना
१८९. किसी बात मे पूछा न जाना
१९०. बहुत अकेलापन अनुभव करना

१९१. अकेले रह जाने का डर
१९२. बहुत जल्दी रो देना
१९३. हाथ मे लिये गए बहुत से कामो मे असफल होना
१९४. ऐसे अधिकतर कार्योका मूल्य न समझ पाना, जिन्है मै करता/करती हूँ
१९५. अधिकतर दुःखी रहना

१९६. की गई गलतियो को भुला न पाना
१९७. स्वर्ग एवं नरक के विचार से चिंतित रहना
१९८. ईश्वर मुझे सजा देंगे इस भावना से डरते रहना
१९९. दूसरे बच्चे जो खराब काम करते है उनसे परेशान रहना
२००. कक्षाओं मे बेईमानी करने के लिए ललचाना

२०१. घर का इकलौता सन्तान होना
२०२. किसी भाई या बहन के साथ न पटना
२०३. मेरे विषय मे माता-पिता का बहुत से निर्णय ले लेना
२०४. माता-पिता का मुझपर विश्वास न होना
२०५. घर पर और अधिक स्वतंत्रता की आवश्यकता अनुभव करना

२०६. यह निश्चय करना कि कालेज में प्रवेश लें या नहीं
२०७. कालेजो के बारे मे और अधिक जानकारी की आवश्यकता
२०८. किसी एक कालेज में प्रवेश लेने के निर्णय की आवश्यकता
२०९. कालेज में मुझे प्रवेश नही मिलेगा यही सोचकर डरना
२१०. मुझे भय है कि कालेज में मुझे कभी प्रवेश नही मिलेगा

२११. गणित में कठिनाई
२१२. लिखने में कमजोर
२१३. वर्तनी (स्पेलिंग) या व्याकरण में कमजोर
२१४. प्रारूप बनाने या नोट लिखने मे कठिनाई
२१५. कागजों एवं रिपोर्टों को व्यवस्थित करने में कठिनाई

२१६. अत्यन्त नीरस कक्षाएँ
२१७. शिक्षको में व्यक्तित्व (परसनालटी) की कमी
२१८. शिक्षकों में छात्रों के प्रति रूचि की कमी
२१९. शिक्षकों का छात्रों से मित्रतापूर्ण व्यवहार न करना
२२०. शिक्षकों से व्यक्तिगत सहायता न प्राप्त कर पाना

२२१. सुनने में कठिनाई
२२२. बोलने में कठिनाई (हकलाना आदि)
२२३. एलर्जी होना (पराग ज्वर, दमा, पित्ती आदि)
२२४. ग्रन्थि सम्बन्धी विकार (थाइरायड, घाँटी आदि)
२२५. मासिक धर्म एवं स्त्री रोग सम्बन्धी कष्ट

२२६. माता-पिता का बहुत अधिक परिश्रम करना
२२७. घर मे कुछ सुविधाओ का न होना
२२८. पास पडोस के लोगो को पसंद न करना
२२९. किसी दूसरे परिवेश या पडोस मे रहने की इच्छा
२३०. ऐसे घर मे रहता/रहती हूँ कि उससे लाज लगती है

२३१. नृत्य सीखने की चाह
२३२. आदर-सत्कार एवं मनोरंजन करने की कला सीखने की चाह
२३३. सास्कृतिक दृष्टि से अपने को और अच्छा बनाने की इच्छा
२३४. अपने रूप-रंग को और अच्छा बनाने की इच्छा
२३५. अपने कपडों व चीजो के बारे में बहुत लापरवाह होना

२३६. ऐसे किसी से दोस्ती करना जिसे परिवार के लोग स्वीकार नही करेंगे
२३७. जिससे मै प्यार करता/करती हूँ उसे खो देने का भय
२३८. अपने प्रेम सबन्ध का टूट जाना
२३९. किसी लडके/लडकी से कितना घनिष्ट संबन्ध रखना चाहिये इसपर सोचना
२४०. अपना विवाह कभी होगा भी ऐसा सोचना

२४१ और अधिक लोकप्रिय होने की इच्छा
२४२ किसी व्यक्ति विशेष को नापसंद करना
२४३. किसी एक के द्वारा नापसंद किया जाना।
२४४. किसी ऐसे व्यक्ति से बचना जिसे मैं नही चाहता/चाहती
२४५. कभी-कभी बच्चों जैसा या अपरिपक्व व्यवहार करना

२४६. जिद्दी या हठी होना
२४७ बहुत बढा-चढा कर कहने की आदत
२४८. दुर्भाग्य का होना
२४९. आमोद-प्रमोद का न होना
२५०. आत्मविश्वास की कमी

२५१. बेमतलब झूठ बोलना
२५२. गाली बकना, गन्दी कहानी कहना
२५३ किसी बुरी आदत का होना
२५४. कोई बुरी आदत न छोड़ पाना
२५५. आत्म-नियंत्रण की कमी

२५६. मेरे और माता-पिता के विचारों में संघर्ष
२५७. माता-पिता को पलट कर जवाब देना
२५८. माता-पिता का मुझसे बहुत अधिक आशा करना
२५९. प्यार व स्नेह की चाह
२६०. भिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि की इच्छा करना

२६१. किसी रोजगार के लिए प्रशिक्षण की कमी
२६२. कार्य अनुभव की कमी।
२६३. स्नातक डिग्री के बाद बेरोजगारी का भय
२६४. किसी अच्छे व्यवसाय को कर सकने की अपनी क्षमता पर संदेह करना।
२६५. रोजगार की तलाश किस तरह करनी चाहिये यह न जानना

२६६. पढना अच्छा नही लगना
२६७. कमजोर स्मृति या याद नही रहना
२६८. वाचन (रीडिंग) मे कमजोर
२६९. परीक्षा मे श्रेणी (डिविजन) की चिन्ता
`७०. परीक्षा के सम्बन्ध मे चिन्ता करना

२७१ शिक्षकों या विद्यार्थियो की भावनाओं का ख्याल नही करना
२७२. शिक्षक जो उपदेश देते है उनका खुद पालन नही करते
२७३. अधिकाश अध्यापको का न्यून योग्यता वाला होना
२७४. परीक्षा के प्राप्तांक व्यक्ति की योग्यता का उचित माप नही है
२७५. अनुचित एवं पक्षपातपूर्ण परीक्षा

२७६. कमजोर दाँत
२७७. नाक संबंधी रोग
२७८. धूम्रपान
२७९. पैरो मे गडबडी
२८०. शारीरिक दोष से चिन्तित रहना

२८१. रुपया उधार लेना
२८२. स्कूल के समय के पश्चात् बाहर अधिक काम करना
२८३. अपने अधिकतर खर्चो के लिए काम करना
२८४. अपने काम के लिए कम पैसा मिलना
२८५. अपनी वर्तमान नौकरी या व्यवसाय को नापसंद करना

२८६. मै जो करना चाहता हूँ उसे प्राप्त करने की बहुत कम संभावना
२८७. खेल-कूद के लिए बहुत कम अवसर मिलना
२८८. घर के आस-पास खेल-कूद के लिए अच्छे स्थान का न होना
२८९. खेल कूद सबधी कौशलो की कमी
२९०. अपने अवकाश के समय का अच्छा उपयोग न करना

२९१. यौन विषयो पर बहुत अधिक सोचना
२९२. सही यौन व्यवहार के विषय मे चिन्तित रहना
२९३. यौन इच्छाओ पर नियंत्रण करने में कठिनाई
२९४. यौन रोगो के सम्बन्ध मे चिन्तित रहना
२९५. यौन-विषय सम्बन्धी जानकारी की आवश्यकता होना

२९६. बहुत अधिक ईर्ष्यालु या प्रतिस्पर्धी होना
२९७. बिना सोचे विचारे बोलना या करना
२९८. कोई मुझे समझ नही पाता ऐसा अनुभव करना
२९९. अपनी परेशानियो के बारे मे कहने मे कठिनाई अनुभव करना
३००. ऐसा कोई नही है जिससे अपनी परेशानियो के बारे मे कह सकूं

३०१. बहुत अधिक व्यक्तिगत समस्याओं का होना
३०२. कष्ट दायक बचपन की याद आना
३०३. बुरे सपनो से परेशान रहना
३०४. पागलपन के विचारो से कभी-कभी परेशान रहना
३०५. आत्महत्या का विचार आना

३१६. मुझे वास्तव मे क्या चाहिए यह न जानना
३१७. भविष्य के लिए आगे योजना बनाने की आवश्यकता
३१८. मेरी योजनाओं का परिवार द्वारा विरोध होना
३१९. भविष्य के सम्बन्ध मे भय
३२०. सैनिक सेवाओ के विषय मे चिन्ता

३०६. कभी-कभी उतना ईमानदार न हो पाना जितना कि मुझे होना चाहिए
३०७. परेशानियों में पड़ जाना
३०८. प्रलोभनो मे फँस जाना
३०९. मन मे दुःख या पाप-भावना से परेशान रहना
३१०. मैंने जो कुछ नही किया है उसके लिए सजा पाना

३२१. परीक्षा मे निम्न श्रेणी (डिविजन) प्राप्त होना
३२२. कुछ विषयों में अच्छा नही कर पाना
३२३. पर्याप्त चुस्त न होना
३२४. स्कूल के कार्य में फेल होने का डर
३२५. स्कूल छोड़ने की इच्छा करना

३११. घर पर मित्रों का स्वागत न किया जाना
३१२. परिवारिक कलह का होना
३१३. कुछ समस्याओं के बारे में घर पर बातचीत न कर पाना
३१४. घर छोड देने की इच्छा
३१५. माता-पिता को सब कुछ न बताना

३२६. स्कूल मे कार्यक्रमो की व्यवस्था का बहुत खराब होना
३२७. छात्रो को पर्याप्त जिम्मेदारियाँ नही दिया जाना
३२८. स्कूली भावना का अभाव ।
३२९. टिफिन की घटी का बहुत छोटा होना
३३०. स्कूल मे खराब सामूहिक कार्यक्रम एवं सभायें

दूसरा कार्य : जिन समस्याओ को आपने रेखांकित किया है उन्हे दुबारा पढिये और उन समस्याओं के क्रमाकों को घेर दें जो आपको सबसे अधिक सता रही हैं या परेशान कर रही है ।

तृतीय पद : निम्नलिखित चार प्रश्नो के उत्तर दीजिए ।

प्रश्न

१. क्या आप सोचते है कि सूची मे दी गई समस्याओ मे से जिन वाक्यो के क्रमांकों को आपने वृत्त से घेर दिया वे आपकी समस्याओं का पूर्ण चित्र उपस्थित करते है ? हाँ··· नही··· । अपनी समस्याओ का पूर्ण वर्णन करने के लिए आप अगर कुछ और जोडना चाहते हैं तो नीचे लिखें—

२. आप अपनी भाषा मे अपनी मुख्य समस्याओ को संक्षेप में व्यक्त करें—

३. क्या स्कूल में आप इस प्रकार के और अधिक अवसर चाहेंगे जिससे आप अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के संबन्ध में लिख सकें, सोच सकें या बात-चीत कर सकें ? हां···नहीं···,

यह प्रश्न आप को कैसा लगा समझाकर लिखें—

४. क्या आप कुछ समस्याओं के संबंध में जिसे इस सूची में आपने अंकित किया है, अवसर मिलने पर किसी से बात करना चाहेंगे ? 'हां'' नही.. । यदि हां, तो क्या आप किसी व्यक्ति विशेष (व्यक्तियों) से बात करना चाहते है ?···हां···नही ।

व्यावसायिक प्रश्नावली

नाम --

जाति --

कक्षा ----------------------------- आयु ----------------------------

विद्यालय --x---------------------------

--x--

1- पढ़ाई खतम करने के बाद आप कौन सा व्यवसाय (काम-धंधा) करना चाहते हैं या क्या बनना चाहते हैं ? --------------------------------------

----

2- पढ़ाई खतम करने के बाद आ को कौन सा काम या व्यवसाय मिल जायेगा?

व्यावसायिक प्रश्नावली

नाम --

जाति --

कक्षा ----------------------------- आयु ----------------------------

विद्यालय --x---------------------------

---------------------x------------------------------x-------------------------

1- पढ़ाई खतम करने के बाद आप कौन सा व्यवसाय (काम-धंधा) करना चाहते हैं या क्या बनना चाहते हैं ? --------------------------------------

----

2- पढ़ाई खतम करने के बाद आप को कौन सा काम या व्यवसाय मिल जायेगा ? --

गोपनीय

व्यक्तिगत मूल्य प्रश्नावली (P V Q)

डा० (श्रीमती) जी० पी० शैरी
एम. ए., बी. टी., ए. आई. ई. (लन्दन), पी-एच. डी.
प्राचार्या
महिला प्रशिक्षण महाविद्यालय
दयालबाग, आगरा-५

डा० आर० पी० वर्मा
एम ए., एम. एस-सी, एम एड., पी-एच. डी.
रीडर, शिक्षा विभाग
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय
वाराणसी

द्वारा निर्मित एव मानकीकृत

कृपया निम्नलिखित संगत विवरण दीजिये

१. नाम .... २. आयु ....
३. लिंग .... ४. जाति ....
५. धर्म .... ६. ग्रामीण/शहरी ....
७. विवाहित/अविवाहित .... ८ शैक्षिक योग्यता ....
९. व्यवसाय .... १० मासिक आय ....

फलांकन तालिका

पृष्ठ	क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ
४										
५										
६										
७										
८										
योग										

National Psychological Corporation
4/230 Kacheri Ghat, Agra–282004 (INDIA)

निर्देश

कुछ परिस्थितियो मे आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेंगी यह जानने के लिए यह **प्रश्नावली तैयार की गई है। प्रत्येक** प्रश्न के तीन उत्तर दिये गये है। इन उत्तरो को अपनी **पसन्द** के अनुसार नीचे दिये गये ढग से आप कृपया क्रम (order) प्रदान करें।

किसी प्रश्न के :

१—(अ) जिस उत्तर को आप **सबसे अधिक पसन्द** करते/करती हैं उसके सामने कोष्ठक मे आप सही (√) का चिन्ह लगा दीजिए।

(ब) जिस उत्तर को आप **सबसे कम पसन्द** करते/करती है उसके सामने कोष्ठक मे (×) का चिन्ह लगा दीजिए।

(स) अब जो उत्तर बच रहे उसके सामने कोई चिन्ह न लगाइये।

(द) केवल एक उत्तर के सामने सही (√) का चिन्ह और एक उत्तर के सामने (×) का चिन्ह लगाना है।

उदाहरण—नीचे दिये उदाहरण को ध्यान से पढिये।

प्रश्न	उत्तर के लिये स्थान
आपके विचार मे आवश्यकता से अधिक धन का अच्छा उपयोग क्या है ?	
(च) और धन कमाने के लिए पूंजी के रूप मे लगाना	च (×)
(ख) दीन दुखियो को दान देना	ख (√)
(ज) जीवन के भौतिक सुखो और आरामो को प्राप्त करने के लिए खर्च करना।	ज ( )

इस उदाहरण मे उत्तरदाता ने उत्तर (ख) **सबसे अधिक पसन्द** किया है और उसके सामने कोष्ठक मे (√) का चिन्ह लगाया है। उसने उत्तर (च) को **सबसे कम पसन्द** किया है और उसके सामने कोष्ठक में (×) का चिन्ह लगाया है। उत्तर (ज) को उसने छोड दिया है। आपकी पसन्द इससे भिन्न हो सकती है।

२—प्रत्येक परिस्थिति मे दिए गये उत्तरो से भिन्न भी बहुत से उत्तर हो सकते है, जो आपको सबसे अधिक या सबसे कम पसन्द होंगे। किन्तु आपको केवल दिये गये उत्तरो पर ही विचार करना है।

३—यह ज्ञान-परीक्षण नही है। अत सभी उत्तर सही माने जाएँगे।

४—आपके उत्तर पूर्णतया गोपनीय रखे जायेंगे।

५—प्रश्न सामाजिक परिस्थितियो पर आधारित है। अत आप यह सोच सकते/सकती है कि उसी उत्तर को सबसे अधिक पसन्द किया जाये जिसे समाज अच्छा समझता है। लेकिन यह ठीक नही होगा क्योकि तब आप अपने विचारो को सही रूप मे नही प्रकट कर सकते/सकती है। अत आप अपनी पसन्द को निडर होकर व्यक्त करे चाहे समाज उसे अच्छा समझता है या नही।

६—सभी प्रश्नो के उत्तर दीजिये, किसी प्रश्न को छोडना नही है।

७—समय की कोई सीमा नही है, किन्तु जो उत्तर आपको पहले विचार मे उचित मालूम पड़े उसे ही अंकित कर दीजिए।

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

१. अपने निजी सम्बन्धी (बहिन, लड़की) के लिए योग्य वर के चुनाव मे आप किस बात को महत्व देगे/देगी ?
ट—वर का कुल । ट ( )
च—वर की अधिक धन कमाने की योग्यता । च ( )
ठ—वर का अच्छा स्वास्थ्य । ठ ( )

२. आप कैसे काम को पसन्द करते/करती है ? ऐसा काम जिसमे—
झ—आपके नियन्त्रण मे कुछ लोग हो । झ ( )
ज—आपके शरीर को सुख और आराम मिले । ज ( )
च—आपके धन कमाने की अच्छी सम्भावना हो । च ( )

३. यदि दडित होने का भय न हो तो आप किस परिस्थिति मे असत्य बोल सकते/सकती हैं ?
ख—अपने मित्र की भलाई के लिए । ख ( )
ट—अपने खानदान की इज्जत के लिए । ट ( )
झ—अपने पद की इज्जत के लिए । झ ( )

४. आप कहाँ नौकरी/व्यवसाय करना पसन्द करते/करती है ?
च—जहाँ पर अन्य जगहो से अधिक आय हो । च ( )
ठ—जहाँ की जलवायु आपके लिए स्वास्थ्यवर्धक हो । ठ ( )
ग—जहाँ सबके साथ समानता का व्यवहार होता हो । ग ( )

५ यदि ईश्वर है तो आपके विचार मे उसे कैसे समझा जा सकता है ?
छ—ज्ञान से । छ ( )
क—भक्ति से । क ( )
ख—लोक सेवा से । ख ( )

६. अवकाश को आप किस प्रकार बिताना पसन्द करते/करती है ?
घ—अपने घर फुलवारी को सजाने या किसी कलात्मक रचना को पूरा करने मे । घ ( )
ख—समाज हित के कार्यो को करने मे । ख ( )
ज—सिनेमा सरकस देखने या किसी अन्य मनोरजन के कार्य मे । ज ( )

७. सुखी जीवन के लिए आप किस बात को महत्व देते/देती हैं ?
ठ—बहुत अच्छा स्वास्थ्य । ठ ( )
छ—मानव स्वभाव का अच्छा ज्ञान । छ ( )
घ—ललित कलाओ मे अभिरुचि । घ ( )

८. आप किस कार्य को करना बुरा मानते/मानती हैं ?
ज—विपरीत लिंगी (opposite sex) मित्र के सिनेमा देखने के प्रस्ताव को ठुकराना । ज ( )
ग—अपने खिलाफ होने पर पंचायत का फैसला न मानना । ग ( )
क—धन कमाने के लिये झूठ बोलना । क ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (√) सबसे कम पसन्द (X)

९. आप किसी नीची जाति के घर किस अवस्था मे खाना खा सकते हैं ? यदि
ठ—खाना पौष्टिक (healthful) हो । ठ ( )
ख—वह आपका मित्र हो। ख ( )
झ—वह आपका अफसर हो। झ ( )

१०. अनुचित तरीके मे धन कमाने/कोई आचरण करने मे आपको क्या भय लगता है ?
क—भगवान के दण्ड का। क ( )
झ—कानूनी दण्ड का। झ ( )
ख—बदनामी का। ख ( )

११. आपके विचार मे शिक्षा कैसी होनी चाहिए ? जिसमे
ग—लोग धर्म और जाति का विचार किये बिना सबके साथ समानता का व्यवहार करे । ग ( )
च—लोग जीविका कमाने के योग्य बनें। च ( )
क—लोग धर्म की मान्यताओ के अनुसार जीवन मे आचरण करे। क ( )

१२. आपके विचार मे अधिक मेहनत से पढना कब सफल होता है ? जब
च—अधिक धन कमाने की योग्यता बढती है । च ( )
झ—ऊँचे अधिकारी बनते है। झ ( )
छ—नवीन सत्यो का पता लगाने की क्षमता उत्पन्न होती है। छ ( )

१३. आप किस चित्रकला को अच्छी मानते/मानती है ?
ज—जो मनोरजन करे। ज ( )
घ—जो सुन्दर भाव उत्पन्न करे । घ ( )
छ—जो किसी सत्य बात का निरूपण करे। छ ( )

१४ आजकल के लोगो मे आपको कौन-सी कमी नापसन्द है ?
क—ईश्वर मे विश्वास की कमी। क ( )
घ—कलाओ मे रुचि की कमी। घ ( )
ट—कुल मर्यादा की भावना मे कमी। ट ( )

१५ आप किस श्रेणी के व्यक्तियो को पसन्द करते/करती है ?
छ—विद्वान जो नवीन खोजो से ज्ञान बढाते है। छ ( )
ठ—डाक्टर, वैद्य, हकीम जो स्वास्थ्य की रक्षा करते हैं। ठ ( )
च—उद्योगपति जो देश की आर्थिक उन्नति करते है। च ( )

१६. यदि आपका भाई/लडका नीचे कुल की लडकी से शादी करना चाहता है, तो आप क्या करना पसन्द करेंगे/करेगी ?
ग—शादी करने देना क्योकि आप सभी कुलो को समान समझते/समझती है । ग ( )
ट—शादी नही करने देना क्योकि इससे कुल का सम्मान कम हो जायेगा। ट ( )
ज—शादी करने देना क्योकि आप प्रेम मे कुल की अपेक्षा सुख को अधिक महत्व देते/देती है। ज ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

१७. आप किससे मित्रता करना पसन्द करते/करती हैं ? जो

ट—आपके समान खानदान का हो। ट ( )

क—अपने धर्म में पूर्ण विश्वास रखता हो। क ( )

घ—कला या साहित्य में रुचि रखता हो। घ ( )

१८. आप महात्मा गाँधी को किस लिए पसन्द करते/करती हैं ?

झ—उन्होंने कांग्रेस संगठन को अपने नियन्त्रण में रख कर काम किया। झ ( )

क—उनका ईश्वर में अटूट विश्वास था। क ( )

ग—उन्होंने सबको समान अधिकार दिलाने का प्रयास किया। ग ( )

१९. अपने व्यवसाय/नौकरी में सफलता पाने के लिए आप किस बात को महत्व देते/देती हैं ?

झ—अपने अधीन कर्मचारियों को नियन्त्रण में रखने की योग्यता। झ ( )

छ—काम के मुख्य सिद्धान्तों का ज्ञान। छ ( )

ग—सभी के साथ जाति, वर्ग (अमीर-गरीब) या धर्म का भेद किये ग ( )

२०. आपको अपनी किस भूल से दुख होगा ? जिससे

च—बड़ी आर्थिक हानि होती है। च ( )

क—धार्मिक मान्यता टूटती है। क ( )

ठ—स्वास्थ्य खराब होता है। ठ ( )

२१. कलाओं को सीखने के लिए किये गये परिश्रम (साधना) को आप कब सफल मानते/मानती हैं ? जब

घ—उससे कलाकार को आत्म-सन्तोष मिलता है। घ ( )

ख—उससे दूसरों को आनन्द मिलता है। ख ( )

च—उसे जीविका का साधन बनाया जा सकता है। च ( )

२२ लड़के/लड़की को अपनी शादी में किस बात का ध्यान रखना चाहिए ?

च—नये सम्बन्धी की आर्थिक दशा का। च ( )

ज—अपनी स्वयं की पसंद का। ज ( )

ट—अपने कुल के लोगों की राय का। ट ( )

२३ आप कैसे खाने को पसन्द करते/करती हैं ?

ख—जिसे कोई प्रेम-पूर्वक खिला दे। ख ( )

ज—जो खाने में आपको स्वादिष्ट लगे। ज ( )

ठ—जिसमें पोषक पदार्थ उचित अनुपात में हो। ठ ( )

२४. आपने एक साथी के साथ कोई काम करना प्रारम्भ किया। किस परिस्थिति में आप उस काम को नहीं करना चाहेंगे/चाहेंगी ?

ट—जब उससे आपके कुल पर धब्बा लगने का भय हो। ट ( )

ज—जब उससे आपके शरीर को कष्ट होने का भय हो। ज ( )

छ—जब आप निश्चित रूप से जान लें कि काम बुरा है। छ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

२५ आप कैसे मुहल्ले मे रहना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
घ—जो कायदे से बसा हो और देखने मे सुन्दर लगे। घ ( )
ट—जहाँ आपके जैसे खानदान के पड़ोसी हो। ट ( )
झ—जहाँ आप लोगो का नेतृत्व कर सके। झ ( )

२६ आप किसे अच्छा प्रशासक मानते/मानती है।
ख—जिसमे सहानुभूति एव दया हो। ख ( )
झ—जो सख्त अनुशासन रखे। झ ( )
छ—जिसे प्रशासन के सिद्धान्तो का ज्ञान हो। छ ( )

२७. धन कमाने के लिये अत्यधिक आवश्यकता पडने पर भी आप किस काम को करना कठिनता से स्वीकार करेंगे/करेंगी ?
ठ—जहाँ आपके स्वास्थ्य के खराब होने का डर हो। ठ ( )
झ—जहाँ आपको बहुतो के आधीन रहकर काम करना पड़े। झ ( )
ट—जिसे आपके कुल के लोग नीचा समझते हो। ट ( )

२८ एक-एक लाख रुपया लाटरी मे इनाम पाने पर तीन व्यक्तियो ने उसका अधिकाश भाग निम्नलिखित तरीके से व्यय किया। आपके विचार मे किसने धन का अच्छा उपयोग किया ?
ज—अपने सुख-सुविधा की सामग्रियो को खरीदने मे। ज ( )
च—अपनी आय को बढाने के लिए पूँजी के रूप में लगाने मे। च ( )
ख—अपनी जाति की तरक्की करने के लिये। ख ( )

२९. तीन व्यक्तियो मे आप निम्नलिखित भिन्न-भिन्न गुण पाते है। आप किसका सम्मान करेंगे/करेंगी ?
क—जिसका जीवन सादा और जिसके विचार धार्मिक हैं। क ( )
ग—जो अमीर गरीब का भेद किये बिना सबके साथ एक-सा व्यवहार करता है। ग ( )
ख—जो जरूरतमन्द लोगो की मदद करने मे अपने सुख-दुख की परवाह नही करता है। ख ( )

३०. आपके विचार मे कविता का उद्देश्य क्या होना चाहिए ?
छ—समाज को यथावत चित्रित करना। छ ( )
घ—सुन्दरता का चित्रण करना। घ ( )
ज—मनोरजन करना। ज ( )

३१ आपके विचार मे 'सुबह के अच्छे समय मे' किस काम को वरीयता (प्रमुखता) देनी चाहिए ?
ठ—स्वास्थ्य ठीक रखने के लिये टहलना, कसरत करना। ठ ( )
छ—ज्ञान-वर्धन के लिये अध्ययन करना। छ ( )
क—ईश्वर की पूजा या चिंतन करना। क ( )

३२. आप अच्छे स्वास्थ्य को महत्वपूर्ण क्यो समझते/समझती है ? क्योकि तभी
ज—आप इस दुनियाँ के सुखो का आनन्द ले सकते/सकती है। ज ( )
ठ—आप अपनी योग्यताओ का पूर्ण विकास तथा उपयोग कर सकते/सकती है। ठ ( )
ग—आप निडर होकर सभी के साथ समानता का व्यवहार कर सकते/सकती है। ग ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

सबसे अधिक पसन्द (✓) सबसे कम पसन्द (×)

३३. यदि आपको व्यक्तिगत सहायक की आवश्यकता हो तो आप किस उम्मीदवार को रखना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
ट—जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो अच्छे कुल का है। ट ( )
ग—जिसकी योग्यता सबसे अच्छी है। ग ( )
ख—जिसके पास आवश्यक योग्यता है और साथ ही जो बहुत जरूरतमन्द (needy) है। ख ( )

३४ आप किसी शुभ अवसर (जैसे जन्म दिन) पर किस उपहार को लेना पसन्द करेंगे/करेंगी ?
घ—ड्राइंग रूम की सजावट के लिए नई शैली की वस्तु। घ ( )
च—सोने की अंगूठी। च ( )
ठ—किसी स्वास्थ्यवर्धक खेल का सामान जैसे बैडमिण्टन सेट। ठ ( )

३५. आपके विचार मे आज की परिस्थिति मे अपने देश की भलाई के लिये कौन महत्वपूर्ण है ?
क—सच्चा धार्मिक नेता। क ( )
छ—अच्छा वैज्ञानिक। छ ( )
च—परिश्रमी उद्योगपति। च ( )

३६. यदि कुछ समय के लिए आपको घर से बाहर एक ही कमरे मे किसी के साथ रहना पडे तो आप किसे पसन्द करेंगे/करेंगी।
ट—जो आप जैसे कुल का हो। ट ( )
ग—जो जाति, धर्म, भाषा एव वर्ग का भेद न रखता हो। ग ( )
घ—जो सगीत, चित्रकला, काव्य मे रुचि रखता हो। घ ( )

३७. कोई काम करने मे आप किस बात का ध्यान रखते/रखती है ?
ख—उससे किसी व्यक्ति को दुःख न हो। ख ( )
ट—उससे खानदान की इज्जत कम न हो। ट ( )
ठ—उससे आपका स्वास्थ्य खराब न हो। ठ ( )

३८. निम्नलिखित कुलो मे से आप किस बात का सम्मान करेंगे/करेंगी ?
छ—जिसमे बहुत से विद्वान/वैज्ञानिक पैदा हुए हो। छ ( )
ग—जिसके सदस्य अपने प्रजातान्त्रिक गुणो (जैसे धर्म मे उदारता, भेदभाव न करना,) के लिये प्रसिद्ध हो। ग ( )
झ—जिसमे से प्रशासक (जैसे कलक्टर, पुलिस कप्तान) पैदा हुए हो। झ ( )

३९. आपके विचार मे सच्चा क्या है ? जो यह विश्वास उत्पन्न करे कि :
ग—जाति, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेद नही करना चाहिए। ग ( )
घ—ईश्वर सभी सुन्दर चीजो मे वास करता है, अत सुन्दरता (कला) की साधना करनी चाहिए। घ ( )
क—ईश्वर सर्व-शक्तिमान, सर्वज्ञ एवं सर्वव्यापी है, अतः धर्म-भीरु होना चाहिए। क ( )

४०. किस कथन मे आपका विश्वास है ?
झ—बडी जगह में सेवा करने से अच्छा है कि छोटी जगह मे शासन किया जाय। झ ( )
ज—दुनियाँ मे आकर जिसने अपनी इच्छाओं को तृप्त नही किया, वह जीते हुए भी मरा हुआ है। ज ( )
घ—साहित्य, सगीत और कला के लिए प्रेम से विहीन पुरुष पशु के समान है। घ ( )

क	ख	ग	घ	च	छ	ज	झ	ट	ठ

Jr.-Sr.

H. S. P. Q.

FORM A

[IPAT's 1968 Edition
Third Revised Edition]

KVCJ 1980 Hindi Edition

Prepared by :

S. D. Kapoor, S. S. Srivastava and G. N. P. Srivastava

तुम्हे क्या करना है : तुम्हारे पास इस समय एक पुस्तिका और एक उत्तर-पत्र है। उत्तर-पत्र पर दिये हुए निर्देश के मुताबिक अपना नाम तथा उम्र, इत्यादि उस पर लिख दो।

तुम्हारे सामने जो पुस्तिका है उसमे तुम्हारी रुचियो और तुम्हारी पसन्द तथा नापसन्द के बारे मे प्रश्न है। वैसे तुम्हे प्रश्नो को तो इस पुस्तिका मे पढना है मगर **अपने उत्तरो को केवल उत्तर-पत्र में ही देना है**। साथ ही इस बात का ध्यान रखना है कि जिस नम्बर का प्रश्न पुस्तिका मे हो उसी नम्बर के खाने (box) मे उत्तर-पत्र पर निशान लगाना है।

सबसे पहले हम तुम्हे दो उदाहरण देगे ताकि तुम ठीक तरह से समझ जाओ कि तुम्हे क्या करना है। हर एक प्रश्न के बाद उसके तीन उत्तरो को लिखा गया है। नीचे लिखे उदाहरणो को पढो और अपने उत्तरो को उत्तर-पत्र के ऊपरी भाग पर, जहा 'उदाहरण 1' और 'उदाहरण 2' छपा हुआ है, गुणा या क्रास (X) के निशान के जरिये तीनो मे से किसी एक खाने मे (box के अन्दर) भरते जाओ। अगर तुम अपना सही उत्तर 'a' वाले उत्तर के लिये चुनते हो तो बाई तरफ वाले खाने मे निशान लगाओ। अगर तुम्हारा उत्तर 'b' वाला है तो बीच वाले खाने मे निशान लगाओ, और यदि तुम अपना उत्तर 'c'वाला चुनो तो दाहिनी तरफ वाले खाने मे निशान लगा दो।

उदाहरण :

1. इनमे से तुम किसे ज्यादा पसन्द करोगे ?
   a. **चिड़िया घर की सैर करना,**
   b. **अनिश्चित,**
   c. **हवाई जहाज मे बैठकर ऊपर जाना।**

2. अगर तुम किसी से झगड जाते हो तो क्या फिर जल्दी ही दोस्ती कर लेते हो ?
   a. हां, b. **दोनो के बीच का,** c. नही।

जैसे कि तुमने इन उदाहरणो मे देखा, आमतौर से इन प्रश्नो के कोई सही या गलत उत्तर नही होते है, वैसे कभी-कभी किसी एक प्रश्न का केवल एक ही ठीक उत्तर हो सकता है। हर आदमी दूसरे से भिन्न होता है और तुम्हे वही उत्तर देना चाहिये जो तुम्हारे लिये सच या ठीक हो। तुम्हे हमेशा एक उत्तर ऐसा मिलेगा जो तुम्हारे लिये दूसरे उत्तरो से कुछ ज्यादा ठीक लगेगा, इसलिये तुम किसी भी प्रश्न को बिना उत्तर दिये मत छोडो।

इस पुस्तिका के अन्दर तुम्हे ऊपर दिये हुये प्रश्नो की ही तरह और भी ज्यादा प्रश्न मिलेगे। जब तुमसे पन्ना उलटने के लिये कहा जाय तब तुम प्रश्न सख्या 1 से शुरू करो और आखिरी प्रश्न तक जाकर ही खत्म करो। प्रश्नो का उत्तर देते समय, कृपया नीचे लिखी इन चार बातो को अपने मन मे अवश्य रखो.

1. प्रश्नो का उत्तर बिना किसी झिझक तथा सच्चाई के साथ दो, क्योकि "यह कहना ठीक होगा" ऐसा सोच कर अपने बारे मे, गलत या असत्य उत्तर देने से कोई फायदा नही है।
2. प्रश्नो का उत्तर जितनी जल्दी हो सके दो। उनके बारे मे सोचने पर ज्यादा समय खर्च मत करो। जो सबसे पहला, स्वाभाविक उत्तर मन मे आये उस पर ही निशान लगा दो। कुछ प्रश्न दूसरे प्रश्नो की ही तरह दिखाई देगे किन्तु कोई भी दो प्रश्न बिल्कुल एक से नही है। इसलिये अक्सर उनके उत्तर भी अलग होगे।
3. बीच वाले उत्तर को केवल तभी इस्तेमाल करो जब तुम्हारे लिये किनारे के दोनो उत्तरो मे से किसी एक को चुनना बिल्कुल ही असम्भव हो जाय। दूसरे शब्दो मे, अधिकतर तुम्हे 'a' या 'c' वाले उत्तर ही देना चाहिये।
4. किसी भी प्रश्न को मत छोडो। कभी-कभी ऐसा लगेगा कि कोई प्रश्न तुम पर लागू नही होता मगर फिर भी किसी न किसी तरह हर एक प्रश्न का उत्तर दो।

अब अगर कोई बात तुम्हारी समझ मे नही आई हो तो अभी पूछ लो। साथ ही यदि अभी कुछ नही पूछना है, मगर बाद मे कोई ऐसा शब्द बीच मे आ जाये जिसे तुम नही जानते, तो परीक्षक से उस समय पूछ लेना।

जब तक कहा न जाये, पन्ने को मत उलटो

क्या तुम सभी निर्देशो को समझ गये हो ?

a. हां, b. अनिश्चित, c नही।

किसी सैर-सपाटे (पिकनिक) के मौके पर तुम अपना समय किस तरह बिताना पसंद करोगे ?

a. जंगल मे अकेले घूमने मे,
b. अनिश्चित,
c. लोगो के साथ हल्ला-गुल्ला और मनोरंजन करने मे।

सामूहिक वार्तालाप मे क्या तुम वही कहोगे जैसा कि तुम सोचते हो ?

a. हां, b. कभी-कभी, c. नही।

यदि तुमसे कोई बेवकूफी का काम हो जाता है तो क्या तुम उसे इतना बुरा समझते हो कि जमीन फट जाय और तुम उसमे समा जाओ ?

a. हां, b शायद, c. नहीं।

क्या तुम किसी भेदभरी बात को आसानी मे छिपाये रख सकते हो ?

a हां, b. कभी-कभी, c. नही।

जब तुम कोई बात निश्चित करते हो, तो क्या तुम :

a. आश्चर्य करते हो कि तुम अपने विचार बदल सकते हो,
b. दोनो के बीच मे,
c. यह विश्वास करते हो कि तुम अपने निर्णय से सन्तुष्ट हो ?

क्या तुम अपने चारो तरफ होने वाले शोरगुल का ख्याल न कर कोई काम मेहनत से कर सकते हो ?

a. हां, b. शायद, c. नहीं।

यदि तुम्हारे विचार दूसरे दोस्तो के विचारो से नही मिलते, तो क्या तुम इस डर से कि कही उनकी भावनाओं को चोट न पहुँचे यह नही कहते कि तुम्हारे विचार उनके विचारो से अच्छे हैं ?

a. हां, b. कभी-कभी, c. नही।

जब तुम्हारे सामने कोई बड़ी कठिनाई आ जाती है तो क्या तुम साधारणतया लोगो से सहायता माँगते हो ?

a. शायद ही कभी, b. कभी-कभी, c अक्सर।

क्या तुम मानते हो कि कुछ नियम और कानून मूर्खतापूर्ण है और पुराने हो चुके है ?

a. हा, और इसके बारे मे परेशान नही होता कि मै उन्हें सुधारूँ,
b. अनिश्चित,
c नही, बहुत से नियम आवश्यक है और उनका पालन अवश्य होना चाहिये।

11. इनमे से तुम किस की तरह अधिक समान हो

a. एक भरोसे वाला नेता,
b. दोनो के बीच का,
c. एक आकर्षक, सुन्दर व्यक्ति।

12 क्या तुम बड़ी पार्टी या समूह के साथ घर मे बाहर सैर-सपाटे के प्रोग्राम मे जाने के पहले कभी-कभी ऐसा अनुभव करते हो कि उस प्रोग्राम मे तुम्हारी जाने की इच्छा नही है ?

a. हां, b शायद, c. नहीं।

13 जब तुम लोगो से उचित बातो पर नाराज होते हो तो क्या उनसे चिल्ला-चिल्ला कर बाते करना ठीक समझते हो ?

a हा, b शायद, c नही।

14. जब कक्षा (क्लास) के साथी तुमसे मजाक करते है, तो क्या तुम बिना परेशान हुए खुद (स्वय) भी उस मजाक मे औरो जैसा ही मजा लेते हो ?

a हा, b शायद, c नहीं।

15. क्या ऐसे मौके आते है जब कि तुम सोचते हो कि "लोग इतने तर्कहीन (बेतुके) है कि खुद की भलाई के लिए भी उन पर विश्वास नही किया जा सकता" ?

a सही, b शायद, c. गलत।

16 क्या तुम काम के बिगड जाने पर भी खुश रहते हो ?

a हा, b अनिश्चित, c. नही।

17. क्या तुम अपने दोस्तो के फैशन और शौक वगैरह की बराबरी करने की कोशिश करते हो ?

a हां, b अनिश्चित, c नही।

18 अधिकतर लोगो के पास क्या तुमसे भी ज्यादा दोस्त है ?

a. हा, b अनिश्चित, c नही।

19 तुम इनमे से क्या बनना ज्यादा पसन्द करोगे :

a टेलीविजन कलाकार, (या सिने-अभिनेता)
b. अनिश्चित,
c एक मेडिकल डाक्टर,

20 क्या तुम सोचते हो कि तुम्हारी जिन्दगी बहुत से दूसरे लोगो के मुकाबले मे ज्यादा आसानी और सन्तोष से चल रही है ?

a हा, b. शायद, c नही।

21. सुने हुये चुटकुले या मजाक को इतना याद करने मे क्या तुम्हे कठिनाई होती है कि उन्हे खुद दूसरो को सुना सको ?

a. हां, b. कभी-कभी, c नही।

22 क्या तुमने स्कूल मे खेले जाने वाले ड्रामो या नाटकों मे भाग लेकर आनन्द उठाया है ?

a. हां, b. अनिश्चित, c. नही ।

23. "सुधारना" का वही अर्थ होता है जिसका मतलब

a 'ठीक करने',
b. 'चगा करने',
c. 'पैबन्द लगाने' से होता है ।

24. "सत्य" का उल्टा है :

a. कल्पना,
b झूठ,
c. इन्कार (अस्वीकार) ।

25 क्या तुम स्कूल मे पढाई गई चीजो को पूरी तरह समझ लेते हो ?

a हा, b अक्सर, c नही ।

26 जब ब्लैक-बोर्ड पर लिखते समय चाक किर्र-किर्र की आवाज कर उठता है तो क्या इससे तुम्हे सिहरन होने लगती है या दाँत किरकिराने लगते है ?

a. हां, b. कभी-कभी, c. नही।

27 जब कोई चीज एकदम गलत या गडबड हो जाती है तो यह सोचने के पहले कि अब क्या किया जाय तुम दूसरे लोगो पर बहुत गुस्सा हो जाते हो ?

a अक्सर, b. कभी-कभी, c. शायद ही कभी ।

28. स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद तुम क्या करना चाहोगे ?

a. कुछ ऐसा करना जिससे लोग तुम्हें पसन्द करने लगे चाहे तुम गरीब ही क्यो न हो,
b. अनिश्चित,
c. ढेर सारा रुपया कमाना ।

29. क्या तुम सकरी गुफाओ या ऊँची जगहो पर जाने से बचते हो ?

a. हा, b कभी-कभी, c नही ।

30. क्या तुम सभी के सामने यह दिखाने के लिये हमेशा तैयार रहते हो कि दूसरो के मुकाबले मे कोई काम तुम कितना अच्छा कर सकते हो ?

a. हां, b. शायद, c. नही ।

31. स्कूल मे बढिया काम करने के लिये क्या तुम अपने माता-पिता से सलाह लेते हो ?

a. अक्सर, b कभी-कभी, c शायद ही कभी ।

32 क्या तुम अनजाने या अजनबी लोगों के समूह (ग्रुप) से बिन हकलाये हुये या बिना किसी कठिनाई के बातचीत कर सक हो या जो कुछ कहना चाहते हो कह सकते हो ?

a हॉं, b शायद, c नही ।

33 क्या कुछ तरह की फिल्मे (सिनेमा) देखने से तुम परेशान हो जाते हो ?

a. हॉं, b शायद, c. नही ।

34 एक सुन्दर नृत्य (डान्स) देखने की जगह क्या तुम मुक्केबाज (बॉक्सिग मैच) देखना ज्यादा पसन्द करोगे ?

a. हॉं, b. शायद, c नही ।

35 अगर तुम्हारे साथ कोई निष्ठुरता या बेरहमी का व्यवहा करता है तो क्या तुम दुबारा जल्दी ही उस पर विश्वास क लेते हो और उसे फिर मौका देते हो ?

a हा, b शायद, c. नही ।

36 क्या तुम कभी ऐसा महसूस करते हो कि तुम बहुत अच्छे नह हो और तुमने कभी कोई अच्छा काम नही किया है ?

a हा, b शायद, c. नही ।

37 जब लोगो का एक समूह (ग्रुप) कुछ कर रहा हो तो क्या तुम

a लोग जो कर रहे है उस काम मे खूब भाग लेते हो,
b दोनो के बीच का,
c. अक्सर सिर्फ उस काम को देखते भर हो ?

38. दोस्तो के साथ जब तुम बाहर निकलते हो तो क्या तुम चु रहते हो ?

a हॉं, b कभी-कभी, c. नही।

39. क्या लोग ऐसा कहते है कि तुम उन लोगो मे हमेशा गिने जाते हो जो किसी काम को सही और अच्छी तरह से करते है ?

a हा, b शायद, c नही ।

40. जब तुम कोई साहसिक कहानी पढ़ते हो तो क्या .

a कहानी जैसे-जैसे आगे बढ़ती है तुम उसका सिर्फ मज उठाते हो,
b अनिश्चित,
c. इसके लिये परेशान रहते हो कि क्या इस कहानी क अन्त अच्छा होगा ?

41. यदि तुम्हे खाली बैठकर किसी काम को शुरू करने क इन्तजार करना पडता है तो क्या यह बात तुम्हे परेशान करत है ?

a. हा, b अनिश्चित, c नही ।

जब लोग बिना तुमसे पूछे तुम्हारी चीज ले लेते है तो क्या तुम इससे दुखित होते हो ?

a हा, b. शायद, c. नही।

. "दृढ" का उल्टा है

a आसान, b दयालु, c ढीला।

. "धनी" का "पैसे" मे वही सम्बन्ध है जो "दुखी" का

a परेशानी, b मित्र (दोस्त), c भूमि (जमीन) से।

क्या हमेशा अपने माता, पिता, भाइयो और बहनो के साथ सच मे तुम्हारी अच्छी पटती (निभती) रही है ?

a हा, b दोनों के बीच मे, c नही।

अगर तुम्हारी कक्षा के साथी तुम्हे किसी खेल मे शामिल नही करते है तो क्या तुम

a इसे केवल एक मामूली बात समझते हो,

b. दोनो के बीच मे,

c इस पर दुःख महसूस करते हो और नाराज होते हो ?

क्या लोग कहते है कि तुम कभी-कभी उत्तेजित और बौखला जाते हो, वैसे वे सोचते है कि तुम एक अच्छे (बेहतरीन) आदमी हो ?

a. हा, b शायद, c नही।

जब तुम बस या रेलगाडी मे होते हो तो क्या तुम

a. अपनी साधारण आवाज मे बात करते हो,

b. दोनो के बीच मे,

c जितने धीमे हो सकता है उतने धीमे बात करते हो ?

तुम क्या बनना ज्यादा पसन्द करोगे

a. स्कूल का सबसे मशहूर छात्र,

b अनिश्चित,

c. सबसे अच्छा नम्बर पाने वाला एक छात्र ?

लोगो के समूह (ग्रुप) मे क्या तुम अक्सर उन लोगो मे से होते हो जो हँसी-मजाक और मजेदार कहानियाँ कहते है ?

a. हां, b. शायद, c. नही।

नियम और कानून मानने के लिए क्या तुम लोगो से कहना पसन्द करते हो ?

a. हा, b. कभी-कभी, c. नहीं।

क्या तुम्हारी भावनाओं (दिल) को आसानी से चोट पहुँच जाती है ?

a हां, b शायद, c. नहीं।

53 किसी नाटक मे क्या तुम एक मशहूर समुद्री डाकू (जहाजों लूटने) का अभिनय (पार्ट) करने के बजाय एक आर्ट टीचर (कलाध्यापक) का अभिनय (पार्ट) करना पसन्द करोगे ?

a हा, b शायद, c नही।

54 तुम कौन सा विषय लेना चाहते हो .

a. प्रायोगिक (प्रैक्टीकल) गणित,

b. अनिश्चित,

c विदेशी भाषा या नाट्य साहित्य ?

55 तुम अपना खाली समय किस तरह बिताना ज्यादा पसन्द करोगे

a किसी किताब के पढने मे या टिकट (स्टैम्प) इकट्ठा करने मे,

b अनिश्चित.

c किसी सामूहिक योजना (ग्रुप प्रोजेक्ट) मे लोगो के साथ काम करने मे ?

56. क्या तुम यह महसूस (अनुभव) करते हो कि तुम ठीक से रह रहे हो और जैसी तुमसे आशा की जाती है वह सब कर लेते हो ?

a हा, b. शायद, c नही।

57 जैसा लोग तुमसे उम्मीद (आशा) करते है वैसा करने मे या वैसा बनने मे क्या तुम्हे परेशानी होती है ?

a हा, b अनिश्चित, c. नही।

58 अगर किसी शाम को तुम एकदम खाली हो तो तुम क्या करना पसन्द करोगे

a कुछ दोस्तो को बुलाकर उनके साथ कुछ काम करना,

b. निश्चित नही है,

c कोई अच्छी किताब पढना या अपने शौक (हॉबी) का काम करना ?

59 क्या तुम देखने मे बहुत खूबसूरत बनना चाहते हो जिससे कि तुम जहा कही भी जाओ लोग तुम्हारी ओर देखे ?

a हा, b शायद, c. नही।

60 जब कोई बहुत ही आवश्यक चीज जैसे कोई परीक्षा या बडा खेल (मैच) होने को होता है तो क्या तुम .

a बिलकुल शान्त और आराम से रहते हो,

b दोनो के बीच मे,

c तनाव अनुभव (महसूस) करते हो या परेशान हो जाते हो ?

61. जब तुम काम करते रहते हो और अगर उस समय कोई ऊंची आवाज मे गाने-बजाने लगता है तो क्या तुम महसूस करते हो कि तुम काम नही कर सकते ?

a. हा, b. शायद, c नही।

62. नाच और गाने मे क्या तुम जल्दी ही लय और ताल पकड लेते हो ?

a. हा, b कभी-कभी, c नही।

63 "दौडने" का "हाँफने" से जो सम्बन्ध है वही "खाने" का किसके साथ है :

a अभ्यास, b. अपच, c नीद ?

64. यदि राम की माँ मेरे पिता की बहन है तो राम के पिता का मेरे भाई से क्या सम्बन्ध है

a. फुफेरे, चचेरे या ममेरे भाई,

b दादा (बाबा),

c. फूफा ?

65 क्या तुम अक्सर बडी-बडी योजनाये बनाते हो और खाली यह जानकर कि वे अभी पूरी नही हो सकती उत्तेजित हो जाते हो ?

a. हा, b. समय-समय पर, c नही।

66. जब कोई काम गडबड हो जाता है और तुम परेशान हो जाते हो तो क्या तुम .

a केवल मुस्करा देने मे,

b दोनो के बीच का,

c. घबडा कर हगामा मचाने मे विश्वास करते हो ?

67 क्या तुम अक्सर किसी घटना या बात को अलग तरह से याद रखते हो इसीलिए सच मे जो घटना हुई है उसके बारे मे तुम दूसरो से सहमत नही हो पाते ?

a हां, b शायद, c नही।

68 क्या ऐसा भी समय आता है जब तुम दुनियाँ से इतना खुश हो जाते हो कि गाने और चिल्लाने लगते हो ?

a हा, b शायद, c. नही।

69 जब तुम किसी व्यवसाय मे जाने के लिए तैयार हो तो क्या तुम इस तरह का व्यवसाय पसन्द करोगे

a. जिसमे काफी मेहनत का काम हो किन्तु एक ही चाल (एक ढग) से चलने वाला और सुरक्षित हो,

b अनिश्चित,

c. जिसमे बहुत से परिवर्तन होते हो और जिसमे मजेदार लोगो से मिलना-जुलना हो ?

70 क्या तुम लोगो के सामने ऐसा काम करना चाहते हो जिसकी लोगो को कोई उम्मीद (आशा) न हो और जिससे वे चौक जाये ?

a. हाँ, b एकाध बार, c. नही।

71. अगर सभी लोग ऐसा काम करते है जिसे तुम गलत समझते हो तो क्या :

a. तुम उनका साथ देते हो,

b. अनिश्चित,

c तुम जो उचित समझते हो वही करते हो ?

72. जब लोग तुम्हे देख रहे हो तो क्या तुम बिना किसी तरह की परेशानी महसूस करते हुए पहले जैसा ही काम कर सकते हो ?

a. हाँ, b शायद, c. नही।

73. किसी शाम का खाली समय क्या तुम इस तरह बिताना ज्याद पसन्द करोगे

a एक ऐसी जगह जाकर जहाँ सुन्दर फुलवारी और सुन्दर चित्र लगे हो,

b अनिश्चित,

c चिडियो का शिकार करने की प्रतियोगिता मे जाकर ?

74 क्या तुम किसी शाम को किसी बडी झील के किनारे जाकर यह करना पसन्द करोगे

a. खतरनाक और तेज नौका की दौड देखना,

b अनिश्चित,

c झील के सुन्दर किनारे पर एक मित्र के साथ टहलना ?

75 जब तुम समूह (ग्रुप) मे रहते हो तो क्या तुम ज्यादा समय इस तरह खर्च करते हो

a दोस्ती का मजा लेने मे,

b अनिश्चित,

c. जो हो रहा है उसे देखने मे ?

76. क्या तुम हमेशा अपनी सच्ची भावनाएँ (मन की बात) बता देते हो जैसे कि तुम थक गये हो या तुम ऊब रहे हो ?

a हाँ, b शायद, c नही।

77 जब चीजे बहुत अच्छी तरह से हो रही हो तो क्या तुम

a. सचमुच ही "खुशी के मारे उछल पड़ते हो",

b. अनिश्चित,

c भीतर से तो अच्छा महसूस करते हो और बाहर से शात दिखाई पड़ते हो ?

78. तुम क्या बनना ज्यादा पसन्द करोगे

a पुल बनाने वाला,

b अनिश्चित,

c. जगह-जगह जाकर सर्कस करने वालो मे से एक ?

79 जब कोई चीज तुम्हे बहुत परेशान करती है तो क्या तुम यह अच्छा समझते हो कि

a. जब तक मामला शान्त न हो जाय तब तक उसकी ओर ध्यान न दिया जाय,

b अनिश्चित,

c. गुस्से को बाहर निकाला जाय ?

80. क्या तुम कभी-कभी भद्दी बाते खाली यह देखने के लिये कहते हो कि दूसरे लोग क्या कहेगे ?

a हाँ, b. शायद, c. नही।

81. किसी महत्वपूर्ण खेल प्रतियोगिता मे जब तुम अच्छा नही कर पाते तो क्या

a तुम यह कहते हो कि "खेल ही तो है",

b. अनिश्चित,

c. तुम गुस्सा हो जाते हो और अपने को ही ठोकने-पीटने लगते हो ?

क्या तुम भीड वाली बस एव सडको से बचने के लिए अपना रास्ता बदल देते हो ?

a हा, b शायद, c. नही।

. "अक्सर" का वही अर्थ है जो

a "कभी-कभी", b "सदैव", c "साधारणत." का है?

मेरे भाई की बहन की लडकी की नानी मेरी

a मां, b. साली या भाभी, c. भतीजी लगती है।

. क्या तुम सदा सन्तुष्ट रहते हो ?

a. हॉ, b दोनो के बीच मे, c. नहीं।

जब तुम कोई चीज बनाते रहते हो और अकस्मात (अचानक) कोई सामान टूट जाता है या नष्ट हो जाता है तब क्या तुम पहले की तरह शांत रहते हो ?

a. हा,

b शायद,

c. नही, मै बहुत क्रोधित हो जाता हूँ।

असन्तुष्ट होकर, क्या तुमने कभी अपने आप से कहा है, "मै बाजी लगाता हू कि मै इस स्कूल को इन मास्टरो से अच्छी तरह चला सकता हूँ ?"

a हा, b. शायद, c. नही।

तुम क्या बनना ज्यादा पसन्द करोगे

a. एक ऐसा आदमी जो घर और पार्क का नक्शा (प्लान) बनाता हो,

b अनिश्चित,

c. एक गायक या नृत्य मण्डली का सदस्य ?

यदि तुम्हे कोई साहसिक और जगलीपने का काम करने का मौका मिले जो साथ ही खतरनाक भी हो तो क्या तुम

a. शायद उसे नही करोगे,

b. कुछ ठीक नही है,

c. उसे जरूर करोगे ?

जब तुम्हे गृह-कार्य (होम वर्क) करना रहता है तो क्या तुम :

a अक्सर उसे नहीं करते हो,

b दोनों के बीच मे,

c. उसे हमेशा समय के अन्दर कर डालते हो ?

. क्या तुम अक्सर अपने क्रिया-कलापो (काम-काज) के बारे मे अपने माता-पिता से वार्तालाप करते हो ?

a हां, b. कभी-कभी, c. नही।

92. जब कक्षा मे किसी बात पर बहस चलती रहती है तो क्या अक्सर तुम्हे कुछ न कुछ कहना रहता है ?

a. बिलकुल ही नही, b एकाध बार, c हमेशा।

93 क्या तुम कक्षा के सामने बिना घबराये (नर्वस) या बिना हिचकिचाये कुछ कहने के लिये खडे होते हो ?

a हा, b. शायद, c. नहीं।

94 एक सुहावनी शाम को तुम क्या देखना ज्यादा पसन्द करोगे ?

a कार की दौड,

b अनिश्चित,

c. खुली हवा मे सगीतमय नाटक।

95 क्या तुमने कभी सोचा है कि अगर दुनियाँ मे खाली तुम्ही अकेले बचे रहो तो क्या करोगे ?

a हां, b निश्चित नही है, c. नही।

96 क्या तुम प्रत्येक खेल आसानी से सीख जाते हो ?

a हॉ, b दोनो के बीच से, c नही।

97 क्या तुम अपने स्कूली कामो के बारे मे और भी ज्यादा निश्चिन्त और प्रसन्नचित होकर सीखने की इच्छा रखते हो ?

a. हां. b शायद, c. नहीं।

98. क्या तुम उन तमाम लोगो मे से हो जो बादलो के गरजने मे डर जाते है ?

a हॉ, b शायद, c नही।

99. क्या तुम कक्षा मे अध्यापक से किसी नये विषय पर बातचीत करने का सुझाव देते हो ?

a हॉ, b शायद, c नहीं।

100 क्या तुम दोपहर के अवकाश (इन्टरवल) का समय इस प्रकार बिताना ज्यादा पसन्द करते हो

a खेलने में,

b अनिश्चित,

c पिछडा गृह-कार्य (होम-वर्क) पूरा करने मे ?

101 जब तुम एक सुनसान अधेरी गली मे घूमते रहते हो तो क्या तुम्हे ऐसा महसूस होता है कि कोई तुम्हारा पीछा कर रहा है ?

a हॉ, b. शायद, c नहीं।

102 क्या तुम अपनी कक्षा के साथियों से बात करते समय अपनी बहुत निजी (व्यक्तिगत) भावनाओं को बताना नही पसन्द करते ?

a. हां, b कभी-कभी, c. नही।

103 जब तुम एक नये समूह (ग्रुप) मे जाते हो तो क्या

a. जल्दी ही तुम्हें महसूस होने लगता है कि तुम सबको जानते हो,

b दोनो के बीच मे,

c लोगो को जानने मे तुम्हे ज्यादा समय लगता है ?

104 इन पाच शब्दो को पढो "अधिकतर", "सुखकर", "प्रमुखतया", "मुख्यत", "उच्चतर"। इनमे से एक शब्द जो बाकी चारो से भिन्न है, वह है

a "अधिकतर", b "सुखकर", c. "उच्चतर"।

105 क्या तुम अक्सर बिना कारण कभी खुश और कभी उदास हो जाते हो ?

a. हा, b. अनिश्चित, c नही।

106. जब तुम रेडियो या टेलीविजन सुनते रहते हो और लोग तुम्हारे चारो ओर हँसते या बाते करते है तो क्या .

a. तुम खुश रहते हो,

b. दोनो के बीच मे,

c. इससे मजा किरकिरा हो जाता है और तुम गुस्सा हो जाते हो।

107 अगर तुम लोगो के बीच अकस्मात कोई भद्दी बात कह देते हो तो क्या तुम काफी देर तक परेशान रहते हो और उसे भूलने मे तुम्हे कठिनाई होती है ?

a. हा, b शायद, c. नही।

108, तुम किसके बारे म ज्यादा पढना पसन्द करोगे :

a बास्केट बाल के खेल मे कैसे जीता जाय,

b अनिश्चित,

c. सब लोगो को कैसे अच्छा लगा जाय।

109. क्या लोग तुम्हे ऐसा समझते हैं

a. अच्छी तरह सोचने विचारने वाला,

b. दोनो के बीच का,

c. अच्छी तरह काम करने वाला।

110. क्या तुम अपनी आमदनी का ज्यादा हिस्सा (भाग) भविष्य के लिए बचाने के बजाय मौज मे खर्च कर देते हो ?

a. हां, b. शायद, c. नहीं।

111. क्या अक्सर दूसरे लोग तुम्हारे कामो मे टाग अडाते है ?

a. हां, b. दोनों के बीच मे, c नही।

112 तुम अपने को किस तरह का आदमी मानोगे ?

a मनमौजी,

b. दोनो के बीच का,

c. बिल्कुल मनमौजी नही।

113. तुम कितनी बार किसी जगह जाते हो या कोई काम करते

a. अक्सर ही, b. कभी-कभी, c शायद ही कभी।

114. तुम किस प्रकार का चलचित्र (सिनेमा) सबसे अधिक पस करते हो :

a. अच्छे गीत-सगीत वाला,

b अनिश्चित,

c. लड़ाई की कहानियो वाला।

115 एक समूह (ग्रुप) को जो कुछ करना चाहता है उससे ऐ कहने मे क्या तुम अक्सर कठिनाई मे पड जाते हो ?

a "आओ साथ चलें",

b. अनिश्चित,

c. "मै सबसे मिल कर नही चलूँगा ?"

116 जब तुम बडे हो रहे थे तब क्या तुम यह उम्मीद (आश करते थे कि दुनिया

a जितनी दयालु है उससे और अधिक दयालु और तुम्ह ख्याल करने वालो हो जाय,

b. अनिश्चित,

c. जैसे अभी है उससे ज्यादा कठिन और कठोर हो जाय

117 क्या तुम किसी बडे आदमी के पास जाकर अपना परि देना आसान समझते हो ?

a हा, b. शायद, c नहीं।

118. क्या तुम सोचते हो कि अक्सर एक आदमी की तुलन कक्षा के साथियो की कोई कमेटी किसी निश्चय पर पहुँचने अधिक समय लगाती है और खराब निर्णय लेती है ?

a हा, b शायद, c. नही।

119. क्या तुम महसूस करते हो कि तुम्हे जीवन मे जो कुछ क चाहिए उससे कुछ ज्यादा ही कर रहे हो ?

a. हा, b. अनिश्चित, c. नही।

120. क्या तुम अक्सर बहुत से कामो मे ऐसा उलझ जाते हो तुम्हे पता ही नही चलता कि तुम कौन सा काम कर रहे ह

a. हा, b. शायद, c. नही।

121 जब कोई तुमसे असहमत होता है तो क्या तुम

a उसे जो कुछ कहना होता है कहने देते हो;

b. अनिश्चित,

c. उसकी बात खत्म होने के पहले ही उसे रोक कर अ बात कहने की कोशिश करते हो।

क्या तुम इस प्रकार रहना ज्यादा पसन्द करोगे

a. एक घने जगल में जहां चिडियो की चहचहाहट के सिवा कुछ न हो,

b. अनिश्चित,

c. एक चहल-पहल से भरी सडक के किनारे जहा बहुत कुछ हो रहा हो ?

यदि तुम्हे रेलवे में काम करना पडे तो तुम क्या बनना ज्यादा पसन्द करोगे :

a. मुसाफिरो से बातचीत करने वाला एक कण्डक्टर,

b. अनिश्चित,

c. ट्रेन को चलाने में मदद देने वाला एक इन्जीनियर।

इन पाच शब्दों को देखो : "नीचे", "बगल मे", "ऊपर", "पीछे", "बीच मे"। जो शब्द दूसरो से मेल नहीं खाता वह है :

a. "नीचे", b. "बीच मे", c. "बगल मे" ?

अगर कोई आदमी तुमसे कोई नया और मुश्किल काम करने को कहता है तो क्या तुम

a. खुश होते हो और यह दिखा देते हो कि तुम क्या कर सकते हो,

b. दोनों के बीच मे,

c. महसूस करते हो कि तुमसे उस काम में गड़बड़ हो जायेगी ?

जब तुम कक्षा मे किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए हाथ उठाते हो और दूसरे साथी भी हाथ उठाते है तो क्या तुम उत्तेजित हो जाते हो :

a. कभी-कभी, b. अक्सर नही, c. कभी नहीं ?

क्या तुम यह बनना ज्यादा पसन्द करोगे :

a. एक अध्यापक, b. अनिश्चित, c एक वैज्ञानिक ?

अपने जन्मदिन पर क्या तुम यह पसन्द करोगे कि

a. पहले तुमसे पूछ लिया जाय कि तुम्हें क्या भेट (प्रेजेण्ट) दिया जाय,

b. अनिश्चित,

c तुम्हे ऐसी भेंट (प्रेजेण्ट) दी जाय जो तुमको आश्चर्य-चकित (ताज्जुब मे) कर देने का मजा दे ?

क्या तुम इतने सतर्क (सावधान) रहते हो कि मजाक मे भी किसी की भावनाओ पर चोट न पहुँचाओ या उसे चौंका दो ?

a. हां, b. शायद, c नहीं।

यदि तुम कक्षा मे समूह (ग्रुप) के साथ काम करते हो तो क्या तुम चाहोगे :

a. चारो ओर आ जा कर एक के पास से सामान दूसरे के पास पहुंचाओ,

b. अनिश्चित,

c. इस बात की विशेष योग्यता बढ़ाओगे कि लोगो को बतलाओ कि किस प्रकार कोई मुश्किल काम किया जाता है ?

131. क्लास (कक्षा) मे कुछ कहने के पहले क्या तुम इस बात का कष्ट उठाते हो कि यह तय कर लो कि जो कुछ कहने जा रहे हो वह ठीक है ?

a हमेशा, b. साधारणतः, c अक्सर नही।

132 पता नही क्या हो जाय इस बात से तुम्हे बहुत डर लगता है इसलिए किसी तरह के निर्णय या निश्चय से तुम कतराते हो ?

a. अक्सर, b. कभी-कभी, c कभी नही।

133. जब चीजे डरावनी हो तो क्या तुम परेशान नही होते और हँस सकते हो ?

a हा, b शायद, c. नही।

134. क्या तुम्हे कुछ नाटक और किताबे करीब-करीब रुला देती है ?

a. हां, अक्सर, b. कभी-कभी, c नहीं, कभी नही।

135 किसी देहाती इलाके (क्षेत्र) मे तुम्हे ज्यादा क्या अच्छा लगेगा

a. कक्षा के साथ पिकनिक करना,

b. अनिश्चित,

c. जगल मे तरह-तरह के पेडो के बारे मे जानकारी करते हुये घूमना ?

136. एक सामूहिक गोष्ठी (ग्रुप डिसकशन) मे क्या तुम :

a अकेले ही अपनी बात पर अडे रहते हो,

b. अनिश्चित,

c. समूह से सहमत हो जाते हो ?

137 क्या तुम्हारी भावनाये इतनी दबा दी जाती है कि तुम्हे महसूस होता है कि तुम कही फूट न पडो ?

a. अक्सर, b. कभी-कभी, c शायद ही कभी।

138. तुम किस प्रकार के दोस्तो को पसन्द करते हो ऐसे जो :

a. तुम्हारे चारों ओर मंडराया करते है,

b अनिश्चित,

c जो गम्भीर होते है ?

139. अगर तुम मनुष्य नही होते तो क्या तुम यह बनना ज्यादा पसन्द करते :

a. दूर पहाड़ियो पर मडराने वाला एक पक्षी,

b. अनिश्चित,

c. एक पालतू मछली ?

140. क्या तुम अक्सर बहुत सावधान (सतर्क) रहते हो

a. हा, b. दोनो के बीच का, c नही।

141. क्या कभी-कभी छोटी-छोटी चीजे तुम्हे बहुत परेशान कर देती है यह जानते हुये भी कि वे कोई बहुत महत्वपूर्ण (खास) बाते नही है ?

a. हा, b शायद, c. नही।

142 क्या तुम्हे पक्का विश्वास है कि तुमने सभी प्रश्नो का उत्तर दे दिया है ?

a. हा, b शायद, c. नही। |